

दिल्ली राजपत्र

Delhi Gazette

असाधारण

EXTRAORDINARY

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 138]	दिल्ली, मंगलवार, अक्तूबर 28, 2014/कार्तिक 6, 1936	[रा.रा.रा.क्षे.दि. सं. 128
No. 138]	DELHI, TUESDAY, OCTOBER 28, 2014/KARTIKA 6, 1936	[N.C.T.D. No. 128

भाग—IV

PART—IV

राष्ट्रीय राजधानी राज्य क्षेत्र दिल्ली सरकार

GOVERNMENT OF THE NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI

वित्त (राजस्व-1) विभाग

अधिसूचना

दिल्ली, 28 अक्तूबर, 2014

सं. एफ. 3(14)/वित्त (राजस्व-1)/2012-13/डीएस VI/1001.—दिल्ली मूल्य संवर्धित कर नियमावली, 2005 के नियम 47 अधिनियम के साथ पठित दिल्ली मूल्य संवर्धित कर अधिनियम 2004 (2005 का दिल्ली अधिनियम 3) की धारा 66 की उप-धारा (2), के खंड (क) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली के उप-राज्यपाल, मूल्य संवर्धित कर आयुक्त, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार की उक्त अधिनियम के प्रशासन में सहायता करने के लिए निम्नलिखित अधिकारियों को पद ग्रहण की तिथि से नियुक्त करते हैं; अर्थात् :-

क्रम सं.	अधिकारी का नाम श्री/श्रीमती/कु.	कार्यभार की तिथि	पदनाम
1	कु. नीलम शर्मा	09.09.2014	सहायक मूल्य संवर्धित कर अधिकारी

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के उप-राज्यपाल
के नाम तथा उनके आदेश पर,

रविन्द्र कुमार, उपसचिव-VI (वित्त)

FINANCE (REVENUE-I) DEPARTMENT**NOTIFICATION**

Delhi, the 28th October, 2014

No. F. 3 (14)/Fin (Rev-I)/2012-13/DSVI/1001.—In exercise of the powers conferred by clause (a) of sub-section (2) of section 66 of the Delhi Value Added Tax Act, 2004 (Delhi Act 3 of 2005), read with rule 47 of the Delhi Value Added Tax Rules, 2005, the Lt. Governor of the National Capital Territory of Delhi is pleased to appoint the following officer, with effect from the date of assumption of charge to assist the Commissioner of Value Added Tax, Government of National Capital Territory of Delhi, in the administration of the said Act, namely:—

S.No.	Name of the Officer Sh./Smt./Ms.	Date of physical joining	Appointed as
1	Ms. Neelam Sharma	09-09-2014	Assistant Value Added Tax Officer

By Order and in the Name of the Lt. Governor
of the National Capital Territory of Delhi,
RAVINDER KUMAR, Dy. Secy.-VI (Finance)

सामान्य प्रशासन विभाग

(समन्वय शाखा)

अधिसूचना

दिल्ली, 28 अक्टूबर, 2014

सं. फा. 53/12/2014/सा.प्र.वि./समन्वय/2779-2827.—राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के उपराज्यपाल, बुधवार दिनांक 29 अक्टूबर, 2014, को छठ पूजा के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार के अन्तर्गत सभी सरकारी कार्यालयों में अवकाश घोषित करते हैं।

छठ पूजा के उपलक्ष्य में प्रतिबंधित अवकाश जो कि अधिसूचना सं. फा. 53/12/2013/सा.प्र.वि./समन्व./dsgadiii/3942-3991 दिनांक 30-8-2013 के द्वारा घोषित किया गया था, उसे निम्न किया जाता है।

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली के उपराज्यपाल
के आदेश से तथा उनके नाम पर,
अमिताभ कुन्दु, उप सचिव (सा. प्र. वि./सम.)

GENERAL ADMINISTRATION DEPARTMENT

(CO-ORDINATION BRANCH)

NOTIFICATION

Delhi, the 28th October, 2014

No. F. 53/12/2014/GAD/CN/dsgadiii/2779-2827.—The Lt. Governor of National Capital Territory of Delhi is pleased to declare Wednesday, the 29th October, 2014 as a Holiday in all Government offices under the Government of National Capital Territory of Delhi, on account of Chhath Puja.

The restricted holiday on the occasion of Chhath Puja earlier declared vide notification No. F.53/12/2013/GAD/CN/dsgadiii/3942-3991 dated 30-8-2013 stands cancelled.

By Order and in the Name of the
Lt. Governor of the National Capital Territory of Delhi,
AMITABH KUNDOO, Dy. Secy. (GAD)

गुरु गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय

अभिलेखनाएं

दिल्ली 28 अक्टूबर 2014

सं. आईपीयू/जे आर (सी)/स्टेट 29/53 बीओएम/एम्स/2013-14/2483-अभिलेखना सं. एफ. 1(39)/स्टेट/आईपीयू/डीआरपी/2004 दिनांकित 02-12-2004 के आंशिक संशोधन में एवं गुरु गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम, 1998 (1998 के 9) की धारा 26 के प्रावधानों के अनुसरण में गुरु गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के कुल पदों में प्रवचन संवत् की 15-03-2013 को आयोजित 53वीं बैठक की कार्य सूची की मद सं. 53.03 की संस्तुतियों के पश्चात् कोर्ट के गठन शीर्ष से साविधि 29 में निम्न आंशिक संशोधनों को स्वीकृति दी है।

विद्यमान प्रावधान	अनुमोदित प्रावधान
'विचारालय' का गठन निम्नलिखित सदस्य द्वारा होगा	कोई परिवर्तन नहीं।
(i) कुलाधिपति, पदेन,	
(ii) कुलपति, पदेन,	कोई परिवर्तन नहीं।
(iii) समकुलपति, पदेन,	कोई परिवर्तन नहीं।
(iv) एक वर्ष की अवधि हेतु कुलपति द्वारा नामित विद्यापीठ के दो संकायाध्यक्ष	कोई परिवर्तन नहीं।
(v) विचारालय द्वारा नामित एक पुरा-छात्र सदस्य (एल्युमनाई)	कोई परिवर्तन नहीं।
(vi) कुलाधिपति द्वारा नामित विश्वविद्यालय का एक पूर्व-कुलपति	कोई परिवर्तन नहीं।
सरकारी प्रतिनिधि:	कोई परिवर्तन नहीं।
(vii) सचिव प्रभारी, शिक्षा विभाग, दिल्ली सरकार, पदेन	
संबंधित महाविद्यालयों के प्रतिनिधि	कोई परिवर्तन नहीं।
(viii) चक्रानुक्रम द्वारा एक वर्ष की अवधि के लिए कुलपति द्वारा नामित, जो दो से अधिक न हों, संबंधित महाविद्यालयों के न्यास के प्रधानाचार्य/अध्यक्ष/सचिव।	
शैक्षिक, व्यावसायिक, उद्योग, वाणिज्य एवं लोक सेवा का प्रतिनिधित्व करते प्रतिष्ठाप्राप्त व्यक्ति:	कोई परिवर्तन नहीं।
(ix) राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार के परामर्श के साथ कुलाधिपति द्वारा नामित उद्योग/वाणिज्य/लोकसेवा का प्रतिनिधित्व करते पाँच प्रतिष्ठाप्राप्त व्यक्ति।	
(x) कुलाधिपति, जो राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार से परामर्श कर सकते हैं, के परामर्श के साथ विचारालय द्वारा सहयोजित पाँच प्रतिष्ठाप्राप्त शैक्षिक/व्यावसायिक व्यक्ति।	कोई परिवर्तन नहीं।
विद्यमान साविधि का भाग नहीं।	(xi) अवधि पदेन अथवा अन्यथा विनियमित के अतिरिक्त, सदस्यों की अवधि नामांकन तिथि से तीन वर्ष के लिये ही होगी।

विद्यमान संविधि का भाग नहीं ।	(xii) गणपूर्ति कोर्ट के एक तिहाई सदस्य, जिनमें से कम से कम तीन सदस्य अकादमी, व्यवसायिकों, उद्योग, वाणिज्य एवं लोक सेवा (खण्ड 9 एवं 10) का प्रतिनिधित्व कर रहे प्रख्यात व्यक्तियों के संवर्ग से होने चाहियें, गणपूर्ति करेंगे ।
विद्यमान संविधि का भाग नहीं ।	(xiii) बैठकें कोर्ट विश्वविद्यालय के विकास एवं प्रगति की समीक्षा करना के लिये वर्ष में कम से कम एक बार बैठक आयोजित करेगी ।
विद्यमान संविधि का भाग नहीं ।	(xiv) सूचना / कार्यसूची आयोजित की जाने वाली बैठक की सूचना बैठक से न्यूनतम दो सप्ताह पूर्व जारी की जायेगी एवं कार्यसूची की प्रति, बैठक-तिथि से कम से कम एक सप्ताह पूर्व भेज दी जायेगी ।
विद्यमान संविधि का भाग नहीं ।	(xv) इस संविधि में वर्णित किसी भी बात के होने के साथ-साथ व्याख्या अथवा मत में विभेद होने की स्थिति में एवं इस संविधि की व्याप्ति में न आने वाली किसी भी बात के लिये कुलाधिपतियों का निर्णय अन्तिम होगा ।

उपरोक्त संशोधन कुलाधिपति की सहमति तिथि 06-05-2013 के अनुसार प्रबन्धन मंडल द्वारा दी गयी स्वीकृति तिथि अर्थात् 15वीं मार्च, 2013 से ही प्रभावी होंगे ।

GURU GOBIND SINGH INDRAPRASTHA UNIVERSITY NOTIFICATIONS

Delhi, the 28th October, 2014

No. IPU/JR(C)/Stat.29/53 BOM/Amend./2013-14/2463.—In partial modification of notification No.F.1(39)/Stat/IPU/DRP/2004 dated 02.12.2004 and in pursuance of the provisions of Section 26 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Chancellor of Guru Gobind Singh Indraprastha University has approved following partial amendments in Statute 29 captioned 'Composition of the Court' after recommendations of the Board of Management in its 53rd meeting held on 15.03.2013 vide agenda item No. 53.03.

Existing Provision	Amended Provision
The Court shall consist of the following, namely:	No Change.
(i) Chancellor, ex-officio,	No Change.
(ii) Vice Chancellor, ex-officio,	No Change.
(iii) Pro-Vice-Chancellor, ex-officio,	No Change.
(iv) Two Deans of Schools of Studies, to be nominated by the Vice Chancellor for a period of one year	No Change.
(v) One member of the Alumni to be nominated by the Court	No Change.
(vi) One Ex-Vice-Chancellor of the University to be nominated by Chancellor	No Change.
Government Representatives:	No Change.
(vii) Secretary In-charge, Dept. of Education, Govt. of Delhi, ex-officio.	

Representatives of Affiliated Colleges: (viii) Principal/Chairman/Secretaries of the Trust of Affiliated Colleges, not more than two, to be nominated by the Vice Chancellor, for one year by rotation.	No Change.
Eminent Persons representing academics, professionals, industry, commerce and public service: (ix) Five eminent persons representing industry/commerce/public service, to be nominated by Chancellor in consultation with the Govt. of NCT Govt. of NCT of Delhi.	No Change.
(x) Five eminent academics/ professionals, to be co-opted by the Court in consultation with the Chancellor who may consult the Govt. of NCT of Delhi.	
Not as part of the existing statute.	(xi) Tenure- The tenure of the members other than ex-officio or otherwise specified, shall be three years from the date of nomination.
Not as part of the existing statute.	(xii) Quorum- One third members of the Court, out of which at least three should be from the Category of eminent persons representing academics, professionals, industry, commerce and public service (clause ix and x) shall form the quorum.
Not as part of the existing statute.	(xiii) Meetings- The court shall meet at least once in a year to review the development and progress of the University.
Not as part of the existing statute.	(xiv) Notice/ Agenda- Notice of the meeting to be convened shall be issued at least two weeks before the meeting and copy of the Agenda shall be sent at least one week prior to the date of meeting.
Not as part of the existing statute.	(xv) Notwithstanding anything stated in this statute, in the event of difference of interpretation or opinion and for anything not covered in this statute, the Chancellors decision shall be final.

The above mentioned amendments shall come into force with effect from the date of approval by the Board of Management i.e., 15th March, 2013 as per assent of the Chancellor dated 06.05.2013.

सं. आईपीयू/जेआर(सी)/आई. 11/50 बीओएम/एमेन्ड./2013-14/2464.—अधिसूचना सं. एफ. 2(29)/आई.आईपी यू/डीआरपी/2007/ 8943 दिनांकित 24-09-2008 के आंशिक संशोधन तथा गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम, 1998 (1998 के 9) की धारा 27 के प्रावधानों के अनुसरण में गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के प्रबन्धन मण्डल ने दिनांक 27-9-2012 को आयोजित अपनी 50वीं बैठक में, अध्यादेश-11: 'सत्रक प्रणाली का अनुसरण करने वाले सभी स्नातक/निष्णात (मास्टर्स) उपाधियों के लिये परीक्षाओं के संचालन एवं मूल्यांकन' के उपखण्ड 9.2 में एतदानुसार निम्न आंशिक संशोधन की स्वीकृति दी है।

विद्यमान प्रावधान	अनुमोदित प्रावधान
<p>ऐसे विद्यार्थी को, जिसे उपस्थिति की कमी के कारण रोका गया है, अगले सेमिस्टर में प्रोन्नत करने की अनुमति नहीं होगी तथा उसे पुनः प्रवेश लेना होगा तथा अगले बैच के विद्यार्थियों के साथ उक्त सेमिस्टर के समस्त पाठ्यक्रमों को दोहराना होगा, परन्तु बहुत असाधारण यथार्थ परिस्थितियों को छोड़कर जिसमें संबंधित विद्यापीठ का संकायाध्यक्ष लिखित कारणों से अगले सेमिस्टर में ऐसे किसी विद्यार्थी को, अनुमति इस स्पष्ट प्रतिबंध शर्त के साथ देगा कि उसे उस शैक्षिक कार्यक्रम के अन्तिम सेमिस्टर की समाप्ति पर उक्त सेमिस्टर के सभी पाठ्यक्रमों की उपस्थिति सम्बन्धी सारी अपेक्षाएं इसके साथ-साथ पूरी करने होंगी जिसमें वह पढ़ रहा/रही है। (क) ऐसा प्रमाणीकरण कि जिस सेमिस्टर में उसे रोका गया है वह ऐसा सेमिस्टर है जो इस प्रकार की व्यवस्था के लिए पात्र 'एममात्र' सेमिस्टर है। (ख) विद्यार्थी की सहमति कि वह अंतिम सेमिस्टर का परिणाम रोकें गए सेमिस्टर के परिणाम के साथ घोषित करने के लिए सहमत है। (ग) कि वह कार्यक्रम के सामान्य शुल्क तथा अन्य देयताओं के साथ उस सेमिस्टर का शिक्षण शुल्क तथा अन्य देयताओं का भुगतान करने के लिए तैयार है, तथा (घ) यह व्यवस्था संबंधित कार्यक्रम (एन+4) के पूरा करने की समूची अनुमेय समयावधि के अंतर्गत आती है।</p> <p>तथापि ऐसे विद्यार्थी की विश्वविद्यालय नामांकन संख्या अपरिवर्तित रहेगी तथा उसे खंड 4 (ग) में यथाउल्लिखित सेमिस्टर की अधिकतम अनुमेय समयावधि (एन+4) में कार्यक्रम पूरा करना होगा।</p> <p>विद्यापीठ के संकायाध्यक्ष/निदेशक/प्रधानाचार्य को ऐसे सभी विद्यार्थियों का नाम, जो सेमिस्टर की अंतिम परीक्षाओं में बैठने के पात्र नहीं हैं, उन्हें सेमिस्टर की अन्तिम परीक्षाओं के शुरू होने से न्यूनतम 5 कैलेंडर दिन पहले घोषित करने होंगे तथा साथ-साथ इसकी सूचना परीक्षा नियंत्रक को देनी होगी।</p> <p>यदि ऐसा कोई विद्यार्थी जिसे वस्तुतः संस्थान द्वारा रोका गया था त्रुटि के कारण परीक्षा देता है, तो उसका परिणाम अकृत माना जायेगा।</p>	<p>ऐसे विद्यार्थी, जिसे उपस्थिति की अल्पता के कारण रोक दिया गया हो, को अगले सत्रक में प्रोन्नत होने के लिये अनुमत नहीं किया जायेगा तथा उसे पुनः प्रवेश लेना होगा और सम्बन्धित सत्रक के सभी पाठ्यक्रम छात्रों के अगले समूह (बैच) के साथ दोहराने होंगे।</p> <p>तथापि, उसकी विश्वविद्यालयी नामांकन संख्या अपरिवर्तित रहेगी। उसे समूचा कार्यक्रम खण्ड 4 (ग) में वर्णितानुसार (n+4) सत्रक की अधिकतम अनुमेय अवधि में पूर्ण करना होगा।</p>

उपरोक्त आंशिक संशोधन प्रबन्धन मण्डल द्वारा स्वीकृति की तिथि से प्रभावी होगा।

No. IPU/JR(C)/Ord.11/50 BOM/Amend./2013-14/2464.—In partial modification of Notification Nos. F.2(29)/Ord/IPU/DRP/2007/8943 dated 24.09.2008 and in pursuance of the provisions of Section 27 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of Guru Gobind Singh Indraprastha University on 27.09.2012, in its 50th meeting approved the following partial amendments in sub clause 9.2 of Ordinance 11 captioned: Conduct and Evaluation of Examinations for programmes leading to all Bachelor's/ Master's degrees and under graduate/post graduate diplomas following semester system.

Existing provision	Proposed Amendment
Student who has been detained due to shortage of attendance shall not be allowed to be promoted to the next semester and he/she will be required to take re-admission and repeat all courses of the said semester with the next batch of students, excepting under very abnormal but genuine situation/s where the Dean of	Student who has been detained due to shortage of attendance shall not be allowed to be promoted to the next semester and he/she will be required to take re-admission and repeat all courses of the said semester with the next batch of students. The University Enrolment number of such student

the concerned School for the reasons recorded in writing allows such a student to be permitted to the next semester with the clear stipulation that he/she will be required to complete all the requirements of the attendance of all courses of the said semester at the close of last semester of the academic programme in which he/she is studying along with (a) certification that the semester in which he/she has been detained covers subjects which are of a nature which permits this arrangement ; (b) the consent of the student/s that he/she agrees for the declaration of the result of the last semester along with declaration of the result of the detained semester ; (c) that he/she is(are) prepared to deposit the tuition fee and other dues of that semester over and above the normal fee and other dues of the programme ; and (d) this arrangement falls within the overall permissible time frame for the completion of the concerned programme (n+4).

The University Enrolment number of such student shall however remain unchanged and he or she shall be required to complete the programme in a maximum permissible period of (n+4) semesters as mentioned in clause 4(c).

shall however remain unchanged and he or she shall be required to complete the programme in a maximum permissible period of (n+4) semesters as mentioned in clause 4(c).

The above mentioned amendment shall come into force with effect from the date of approval by the Board of Management.

फा.सं. आईपीवी/जे आर (सी)/स्टेट्यूट 6/अमेन्ड/बीओएम-48/2013-14/2465.-गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम, 1998 (1998 का 9) की धारा 26 की उप-धारा (2) के उपबन्धों के अनुसरण में, गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय प्रबंधन मण्डल, कुलाधिपति के अनुमोदन से विश्वविद्यालय की प्रथम सविधियों की सविधि 6 शीर्षक - 'संकाय अध्यक्ष' के उप-खण्ड 2 में दिनांक 01-09-2006 की अधिसूचना संख्या एफ1(26)स्टेट/डीआरपी/पार्ट/2004/2555/3463 में निम्नलिखित आंशिक संशोधन करता है :-

विद्यमान प्रावधान	अनुमोदित प्रावधान
परन्तु बासठ वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने पर संकाय अध्यक्ष पदस्थ नहीं रह पायेंगे;	परन्तु पैसठ वर्ष की आयु प्राप्त कर लेने पर संकाय अध्यक्ष पदस्थ नहीं रह पायेंगे ।

उपरोक्त संशोधन विश्वविद्यालय के प्रबंधन मण्डल की स्वीकृति तिथि 29-11-2011 से प्रभावी होंगे ।

F.No. IPV/JR(C)/Statute 6/Amend./BOM-48/2013-14/2465.-In pursuance of the provisions of Sub-section (2) of Section 26 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of Guru Gobind Singh Indraprastha University, with the approval of the Chancellor, makes the following partial amendment in sub-clause (2) of the statute 6 of the first statutes captioned 'The Deans', notified vide Notification No.F1(26)Stat/DRP/Part/ 2004/2555/3463 dated 01.09.2006.

Existing Provision	Amended Provision
Provided that a Dean on attaining the age of sixty two years shall cease to hold office as such;	Provided that a Dean on attaining the age of sixty five years shall cease to hold office as such.

The above amendments shall come into force with effect from the date of approval of the Board of Management of the University, i.e., 29.11.2011.

सं. आईपीयू/जेआर(सी)/आर्डि. 2/48 बीओएम/एमएंड/2013-14/2466.—अधिसूचना सं. एफ(2)(29)/आर्डि./आईपीयू/डीआरपी/2005/2431 दिनांकित 10-03-2005 के आंशिक संशोधन एवं गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम 1998 (1998 के 9) की धारा 27 के प्रावधानों के अनुसरण में, गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के प्रबन्धन मण्डल ने दिनांक 29-11-2011 को आयोजित अपनी 48वीं बैठक में, अध्यादेश 2: 'विद्यापीठों की स्थापना', खण्ड 1(क) में आंशिक संशोधन की स्वीकृति दी है। तदनुसार यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी का नाम बदल कर यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ इन्फोरमेशन एण्ड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी कर दिया गया है।

उपरोक्त आंशिक संशोधन प्रबन्धन मण्डल द्वारा स्वीकृति की तिथि से लागू हो जाएगा।

F.No.IPU/JR(C)/Ord. 2/48 BOM/Amend/2013-2014/2466.—In partial modification of Notification No. F.2(29)/ORD./IPU/DRP/2005/2431 dated 10.03.2005 and in pursuance of the provisions of Section 27 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of Guru Gobind Singh Indraprastha University in its 48th meeting held on 29.11.2011 has approved for partial amendment in clause 1.1 of ordinance 2: 'Creation of Schools of Studies'. Accordingly, nomenclature of University school of Information Technology has been changed to University school of Information and Communication Technology.

This partial amendment shall come into force with effect from the date of approval by the Board of Management.

सं. आईपीयू/जेआर(सी)/आर्डि. 8/48वीं ओएम/एमएंड./2013-14/2467.—अधिसूचना सं. एफ. 2(37)/आर्डि./आईपीयू/डीआरपी/2005/1854 दिनांकित 24/01/2011 के आंशिक संशोधन तथा गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम, 1998 (1998 के 9) की धारा 27 के प्रावधानों के अनुसरण में गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के प्रबन्धन मण्डल ने दिनांक 29/11/2011 को आयोजित अपनी 48वीं बैठक में, संविधि-18 के अनुसरण में, संबद्ध महाविद्यालयों में अर्हता प्राप्त स्टाफ की नियुक्ति/शिक्षकों की मान्यता से सम्बन्धित अध्यादेश-8 के खण्ड 1 (क) (i) में एतदनुसार निम्न आंशिक संशोधन की स्वीकृति दी है।

विद्यमान प्रावधान	अनुमोदित प्रावधान
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ए.आई.सी.टी.ई./ एन.सी.टी.ई. आदि जैसे सांविधिक निकायों के विनियमों द्वारा यथाविनिर्दिष्ट विभिन्न विषयों/कार्यक्रमों (परिशिष्ट 2 क से परिशिष्ट ड) के लिये यथानिर्धारित शैक्षिक योग्यता एवं अनुभव रखने वाले अध्यापक जो समय-समय पर प्रवर्तित हैं।	शिक्षकों को, सांविधिक निकायों यथा-वि.वि.अनु. आयोग, अखिल भारो तक शिक्षा परि. बी०सी०आई०, आई०एन०सी, कॅं०हो०परि० (सीसीएच), आर०सी०आई०, सी०ओ०ए०, एम०सी०आई०, डी०सी०आई०, पी०सी०आई०, रा०अध्या० शि०परि० (एनसीटीई), भार०कृषि०अनु०परि० (आईसीएआर) कॅं०भा०चिकि० परि० (सीसीआईएम) के दिशा निर्देशों के अनुसार विभिन्न कार्यक्रमों के लिये निर्धारित अर्हता और अनुभवधारी होना चाहिये। किसी भिन्नता अथवा परस्पर-विरोध की स्थिति में अकादमिक परिषद् द्वारा उपयुक्त निर्णय लिया जाएगा और लागू किये जाने से पूर्व उसे प्रबन्धन मण्डल द्वारा अनुसमर्थित किया जायेगा।

उपरोक्त आंशिक संशोधन प्रबन्धन मण्डल द्वारा स्वीकृति की तिथि से प्रभावी होगा।

No.IPU/JR(C)/Ord.8/48 BOM/Amend./ 2013-14/2467.—In partial modification of Notification No. F.2(37)/Ord/IPU/DRP/2005/1854 dated 24.01.2011 and in pursuance of the provisions of Section 27 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of Guru Gobind Singh Indraprastha University in its 48th meeting held on 29.11.2011 has approved for the following partial amendments Clause 1(a)(i) of Ordinance 8 pertaining Appointment of Qualified Staff/ Recognition of Teachers in affiliated colleges, in pursuance of Statute 18.

Existing Provision	Amended Provision
The teachers have the qualifications & experience as laid down for various programmes as specified in the appendices linked herewith (Appendix A to M)	The teachers have the qualifications & experience as laid down for various programmes as per guidelines of the concerned statutory bodies - UGC, AICTE, BCI, INC, CCH, RCI, COA, MCI, DCI, PCI, NCTE, ICAR, CCIM. In case of any variance or contradiction, an appropriate decision may be taken by the Academic Council and ratified by the Board of Management before implementation.

The above mentioned amendment shall come into force with effect from the date of approval by the Board of Management.

सं. आईपीयू/जेआर(सी)/आई. 9/48 बीओएम/एमन्ड/2013-14/2468.—अधिसूचना सं. एफ(2)(29)/आई. /आईपीयू/ डीआरपी/2005/2431 दिनांकित 10/03/2005 के आंशिक संशोधन एवं गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम, 1998 (1998 के 9) की धारा 27 के प्रावधानों के अनुसरण में, गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के प्रबन्धन मण्डल ने दिनांक 29-11-2011 को आयोजित अपनी 48वीं बैठक में, अध्यादेश 9 'दोषान्त समारोह' के खण्ड 3.1 में आंशिक संशोधन की स्वीकृति दी है। तदनुसार ऐसे सभी कार्यक्रमों के नामों को जो अध्यादेश 9 में किसी उपाधि/प्रमाण-पत्र के लिए प्रदान किए जाने हेतु प्रचलित नहीं हैं, को असतत् किया जाता है।
उपरोक्त आंशिक संशोधन प्रबन्धन मण्डल द्वारा स्वीकृति की तिथि से लागू हो जाएंगे।

No. IPU/IR(C)/Ord.9/48 BOM/Amend./2013-14/2468.—In partial modification of notification No. F.2 (29)/Ord/IPU/DRP/2005/2431 dated 10.03.2005 and in pursuance of the provisions of Section 27 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of Guru Gobind Singh Indraprastha University in its 48th meeting held on 29.11.2011 vide agenda item No. 48.05, hereby makes partial amendment in Clause 3.1 Ordinance 9 captioned 'Convocation'. Accordingly, names of the programmes which are not in use for grant of any degree/ certificate mentioned in Ordinance 9 are discontinued.

The above mentioned amendment shall come into force with effect from the date of approval by the Board of Management.

सं. आईपीयू/जेआर(सी)/आई. 16/53बीओएम/एमन्ड/2013-14/2469.—अधिसूचना सं.एफ(2)(29)/आई. /आईपीयू/ डीआरपी/2005/2431 दिनांकित 10-03-2005 के आंशिक संशोधन एवं गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम 1998 (1998 के 9) की धारा 27 के प्रावधानों के अनुसरण में, गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के प्रबन्धन मण्डल ने दिनांक 15-3-2013 को आयोजित अपनी 53वीं बैठक में, अध्यादेश 16: 'पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा, पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री (एमडी/एम एस : डॉक्टर ऑफ मेडिसिन/मास्टर ऑफ सर्जरी) तथा पोस्ट डॉक्टरल डिग्री (डीएम/एमसीएच डॉक्ट्रेट इन मेडिसिन/मेजिस्टर ऑफ चिरुरजी) कार्यक्रमों के लिए परीक्षाओं के संचालन और मूल्यांकन' में निम्नलिखित आंशिक संशोधन की स्वीकृति दी है।

विद्यमान प्रावधान	अनुमोदित प्रावधान
6.0 गुरु गोबिन्द सिंह विश्वविद्यालय (चिकित्सा विज्ञान स्कूल) द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम क. एम. डी (डॉक्टर ऑफ मेडिसिन) i. निश्चेतक विज्ञान (एनेस्थिसियोलॉजी) ii. जैव रसायन (बायोकेमिस्ट्री)	6.0 गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय (चिकित्सा विज्ञान स्कूल) द्वारा प्रस्तावित कार्यक्रम विश्वविद्यालय, भारतीय चिकित्सा परिषद् द्वारा विभिन्न शिक्षण-क्षेत्रों हेतु यथा स्वीकृत आयुर्विज्ञान वाचस्पति (एमडी0 (डॉक्टर ऑफ मेडिसिन)/ शल्यविज्ञान निष्णात (एम0एस0 (मास्टर ऑफ सर्जरी) जैसे स्नातकोत्तर डिप्लोमाओं, उपाधियों तथा आयुर्विज्ञान वारिधि

<p>iii. सामुदायिक औषधि (कम्युनिटी मेडिसिन) iv. त्वचारोगविज्ञान, रतिरोगविज्ञान और कुष्ठ (डर्मेटोलॉजी, वेनेरोलॉजी और लेप्रोसी) v. विधिविज्ञान औषधि (फॉरेंसिक मेडिसिन) vi. सामान्य औषधि (जनरल मेडिसिन) vii. सूक्ष्म जीव विज्ञान (माइक्रोबायोलॉजी) viii. शिशुरोग विज्ञान (पीडियाट्रिक्स) ix. विकृति विज्ञान (पैथोलॉजी) x. भैषजिक विज्ञान (फार्माकोलॉजी) xi. शरीर क्रियाविज्ञान (फिजिओलॉजी) xii. मनोचिकित्सा (साइकियाट्री) xiii. विकिरण नैदानिकी (रेडियो डायग्नोसिस) xiv. विकिरण उपचार (रेडियो थेरेपी) xv. भौतिक औषधि और पुनर्वास (फिजिकल मेडिसिन और रिहैबिलिटेशन)</p> <p>ख. एम. एस. (मास्टर ऑफ सर्जरी)</p> <p>i. शरीर संरचना विज्ञान (एनाटॉमी) ii. सामान्य शल्य चिकित्सा (जनरल सर्जरी) iii. स्त्रीरोग विज्ञान और प्रसूति विज्ञान (ऑब्स्टेट्रिक्स एण्ड गायनेकोलॉजी) iv. नेत्र रोग विज्ञान (ऑफ्थैल्मोलॉजी) v. अस्थिरोग विज्ञान (ऑर्थोपीडिक्स) vi. नासिका कर्ण और कण्ठ (ओटोरिनोलेरिजालॉजी)</p> <p>ग. डिप्लोमा</p> <p>i. एनेस्थेसियोलॉजी (डीए) ii. डर्मेटोलॉजी, वेनेरोलॉजी और लेप्रोसी (डीडीवीएल) iii. ऑब्स्टेट्रिक्स और गायनेकोलॉजी (डीजीओ) iv. ऑफ्थैल्मोलॉजी (डीओ) v. ओटोरिनोलेरिजालॉजी (डीएलओ) vi. पीडियाट्रिक्स (डीसीएच) vii. फिजिकल मेडिसिन एण्ड रिहैबिलिटेशन (डीफिमेड एण्ड आर) viii. रेडियो डायग्नोसिस (डीएमआरडी) ix. रेडियो थेरेपी (डीएमआरटी)</p> <p>टिप्पणी : ऊपर उल्लिखित सभी कार्यक्रमों के लिए प्रत्याशी के पास एक मान्यताप्राप्त एमबीबीएस डिग्री या इसके समकक्ष डिग्री (एमसीआई द्वारा मान्यताप्राप्त) होनी चाहिए।</p> <p>घ. डी.एम. (डॉक्टरेट इन मेडिसिन)</p> <p>i. कार्डियोलॉजी एमडी / डीएनबी (मेडिसिन) एमडी / डीएनबी (पीडियाट्रिक्स) ii. मेडिकल गेस्ट्रोएण्टेरोलॉजी एमडी / डीएनबी (मेडिसिन) एमडी / डीएनबी (पीडियाट्रिक्स) iii. न्यूरोलॉजी एमडी / डीएनबी (मेडिसिन) एमडी / डीएनबी (पीडियाट्रिक्स) iv. नेफ्रोलॉजी एमडी / डीएनबी (मेडिसिन) एमडी / डीएनबी (पीडियाट्रिक्स) v. पल्मोनरी और क्रिटिकल देखभाल एमडी / डीएनबी (मेडिसिन) एमडी / डीएनबी (पीडियाट्रिक्स)</p> <p>टिप्पणी : डीएनबी प्रत्याशियों की पात्रता के लिए अनिवार्य है कि उन्होंने डीएनबी प्रशिक्षण के दौरान एक शोध परियोजना (थीसिस) की हो।</p> <p>ड० एमसीएच (मेजिस्टर ऑफ चिरुरजी)</p> <p>पूर्व अपेक्षाएं</p> <p>i बर्न्स एवं प्लास्टिक सर्जरी एमएस / डीएनबी (सर्जरी) ii कैंसर सर्जरी एमएस / डीएनबी (सर्जरी)</p>	<p>(डी. एम. (डॉक्टरेट इन मेडिसिन) में चिरुरजी निष्णात (एम० सीएच) जैसी वाचस्पति-उत्तर उपाधियों हेतु कार्यक्रम संचालित करेगा और इन कार्यक्रमों के लिये प्रवेश पात्रता मानदण्ड भा.चि.परि. के स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा विनियमों द्वारा नियन्त्रित होंगे। तथापि, इन सभी कार्यक्रमों हेतु आंतरिक परीक्षकों की नियुक्ति, उसमें विनियमों के रूप में गठित विश्वविद्यालय मार्ग-निर्देशनों के अनुरूप ही की जायेगी।</p> <p>1 : उपरोक्त सभी कार्यक्रमों हेतु, अभ्यर्थी मान्यताप्राप्त आयुर्विज्ञान एवं शल्य चिकित्सा स्नातक उपाधि अथवा इसके समतुल्य उपाधि (भा० वि० परिषद् द्वारा मान्य) धारक होना चाहिये।</p> <p>2 : डी एन बी अभ्यर्थियों की पात्रता हेतु यह अनिवार्य है कि डीएनबी प्रशिक्षण के दौरान अनुसंधान परियोजना (शोध) पर कार्य किया हो।</p>
--	---

<p>iii कार्डियो थोरेसिक एण्ड वेस्कुलर सर्जरी एमएस / डीएनबी (सर्जरी) iv न्यूरो सर्जरी एमएस / डीएनबी (सर्जरी) v पीडियाट्रिक सर्जरी एमएस / डीएनबी (सर्जरी) vi यूरोलॉजी एमएस / डीएनबी (सर्जरी) टिप्पणी : डीएनबी प्रत्याशियों की पात्रता के लिए अनिवार्य है कि उन्होंने डीएनबी प्रशिक्षण के दौरान एक शोध परियोजना (थेसिस) की हो :</p>	
<p>8-0 : उपस्थिति पोस्ट ग्रेजुएट प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी प्रत्याशी प्रशिक्षण की प्रत्येक के दौरान पूर्ण कालिक रेसीडेण्टस के रूप में कार्य करेंगे, उन्हें दिए गए वर्ष के दौरान कम से कम 80 प्रतिशत प्रशिक्षण में भाग लेना चाहिए। उन्हें शिक्षा कार्यक्रम के सभी पहलुओं में पूर्णकालिक उत्तरदायित्व, कार्य और प्रतिभागिता दी जानी चाहिए।</p>	<p>उपस्थिति, प्रशिक्षण कार्यक्रम, मूल्यांकन एवं परीक्षाएँ उपस्थिति, प्रशिक्षण-कार्यक्रम, मूल्यांकन, परीक्षाएँ तथा साथ ही आंतरिक परीक्षकों की नियुक्ति, प्रतिमान, परियोजना एवं शोध परीक्षा भारतीय चिकित्सा परिषद् के स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा विनियमों के अनुरूप ही होंगे।</p>
<p>10-0 प्रशिक्षण कार्यक्रम क. पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री/डिप्लोमा प्रदान करने के लिए विश्वविद्यालय के मान्यताप्राप्त संस्थान में पोस्ट ग्रेजुएट विद्यार्थियों को दिया गया प्रशिक्षण प्रशिक्षित विशेषज्ञ की इस प्रशिक्षण के परिणाम स्वरूप विशेषज्ञता का निर्धारण करेगा। ख. चिकित्सा विज्ञान स्कूल प्रशिक्षण कार्यक्रम / कार्यक्रम के व्यौर तैयार करेगा। i. पोस्ट ग्रेजुएट प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाने वाले प्रत्येक संस्थान में प्रधानाचार्य/निदेशक या वरिष्ठ प्रोफेसर की अध्यक्षता में एक शैक्षिक कार्यक्रम समिति का गठन किया जाएगा, ताकि चिकित्सा विज्ञान विद्यालय के मार्गदर्शी सिद्धांत कार्यक्रम की निगरानी और समन्वय कार्य के अनुसार किया जाए। ii. प्रशिक्षण कार्यक्रम को समय-समय पर अद्यतन किया जाएगा। इसका पंजीकरण किया जाएगा और कठोरतापूर्वक पालन किया जाएगा, ताकि परीक्षक विद्यार्थियों द्वारा लिए गए प्रशिक्षण का निर्धारण कर सकें, और यदि आवश्यकता हो एमसीआई के निरीक्षक जब और जैसे देखना चाहें, इस तक पहुंच सकें। iii. पोस्ट ग्रेजुएट विद्यार्थियों को प्रशिक्षण अवधि के दौरान उसके द्वारा किए गए कार्यों/क्रिया विधियों को विस्तार से बताने वाली एक लॉग-पुस्तिका रखनी चाहिए। एमएस/एमसीएच विद्यार्थियों को चाहिए कि वे स्वतंत्र रूप से किए गए ऑपरेशनों और जिन-जिन ऑपरेशनों में उन्होंने वरिष्ठ डॉक्टरों की सहायता की, उनकी संख्या लॉग-पुस्तिका में दर्ज करें। iv. उपरोक्त लॉग-पुस्तिका का आवधिक सत्यापन संस्थान के संकाय सदस्यों द्वारा किया जाना चाहिए। ग. प्रशिक्षण प्रक्रिया के दौरान संबंधित विषयों के दौरान संबंधित विषयों से संबंधित मूलभूत चिकित्सा विज्ञान का शिक्षण अनिवार्य है। विषयों के व्यावहारिक पहलुओं में भी प्रशिक्षण दिया जाएगा। संकाय द्वारा शिक्षण के लिए विषयों से संबंधित संबद्ध विभागों से समन्वय किया जाना चाहिए। निवारणात्मक और आपातकालीन परिचर्य को प्रशिक्षण का एक भाग बनाया जाना चाहिए। प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को स्वतंत्र रूप से बायोप्सी, साइटोप्सी, एण्डोस्कोपी और इमेजिंग आदि करनी चाहिए। घ. पोस्ट ग्रेजुएट विद्यार्थियों को स्नातक विद्यार्थियों और इंटरनेट्स के रूप में रहे विद्यार्थी के शिक्षण और प्रशिक्षण में भी भाग लेना चाहिए। ङ. विद्यार्थियों को प्रशिक्षण के दौरान मेडिकल ऑडिट, प्रबंधन, स्वास्थ्य सूचना प्रणाली, मूलभूत सांख्यिकी, मानव व्यवहार विज्ञान, भौषजित अर्थशास्त्र और गैर-रेखीय गणित (मूलभूत) में भी प्रशिक्षण पाना चाहिए। च. उल्लिखित पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री प्रदान करने के प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्नलिखित शामिल होने चाहिए : (i) एमडी/एमएस (डॉक्टर ऑफ मेडिसिन/मास्टर ऑफ सर्जरी) - मूलभूत चिकित्साविज्ञान : व्याख्यान, सम्मेलन, जर्नल क्लब, साप्ताहिक चर्चा,</p>	

<p>प्रयोगशाला और प्रयोगिक कार्य, विशेषज्ञता के व्यवहारिक पक्षों पर जानकारी और शोध अध्ययनों में कार्यरत होना ।</p> <p>— क्लिनिकल विषय : प्रशिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को रोगियों के प्रबंधन, सम्मेलनों, सामूहिक चर्चाओं, क्लिनिकल बैठकों, क्लिनिको-पैथोलॉजिकल सम्मेलनों तथा संबद्ध विषयों में प्रशिक्षण में भाग लेने का स्वतंत्र उत्तरदायित्व दिया जाना चाहिए ।</p> <p>(ii) डीएम/एमसीएच (डॉक्टरेट इन मेडिसिन/मेजिस्टर ऑफ चिरुरजी)</p> <p>— उपरोक्त पाठ्यक्रम में पंजीकृत विद्यार्थियों में प्रशिक्षण एमडी/एमएस के पैटर्न पर होगा । इस प्रशिक्षण में उन्नत नैदानिकी, उपचारात्मक और प्रयोगशाला तकनीकें, जो विषय के साथ संगत हैं, शामिल होंगे । एमसीएच प्रत्याशियों को एक सहायक के रूप में और स्वतंत्र रूप से शल्य क्रिया ऑपरेशनों में भाग लेना चाहिए ।</p> <p>(iii) डिप्लोमा</p> <p>— संबंधित पाठ्यक्रम में पंजीकृत विद्यार्थियों का प्रशिक्षण एमडी/एमएस विद्यार्थियों के समान होगा, लेकिन प्रशिक्षण अवधि केवल दो वर्ष होगी । उन्हें थीसिस लिखने की भी आवश्यकता नहीं होगी ।</p>	
<p>13-0 मूल्यांकन</p> <p>क. प्रयोगिक परीक्षा में परीक्षक को वस्तुनिष्ठ रूप में तैयार की गई प्रयोगिक परीक्षा (ओएसपीई) और वस्तुनिष्ठ रूप में तैयार की गई क्लिनिकल परीक्षा (ओएससीई) प्रणाली अपनानी चाहिए ।</p> <p>ख. ओएसपीई और ओएससीई परीक्षा की तैयारी की गई ऐसी विधियाँ हैं, जो परीक्षक को इस प्रकार सक्षम बनाती हैं कि वह सीखने तथा प्रशिक्षण के सभी पक्षों का अलग-अलग मूल्यांकन कर सके । विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या को वस्तुनिष्ठ और विश्वसनीय ढंग से परखा जा सकता है । तथापि इस प्रणाली में अधिक प्रयास, समय और टीम वर्क की आवश्यकता होती है । ओएससीई में क्लिनिकल परीक्षा और प्रायोगिक क्रिया विधियों पारस्परिक कौशल को भी परखा जाता है । इस विधि से परीक्षाएँ लेने के लिए कनिष्ठ परीक्षकों की बड़ी संख्या को भी इस प्रक्रिया में शामिल करने की संभावना रहती है । ओएससीई और ओएसपीई की मांग परीक्षकों और रोगियों द्वारा की अधिक की जाती है ।</p> <p>ग. ओएसपीई और ओएससीई को शामिल करने के इरादे से प्रत्येक व्यावसायिक परीक्षा आयोजित करने के लिए न्यूनतम चार आंतरिक और चार बाह्य परीक्षकों को नियुक्त करने का निर्णय लिया गया है । आंतरिक परीक्षकों में कम से कम एक प्रोफेसर होगा । अन्य परीक्षकों में अन्य संकाय सदस्य को क्रमानुसार शामिल किया जा सकता है ।</p>	
<p>15. परीक्षाएँ</p> <p>क. पोस्ट ग्रेजुएट कार्यक्रमों की परीक्षाएँ प्रशिक्षण के अंत में प्रत्याशियों के ज्ञान, कौशल और सक्षमता का मूल्यांकन करने की एक प्रणाली के आधार पर किया जाएगा । विद्यार्थी को परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए सैद्धांतिक और प्रायोगिक परीक्षाओं में अलग-अलग न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने चाहिए । एमडी, एमएस, डीएम, एमसीएच की परीक्षाएँ तीन शैक्षिक वर्षों के अंत में और डिप्लोमा कार्यक्रमों के लिए दो शैक्षिक वर्षों के बाद आयोजित की जाएगी ।</p> <p>ख. एमडी, एमएस डिग्री पाठ्यक्रमों के लिए 800 अंक होंगे जिसमें से सैद्धांतिक में 400 और क्लिनिकल मामलों तथा वायवा बोयस सहित प्रायोगिक परीक्षाओं में 400 अंक होंगे । डिप्लोमा कार्यक्रमों में अधिकतम 600 अंक होंगे, अर्थात् क्रमशः सैद्धांतिक के लिए 300 अंक और प्रायोगिक के लिए 300 अंक ।</p> <p>सुपर स्पेशलिटी कार्यक्रमों, अर्थात् डीएम/एमसीएच में भी कुल 600 अंक, 300 सैद्धांतिक के लिए और मौखिक परीक्षाओं सहित 300 अंक प्रायोगिक परीक्षाओं के लिए होंगे ।</p> <p>ग. परीक्षाओं की संख्या : विश्वविद्यालय द्वारा कथित पाठ्यक्रम के लिए कम से कम छः माह के अंतर पर एक वर्ष में अधिक से अधिक दो परीक्षाएँ आयोजित की जाएंगी ।</p>	
<p>16-0 गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय की मेडिकल साइंस संकाय में एमडी/एमएस डिप्लोमा और डीएम/एमसीएच के लिए परीक्षकों की नियुक्ति के मार्गदर्शी सिद्धांत</p>	<p>16-0 : सम्पूर्ण खण्ड हटा दिया गया है ।</p>

उपरोक्त आंशिक संशोधन प्रबन्धन मण्डल द्वारा स्वीकृति की तिथि से लागू हो जाएंगे ।

No. IPU/JR(C)/Ord.16/53BOM/Amend./2013-14/2469.—In partial modification of notification No. F.2(29)/Ord/IPU/DRP/2005/2431 dated 10.03.2005 and in pursuance of the provisions of Section 27 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of Guru Gobind Singh Indraprastha University in its 53rd meeting held on 15.03.2013 vide agenda item No.53.04, has approved for following partial amendment in Ordinance 16 relating to conduct and evaluation of examinations leading to post graduate diplomas/ post graduate Degrees (MD/MS Doctor of Medicine/ Master of Surgery) and post Doctoral Degrees (D.M./ M.Ch. : Doctorate in Medicine/Magister of Chirurgiae)

Existing provision	Proposed provision
6.0 PROGRAMMES OFFERED BY GURU GOBIND SINGH INDRAPRASTHA UNIVERSITY (SCHOOL OF MEDICAL SCIENCES)	6.0 PROGRAMMES OFFERED BY GURU GOBIND SINGH INDRAPRASTHA UNIVERSITY (SCHOOL OF MEDICAL SCIENCES)
a. M.D. (Doctor of Medicine)	The University will conduct programmes leading to post graduate diplomas, degrees like M.D. (Doctor of Medicine)/ M.S. (Master of Surgery), and post doctoral degrees like D.M. (Doctorate in Medicine)/ M.Ch (Magister of Chirurgiae) in various disciplines as approved by Medical Council of India (MCI) and the eligibility criteria for admission to these programmes shall be governed by Post Graduate Medical Education Regulations of MCI. However, the appointment of internal examiners for all these programmes will be as per University Guidelines framed in the form of Regulations therein.
i. Anesthesiology	Note:
ii. Biochemistry	1 : For all the programmes mentioned above, the candidate must possess a recognised MBBS degree or its equivalent degree (recognised by MCI).
iii. Community Medicine	
iv. Dermatology, Venereology & Leprosy	
v. Forensic Medicine	
vi. General Medicine	
vii. Microbiology	
viii. Paediatrics	
ix. Pathology	
x. Pharmacology	
xi. Physiology	
xii. Psychiatry	
xiii. Radio-diagnosis	
xiv. Radio-therapy	
xv. Physical Medicine & Rehabilitation	
b. M.S. (Master of Surgery)	
i. Anatomy	
ii. General Surgery	
iii. Obstetrics & Gynaecology	
iv. Ophthalmology	
v. Orthopaedics	
vi. Otorhinolaryngology	
c. Diplomas	
i. Anaesthesiology (D.A.)	
ii. Dermatology, Venereology and Leprosy (D.D.V.L.)	
iii. Obstetrics & Gynaecology (D.G.O.)	
iv. Ophthalmology (D.O.)	
v. Otorhinolaryngology (D.L.O.)	
vi. Paediatrics (D.C.H.)	
vii. Physical Medicine & Rehabilitation (D.Phy. Med. & R.)	
viii. Radio-diagnosis (D.M.R.D.)	
ix. Radio-Therapy (D.M.R.T.)	
	2 :For eligibility of DNB candidates, it is essential to have undertaken a research project (Thesis) during DNB training.

Note: For all the programmes mentioned above, the candidate must possess a recognised MBBS degree or its equivalent degree (recognised by MCI).

d. D.M. (Doctorate in Medicine)

Prior Requirement

i. Cardiology

MD/DNB (Medicine)

MD/DNB (Paediatrics)

ii. Medical Gastroenterology

MD/DNB (Medicine)

MD/DNB (Paediatrics)

iii. Neurology

MD/DNB (Medicine)

MD/DNB (Paediatrics)

iv. Nephrology

MD/DNB (Medicine)

MD/DNB (Paediatrics)

v. Pulmonary and Critical Care

MD/DNB (Medicine)

MD/DNB (Resp. Medicine)

Note : For eligibility of DNB candidates it is essential to have undertaken a research project (Thesis) during DNB training.

e. M.Ch (Magister of Chirurgiae)

Prior requirement

i. Burns and Plastic Surgery

MS/DNB (Surgery)

ii. Cancer Surgery

MS/DNB (Surgery)

iii. Cardio Thoracic & Vascular Surgery

MS/DNB (Surgery)

iv. Neuro-surgery

MS/DNB (Surgery)

v. Paediatric Surgery

MS/DNB (Surgery)

vi. Urology

MS/DNB (Surgery)

Note : For eligibility of DNB candidates it is essential to have undertaken a research project (Thesis) during DNB training.

8.0 : ATTENDENCE

All the candidates joining the Post Graduate training programme shall work as full time residents during the period of training. They must attend not less than 80% of the training during a given year. They should be given full time responsibility, assignments and participation in all aspects of the education programme.

10.0 TRAINING PROGRAMME

a. Training given to the Post Graduate students in the recognised institution of the University for the Award

ATTENDENCE, TRAINING PROGRAMME, EVALUATION AND EXAMINATIONS

The attendance, training programme and evaluation, examinations including appointment of external examiners, pattern, scheme and thesis examination shall be as per Post Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India.

- of Post Graduate Degrees/Diplomas shall determine the expertise of the trained specialist as a result of the training programme.
- b. The School of Medical Sciences shall work out the details of the training programme/ curriculum.
- i. Each institution imparting Post Graduate training programme shall set up an academic programme committee under the Principle/Director or a senior professor in order to monitor and coordinate the programme as per the guidelines of the School of Medical Sciences.
 - ii. The training programme would be updated from time to time. This should be registered and followed strictly so that examiners may determine the training undergone by the students, also if and when required the MCI inspectors may have access to the same when needed.
 - iii. Post Graduate students must maintain a log book detailing the work/procedures undertaken by them during the period of training. M.S./MCh students must detail in the log book the number of operations assisted or done independently.
 - iv. The Log book mentioned to above should be periodically verified by the faculty members of the institution.
- c. Teaching in basic medical sciences related to the disciplines concerned during the training process is essential. There shall also be training in the applied aspects of the subjects. The faculty should coordinate with the allied departments related to the discipline for teaching. Preventive and emergency care should form a part of the training. The students should undertake independently biopsies, cytopsies, endoscopy and imaging etc. during the course of the training.
- d. Post graduate students must also participate in the teaching and training of undergraduate students and interns.
- e. The students must also be trained in medical audit, management, health economics, health information system, basic statistics, human behavioral sciences, pharmaco economics and non linear mathematics (basic) during the course of the training.
- f. The training programme for award of the mentioned Post Graduate degrees should include :
- i. **M.D./M.S.(Doctor of Med./Master of Surgery)**
 - Basic medical sciences : Lectures, seminars, journal clubs, group discussions, laboratory and experimental work, exposure to applied aspects of the specialty and involvement in research studies.
 - Clinical disciplines : during the training, the students should be given independent responsibility in management of patients, participation in seminars,

journal clubs, group discussions, clinical meetings, clinico-pathological conferences and training in allied disciplines.

ii. D.M./M.Ch. (Doctorate in Medicine/ Magister of Chirurgiae)

- Training for the students registered in the above course shall be in the same pattern as for M.D./M.S. Training should include practical training in advanced diagnostic, therapeutic and laboratory techniques relevant to the subject. For M.Ch. candidates, there should be participation in surgical operations as an assistant and independently.

iii. Diplomas

- Training of candidates registered in the said course would be on the same lines as for M.D./M.S., however, the duration of training would be of two years only. Also they would not be required to undertake a thesis study.

13.0 EVALUATION

- a. The examiner in the practical examination should follow a system of objectively structured practical examination (OSPE) and objectively structured clinically examination (OSCE).
- b. OSPE and OSCE are structured methods of examination which enables the examiner to assess all the aspects of learning and training separately. It is a more objective and reliable method of testing a large number of students. However, the system requires greater effort, time and team work. OSCE also test inter personnel skills of clinical examination and practical procedures. There is also a potential to include more number of junior examiners. OSCE and OSPE are more demanding on examiners and patients.
- c. With the intent to include OSPE and OSCE there will be four examiners, two internal and two external for the examination. The internal examiners would include a professor. The other examiners included may be other faculty members by rotation.

15.0 EXAMINATIONS

- a. Examinations for the Post Graduate programmes shall be organised on the basis of a system to evaluate the candidate's level of knowledge, skill and competence at the end of the training. The student is required to obtain a minimum of 50% marks in theory as well as in practical's separately for passing the examination. The examinations for M.D., M.S., D.M., MCh shall be held at the end of three academic years and for diploma programmes the examination will be held after two academic years.
- b. The M.D., M.S. degree programmes will have 800 marks, 400 in theory and 400 in practical's including clinical cases and viva voce.

<p>Diploma programmes will have a maximum of 600 marks i.e. maximum of 300 marks for theory and 300 marks for practicals respectively.</p> <p>Superspeciality programmes i.e. DM/M.Ch. would also be having a total of 600 marks, 300 for theory and 300 for practicals including oral examinations.</p> <p>c. Number of examinations: The University shall conduct not more than two examinations in a year for a said course with an interval of not less than six months.</p>	
<p>16.0 GUIDELINES FOR APPOINTMENT OF EXAMINERS FOR MD/MS, DIPLOMA AND DM/MCH IN FACULTY OF MEDICAL SCIENCES, GURU GOBIND SINGH INDRA-PRASTHA UNIVERSITY</p>	<p>The Clause 16.0 is deleted</p>

The above mentioned amendment shall come into force with effect from the date of approval by the Board of Management.

सं. आईपीयू/जेआर(सी)/ऑर्डि.-परीक्षा/एमेन्ड/51वी बीओएम/2013-14/2470.—अधिसूचना सं. एफ. 2(29)/आईडिओ/आईपीयू/एडमिन्स/2008/13727/दिनांकित 20 अक्टूबर 2009 के आंशिक संशोधन एवं गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम 1998 (1998 का 9) की धारा 27 के प्रावधानों के अनुसरण में गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय का प्रबंधन मण्डल, विभिन्न कार्यक्रमों से संबंधित परीक्षाओं के संचालन एवं मूल्यांकन के संबंध में विश्वविद्यालय के अध्यादेश-10 (परीक्षा की वार्षिक प्रणाली की अनुगामी समी स्नातक उपाधियों से सम्बन्धित कार्यक्रम हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन), अध्यादेश-11 (परीक्षा की सत्रार्थ (सेमेस्टर) प्रणाली की अनुगामी समी स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधियों एवं स्नातक-पूर्व/स्नातकोत्तर डिप्लोमाओं से सम्बन्धित कार्यक्रमों हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन), अध्यादेश-21 पुरातत्व एवं परम्परा (हैरिटेज) प्रकाश (इं) संरक्षण, परिरक्षण एवं परम्परा प्रबंधन निष्णात उपाधि हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन अध्यादेश-25 (सत्रार्थ प्रणाली की अनुगामी समी स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधियों एवं स्नातक-पूर्व/स्नातकोत्तर डिप्लोमाओं से सम्बन्धित सप्ताहान्त कार्यक्रमों हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन), अध्यादेश-27 (परीक्षा की वार्षिक प्रणाली की अनुगामी समी निष्णात (मास्टर) उपाधियों से सम्बन्धित कार्यक्रमों हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन) एवं अध्यादेश-29 (परीक्षा की त्रैमासिक प्रणाली की अनुगामी निष्णात उपाधि हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन) में निम्न संशोधन करता है।

अध्यादेश	सम्बन्धित खण्ड	विद्यमान प्रावधान	अनुमोदित प्रावधान (अंश सुस्पष्टीकृत)
10	11(ग)	ऐसा प्रत्याशी, जिसने शिक्षण परीक्षा और पाठ्यचर्या की संबंधित योजना में निर्धारित आकलन के न्यूनतम अंक, या तो सम्बन्धित अध्ययन के विश्वविद्यालय/संबद्ध संस्थान/पढ़ाई एवं शिक्षा हेतु केन्द्र से सम्पूर्णतः अथवा भारत के अन्दर या बाहर प्रचलित किसी अन्य विश्वविद्यालय और जिसके साथ गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय ने समझौता ज्ञापन किया है, से एक सत्रार्थ/सत्रार्थों के लिये अर्जन किये जाने के बाद अंतरित आकलनों सहित प्राप्त किये हैं, कार्यक्रम उत्तीर्ण हुआ घोषित किया जायेगा और वह सम्बन्धित उपाधि अथवा डिप्लोमा प्राप्त करने का पात्र होगा। शिक्षण, परीक्षा और पाठ्यचर्या की योजना, किसी उपाधि अथवा डिप्लोमा हेतु अर्हता प्राप्त करने के लिये अर्जन किये जाने हेतु न्यूनतम आकलन स्पष्ट रूप से विनिर्दिष्ट करेगी। शिक्षण व परीक्षा एवं पाठ्यचर्या की योजना में सम्मिलित आकलन संबंधित सांविधिक अथवा नियामक प्राधिकरण, यदि कोई हो तो, के निर्धारित दिशा निर्देशों के अनुसार विनिर्दिष्ट न्यूनतम आकलन से सामान्यतः 5-10 प्रतिशत अधिक होगा। तथा,	ऐसा प्रत्याशी, जिसने शिक्षण परीक्षा और पाठ्यचर्या की संबंधित योजना में निर्धारित आकलन के न्यूनतम अंक, या तो सम्बन्धित अध्ययन के विश्वविद्यालय/संबद्ध संस्थान/पढ़ाई एवं शिक्षा हेतु केन्द्र से सम्पूर्णतः अथवा भारत के अन्दर या बाहर प्रचलित किसी अन्य विश्वविद्यालय और जिसके साथ गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय ने समझौता ज्ञापन किया है, से एक सत्रार्थ/सत्रार्थों के लिये अर्जन किये जाने के बाद अंतरित आकलनों सहित प्राप्त किये हैं, कार्यक्रम उत्तीर्ण हुआ घोषित किया जायेगा और वह सम्बन्धित उपाधि अथवा डिप्लोमा प्राप्त करने का पात्र होगा। शिक्षण, परीक्षा और पाठ्यचर्या की योजना, किसी उपाधि अथवा डिप्लोमा हेतु अर्हता प्राप्त करने के लिये अर्जन किये जाने हेतु न्यूनतम आकलन स्पष्ट रूप से विनिर्दिष्ट करेगी। शिक्षण व परीक्षा एवं पाठ्यचर्या की योजना में सम्मिलित आकलन संबंधित सांविधिक अथवा नियामक प्राधिकरण, यदि कोई हो तो, के निर्धारित दिशा निर्देशों के अनुसार विनिर्दिष्ट न्यूनतम आकलन से सामान्यतः 5-10 प्रतिशत अधिक होगा। तथा, किसी भी छात्र के संचयी निष्पादक सूचक को,
11	11*3		
21	10(ग)		
25	10(ग)		
27	11(ग)		
29	10(ग)		

		<p>सफल प्रत्याशियों को श्रेणियों में निम्न प्रकार से रखा जायेगा :</p> <ul style="list-style-type: none"> • द्वितीय श्रेणी: कार्यक्रम के अन्त में 50 प्रतिशत एवं अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से निम्न संचयी निष्पादक सूचक प्राप्त करने वाले प्रत्याशी को द्वितीय श्रेणी में रखा जायेगा । • प्रथम श्रेणी: कार्यक्रम के अन्त में 60 प्रतिशत एवं अधिक परन्तु 75 प्रतिशत से कम संचयी निष्पादक सूचक प्राप्त करने वाले प्रत्याशी को प्रथम श्रेणी में रखा जायेगा । • विशेष योग्यता सहित प्रथम श्रेणी: कार्यक्रम के अन्त में 75 प्रतिशत एवं अधिक संचयी निष्पादन सूचक प्राप्त करने वाले प्रत्याशी को विशेष योग्यता सहित प्रथम श्रेणी में रखा जायेगा बशर्त कि प्रत्याशी ने आकलन प्राप्त किये जाने वाले सभी पाठ्यक्रमों को प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण कर लिया हो । इसके अतिरिक्त, जिस प्रत्याशी ने 90 प्रतिशत एवं अधिक संचयी निष्पादक सूचक प्राप्त किये होंगे उसे अनुकरणीय निष्पादन के साथ कार्यक्रम उत्तीर्ण समझा जायेगा बशर्त कि उसने आकलन प्राप्त किये गये सभी पाठ्यक्रमों को प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण कर लिया हो । ऐसे प्रत्याशियों को इस उपलक्ष्य में विशेष विश्वविद्यालय प्रमाण पत्र प्रदान किया जायेगा । • संचयी निष्पादन सूचक की गणना खण्ड 14 के अनुसार होगी और यह केवल आकलन प्राप्त किये गये पाठ्यक्रमों में प्राप्तांको पर ही आधारित होगी । 	<p>अंक-प्रतिशत की समतुल्यता के उद्देश्य से, अध्ययन के कार्यक्रमों में प्राप्त प्रतिशत के अनुरूप ही समझा जायेगा ।</p> <ul style="list-style-type: none"> • द्वितीय श्रेणी:- कार्यक्रम के अन्त में 50 प्रतिशत एवं अधिक परन्तु 60 प्रतिशत से निम्न संचयी निष्पादक सूचक प्राप्त करने वाले प्रत्याशी को द्वितीय श्रेणी में रखा जायेगा । • प्रथम श्रेणी:- कार्यक्रम के अन्त में 60 प्रतिशत एवं अधिक परन्तु 75 प्रतिशत से कम संचयी निष्पादक सूचक प्राप्त करने वाले प्रत्याशी को प्रथम श्रेणी में रखा जायेगा । • विशेष योग्यता सहित प्रथम श्रेणी:- कार्यक्रम के अन्त में 75 प्रतिशत एवं अधिक संचयी निष्पादन सूचक प्राप्त करने वाले प्रत्याशी को विशेष योग्यता सहित प्रथम श्रेणी में रखा जायेगा बशर्त कि प्रत्याशी ने आकलन प्राप्त किये जाने वाले सभी पाठ्यक्रमों को प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण कर लिया हो । इसके अतिरिक्त, जिस प्रत्याशी ने 90 प्रतिशत एवं अधिक संचयी निष्पादक सूचक प्राप्त किये होंगे उसे अनुकरणीय निष्पादन के साथ कार्यक्रम उत्तीर्ण समझा जायेगा बशर्त कि उसने आकलन प्राप्त किये गये सभी पाठ्यक्रमों को प्रथम प्रयास में ही उत्तीर्ण कर लिया हो । ऐसे प्रत्याशियों को इस उपलक्ष्य में विशेष विश्वविद्यालय प्रमाण-पत्र प्रदान किया जायेगा । • संचयी निष्पादन सूचक की गणना खण्ड 14 के अनुसार होगी और यह केवल आकलन प्राप्त किये गये पाठ्यक्रमों में प्राप्तांको पर ही आधारित होगी । <p>पुनश्च:-यह संशोधन, संचयी निष्पादन सूचक की गणना हेतु परिणाम तैयार करते समय केवल कार्यक्रम पूर्ण हो जाने पर ही लागू होगा ।</p>
--	--	--	--

उपरोल्लिखित संशोधन, प्रबन्धन मंडल द्वारा विश्वविद्यालय की सम्मेलन-शाला में 29 नवम्बर, 2012 को आयोजित अपनी 51 वीं बैठक में स्वीकृत किये गये और ये, प्रबन्धन मंडल द्वारा अनुमोदित तिथि से ही प्रभावी होंगे ।

No. IPU/JR(C)/Ord.-Exam/Amend./51st BOM/2013-2014/2470.—In partial modification of Notification No. F.2(29)/Ord/IPU/ADRP/2006/11727 dated 20th October, 2009, and in pursuance of the provisions of Section 27 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of Guru Gobind Singh Indraprastha University, has approved following partial amendments in University's Ordinance-10 (Conduct and Evaluation of Examinations for programmes leading to all Bachelor's degree following the Annual System of Examination), Ordinance -II (Conduct and Evaluation of Examinations for programmes leading to all Bachelor's/ Master's Degree and Under -Graduate/ Post - Graduate Diplomas following Semester System), Ordinance-2I (Conduct and evaluation of examinations for Master's degree programme in (i) Archaeology & Heritage Management (ii) Conservation, Preservation and Heritage Management), Ordinance - 25 (Conduct and Evaluation of Examinations for weekend programme leading to all Bachelor's/ Master's Degrees & Under-Graduate/ Post-Graduate Diploma following Semester System), Ordinance - 27 (Conduct and Evaluation of Examinations for programmes leading to all Master's Degrees following the Annual System of Examination) and Ordinance - 29 (Conduct and Evaluation of Examinations for Master's Degree following Trimester System).

Ordinance	Relevant Clause	Existing Provision	Approved Amendment (Portion highlighted)
10	11(c)	<p>A candidate who has earned the minimum number of credits prescribed in the concerned Scheme of Teaching and Examination and Syllabi, either entirely from the concerned University School of Studies/Affiliated Institute/Centre for Learning and Education or including those credits which have been transferred after earning them for one semester/semesters from any other University operating in and outside India and with which MOU has been done by the Guru Gobind Singh Indraprastha University, shall be declared to have passed the programme, and shall be eligible for the award of the relevant degree or diploma. The Scheme of Teaching and Examination and Syllabi shall clearly specify the minimum credits to be earned to qualify for a degree or diploma. The credits included in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi of a programme shall generally be 5-10% more than such minimum specified credits subject to prescribed guidelines of the concerned statutory or regulatory authority, if any.</p> <p>Further, the successful candidates shall be placed in Divisions as below:</p> <ul style="list-style-type: none"> • Second Division: A candidate obtaining a Cumulative Performance Index (CPI) at the end of the programme of 50 and above but below 60 shall be placed in Second Division. • First Division: A candidate obtaining a CPI at the end of the programme of 60 and above but below 75 shall be placed in the First Division. • First Division with Distinction: 	<p>A candidate who has earned the minimum number of credits prescribed in the concerned Scheme of Teaching and Examination and Syllabi, either entirely from the concerned University School of Studies/Affiliated Institute/Centre for Learning and Education or including those credits which have been transferred after earning them for one semester/semesters from any other University operating in and outside India and with which MOU has been done by the Guru Gobind Singh Indraprastha University, shall be declared to have passed the programme, and shall be eligible for the award of the relevant degree or diploma. The Scheme of Teaching and Examination and Syllabi shall clearly specify the minimum credits to be earned to qualify for a degree or diploma. The credits included in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi of a programme shall generally be 5-10% more than such minimum specified credits subject to prescribed guidelines of the concerned statutory or regulatory authority, if any.</p> <p>Further, the successful candidates shall be placed in Divisions as below:</p> <ul style="list-style-type: none"> • The Cumulative Performance Index (CPI) of the student may be treated as the percentage obtained in the programmes of study for the purpose of equivalence to percentage of marks. • Second Division: A candidate obtaining a Cumulative Performance Index (CPI) at the end of the programme of 50 and above but below 60 shall be placed in Second Division. • First Division: A candidate obtaining a CPI at the end of the programme of 60 and above but
11	11.3		
21	10(c)		
25	10(c)		
27	10(c)		
29	10(c)		

	<p>A candidate obtaining a CPI at the end of the programme of 75 and above shall be placed in First Division with Distinction, provided, the candidate has passed all the courses for which he has earned credits, in the first attempt. Further, a candidate obtaining a CPI of 90 and above shall be deemed to have passed the programme with exemplary performance provided he/she has passed all the courses for which he has earned the credits, in the first attempt. Such candidates will be awarded a special University Certificate to this effect.</p> <p>• Cumulative Performance Index (CPI) shall be calculated as in Clause 14 and shall be based only on marks obtained in courses for which credits have been earned.</p>	<p>below 75 shall be placed in the First Division.</p> <p>• First Division with Distinction: A candidate obtaining a CPI at the end of the programme of 75 and above shall be placed in First Division with Distinction, provided, the candidate has passed all the courses for which he has earned credits, in the first attempt. Further, a candidate obtaining a CPI of 90 and above shall be deemed to have passed the programme with exemplary performance provided he/she has passed all the courses for which he has earned the credits, in the first attempt. Such candidates will be awarded a special University Certificate to this effect.</p> <p>• Cumulative Performance Index (CPI) shall be calculated as in Clause 14 and shall be based only on marks obtained in courses for which credits have been earned.</p> <p>N.B- The amendment will be applicable only on completion of the programme when the result is compiled for calculating the CPI.</p>
--	---	--

The above mentioned amendment has been approved by the Board of Management in its 51st meeting held on the 29th November, 2012 in Conference Hall of the University and the same shall come into force with effect from the date of approval by the Board of Management.

फा.सं.आईपीयू/जेआर(सी)/ऑर्डि.-परीक्षा/एमेन्ड./50वीं बोओएम/2012-14/2471.—अधिसूचना दिनांक 10 मार्च 2005, 1 अगस्त 2006, 06 अक्टूबर 2009 (केवल अध्यादेश-10 हेतु) एवं 20 अक्टूबर 2009 के आंशिक संशोधन में एवं गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के अधिनियम, 1998 (1998 के 9) की धारा 27 के प्रावधानों के अनुपालन में दिनांक 27-09-2012 को आयोजित अपनी बैठक में गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय का प्रबन्धन मंडल, विश्वविद्यालय के अध्यादेश-10 (परीक्षा की वार्षिक प्रणाली की अनुगामी सभी स्नातक उपाधियों से सम्बन्धित कार्यक्रमों हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन), अध्यादेश-11 (परीक्षा की सत्रार्थ (सेमेस्टर) प्रणाली की अनुगामी सभी स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधियों एवं स्नातक-पूर्व/स्नातकोत्तर डिप्लोमाओं से सम्बन्धित कार्यक्रमों हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन), अध्यादेश-21 पुरातत्व एवं परम्परा (हेरिटेज) प्रबन्ध (ii) संरक्षण, परिरक्षण एवं परम्परा प्रबन्धन निष्ठात उपाधि हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन अध्यादेश-25 (सत्रार्थ प्रणाली की अनुगामी सभी स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधियों एवं स्नातक-पूर्व/स्नातकोत्तर डिप्लोमाओं से सम्बन्धित सप्ताहान्त कार्यक्रमों हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन), अध्यादेश-27 (परीक्षा की वार्षिक प्रणाली की अनुगामी सभी निष्ठात (मास्टर) उपाधियों से सम्बन्धित कार्यक्रमों हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन) एवं अध्यादेश-29 (परीक्षा की त्रैमासिक प्रणाली की अनुगामी निष्ठात उपाधि हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन) में निम्न संशोधन करता है जिससे कि विश्वविद्यालय प्रतिमानकों के अनुसार कार्यक्रमों की अधिकतम अवधि में विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रम पूर्ण करने में छात्रों को सुविधा हो सके।

अध्यादेश	सम्बन्धित खण्ड	विद्यमान प्रावधान	अनुमोदित प्रावधान
10	11(ख)(iii)	किसी विद्यार्थी को आगामी शैक्षिक वर्ष में तभी प्रोन्नत किया जाएगा, यदि ऐसे विद्यार्थी ने कम से कम निम्न अंक प्राप्त किये हों,	किसी भी छात्र को अगले अकादमिक वर्ष हेतु केवल तभी प्रोन्नत किया जायेगा जबकि उसने न्यूनतम उपलब्धि निम्नानुसार प्राप्त की होगी;
11	11(ख)(iii)		
21	10(ख)(iii)		

25	10(ख)(iii)	(क) उस आगामी शैक्षिक वर्ष के कुल अंकों (क्रेडिटों) का 50 प्रतिशत (दो दशमलव अंकों तक सही) जिससे आगामी शैक्षिक वर्ष में प्रोन्नत करने की मांग की जा रही है; और	(क) उस विद्यमान शैक्षिक वर्ष/चालू शैक्षिक सत्र, जिससे अगले शैक्षिक वर्ष में प्रोन्नति वांछित है, में कुल आकलन का 50 प्रतिशत (पूर्ण अंकों में) तथा
27	11(ख)(iii)	(ख) सभी पूर्ववर्ती वर्षों के कुल अंकों का 90 प्रतिशत (दो दशमलव अंक तक सही व इसके बाद अंकों को पूर्ण करने के लिये राउण्डिंग करना) जिसमें उस आगामी शैक्षिक वर्ष के अंक शामिल नहीं हैं जिससे आगामी शैक्षिक वर्ष में प्रोन्नत करने की मांग की जा रही है।	(ख) उस विद्यमान शैक्षिक वर्ष, जिससे अगले शैक्षिक वर्ष में प्रोन्नति वांछित है, के आकलन को छोड़कर गत वर्ष के कुल आकलन का 90 प्रतिशत (पूर्ण अंकों में)।
29	10(ख)(iii)	अपेक्षित अंकों में कमी रहने के आधार पर जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, आगामी शैक्षिक वर्ष में प्रोन्नति पाने में विफल रहने वाले ऐसे सभी विद्यार्थियों को उन पूर्ववर्ती सेमस्टरों की ऐसी परीक्षाओं में दोबारा बैठने के लिये शैक्षिक विराम करने के लिये अपने आप स्वतः घोषित किए जाएंगे। जिनमें विद्यार्थी विफल रहा है इस प्रकार आगामी शैक्षिक वर्ष में प्रोन्नति किए जाने के लिये पर्याप्त अंक प्राप्त कर सके।	साथ ही, विश्वविद्यालय, उन छात्रों, जो गत वर्ष में आकलन का न्यूनतम 90 प्रतिशत प्राप्त नहीं पा सके लेकिन विद्यमान वर्ष अर्थात् उस चालू शैक्षिक सत्र, जिससे कि अगले वर्ष के लिए प्रोन्नति वांछित है, में आकलन का 50 प्रतिशत प्राप्त किया है, हेतु पूरक परीक्षा का प्रबन्ध करेगा। यह, निम्न विधि से पाठ्यक्रम-अवधि पर निर्भर करेगा एवं लागू होगा।
		शैक्षिक कार्यक्रम/पाठ्यक्रम पूरा करने के लिये किसी विद्यार्थी के लिये केवल दो शैक्षिक विराम अनुमत होंगे। किसी भी स्थिति में किसी भी विद्यार्थी को किसी भी आधार पर दो से अधिक शैक्षिक विराम लेने की अनुमति नहीं होगी, चाहे कोई भी आधार हो, जिससे पाठ्यक्रम/कार्यक्रम को पूरा करने की पूरी अवधि के दौरान उपस्थिति की कमी या अंकों की कमी के कारण अवरोधन शामिल हैं। जिस छात्र के दो शैक्षिक विराम निरोध हो जाते हैं तथा प्रोन्नति के अभाव में या निरोध के कारण उस विद्यार्थी को दो शैक्षिक विराम लेने के लिये और अवसर, उत्पन्न हो जाता है इस प्रकार की परिस्थितियों में विद्यार्थी का प्रवेश अपने आप उसी समय समाप्त/रद्द हो जाएगा यदि किसी अवसर पर उसे दो से अधिक शैक्षिक विराम की आवश्यकता उत्पन्न होती है।	1. तीन वर्षीय अवधि के कार्यक्रम हेतु- छात्रों से अपेक्षा होगी कि गत वर्ष के आकलन के 90 प्रतिशत के साथ द्वितीय वर्ष के अन्त में आयोजित होने वाली पूरक परीक्षाओं के द्वारा वे द्वितीय वर्ष अथवा चतुर्थ सत्रार्थ के अन्त तक अपने अनुत्तीर्ण परीक्षा-विषयों में उत्तीर्ण हो लें तथा उपाधि कार्यक्रम में अर्हता प्राप्त करने के लिये आकलन में किसी भी प्रकार की छूट के लिए विचार, केवल कार्यक्रम के अन्तिम सत्रार्थ अर्थात् कार्यक्रम के छठे सत्रार्थ/अन्तिम वर्ष के अन्त में ही किया जाएगा।
			2. चार वर्षीय अवधि के कार्यक्रमों हेतु - छात्रों से अपेक्षा होगी कि गत वर्ष के आकलन के 90 प्रतिशत के साथ क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के अन्त में आयोजित होने वाली पूरक परीक्षाओं के द्वारा वे द्वितीय वर्ष अथवा चतुर्थ सत्रार्थ, तृतीय वर्ष अथवा षष्ठ सत्रार्थ के अन्त तक अपने अनुत्तीर्ण परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण हो लें तथा उपाधि कार्यक्रम में अर्हता प्राप्त करने के लिए आकलन में किसी भी प्रकार की छूट के लिए विचार, केवल कार्यक्रम के अन्तिम सत्रार्थ अर्थात् कार्यक्रम के अष्टम सत्रार्थ/कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष के अन्त में ही किया जाएगा।
			3. पंचवर्षीय अवधि के कार्यक्रमों हेतु- छात्रों से अपेक्षा होगी कि गत वर्ष के आकलन के 90 प्रतिशत के साथ, क्रमशः द्वितीय वर्ष, तृतीय वर्ष एवं चतुर्थ वर्ष के अन्त में आयोजित होने वाली पूरक परीक्षाओं के द्वारा वे द्वितीय वर्ष अथवा चतुर्थ सत्रार्थ, तृतीय वर्ष अथवा षष्ठ सत्रार्थ, चतुर्थ वर्ष अथवा अष्टम सत्रार्थ के अन्त तक अपने अनुत्तीर्ण परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण हो लें तथा उपाधि कार्यक्रम में अर्हता प्राप्त करने के लिए आकलन में किसी भी प्रकार की छूट के लिए द्वितीय वर्ष अथवा चतुर्थ सत्रार्थ, तृतीय वर्ष अथवा षष्ठ सत्रार्थ, चतुर्थ वर्ष अथवा अष्टम सत्रार्थ के अन्त तक अपने अनुत्तीर्ण परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण हो लें तथा उपाधि कार्यक्रम में अर्हता प्राप्त करने के लिये आकलन में किसी भी प्रकार की छूट के लिये द्वितीय वर्ष अथवा चतुर्थ सत्रार्थ, तृतीय वर्ष अथवा षष्ठ सत्रार्थ, चतुर्थ वर्ष अथवा अष्टम सत्रार्थ के अन्त तक अपने अनुत्तीर्ण परीक्षा विषयों में उत्तीर्ण हो लें तथा उपाधि कार्यक्रम में अर्हता प्राप्त करने के लिये आकलन में किसी भी प्रकार की छूट के लिये विचार, केवल कार्यक्रम के अन्तिम सत्रार्थ के अन्त में अर्थात् 10वें सत्रार्थ/कार्यक्रम के अन्तिम वर्ष के अन्त में ही किया जाएगा।

			<p>ऐसे सभी छात्र, जो एतद् उपरोक्तानुसार अपेक्षित आकलन में न्यूनता के कारण अथवा किसी विशेष शैक्षणिक वर्ष के किसी एक अथवा दोनों सत्रार्थ(1) में निरोध के कारण अगले शैक्षणिक वर्ष में प्रोन्नत होने से वंचित रह गये हैं, स्वतः ही अपने अनुत्तीर्ण होने वाले दोनों सत्रार्थ/वर्ष की परीक्षा पुनः देने के लिए शैक्षणिक अन्तराल इसलिये ले चुके घोषित हो जाएंगे जिससे कि वे अगले वर्ष में प्रोन्नत होने के लिये पर्याप्त आंकलन प्राप्त कर सकें।</p> <p>शैक्षणिक (अकादमिक) अन्तराल केवल निम्न छात्रों हेतु लागू होगा -</p> <p>(i) जो विश्वविद्यालय प्रतिमानकों के अनुसार कार्यक्रम के वर्ष विशेष में किसी भी कक्षा में उपस्थित नहीं रहता।</p> <p>(ii) जिन्हें उपस्थिति में कमी के कारण रोक दिया गया हो।</p> <p>(iii) जिन्होंने किसी विशेष वर्ष/सत्रार्थ(1) में 50 प्रतिशत आकलन प्राप्त नहीं किये होंगे।</p> <p>किसी भी छात्र को शैक्षणिक कार्यक्रम/पाठ्यक्रम पूर्ण करने के लिए केवल दो शैक्षणिक अन्तराल ही अनुमेय होंगे। किसी भी छात्र को सामान्यतः पाठ्यक्रम/कार्यक्रम पूर्ण करने की पूरी अवधि में उपस्थिति कम होने के आधार पर निरोध अथवा आकलन में न्यूनता सहित किसी भी अन्य कारण के आधार पर दो से अधिक शैक्षणिक अन्तराल अनुमत नहीं होंगे। जिस छात्र के दो शैक्षणिक सत्र निरोध हो गये हैं और प्रोन्नति के अभाव में अथवा निरोध के कारण उसे शैक्षणिक अन्तराल की पुनः आवश्यकता होने लगी है ऐसी अवस्था में उस छात्र का प्रवेश उस समय से स्वतः ही निरस्त हो जायेगा जबसे कि दो शैक्षणिक अन्तराल से अधिक की आवश्यकता उसे होने लगी है।</p> <p>पुनश्च: पूरक परीक्षा का यह प्रावधान वास्तु विद्या स्नातक (बी.आर्क.), परिचर्या स्नातक बी.एस.सी. (नर्सिंग) एवं एक वर्षीय/दो सत्रार्थ तथा दो वर्षीय/चार सत्रार्थ की अवधि वाले अन्य कार्यक्रमों के सम्बन्ध में लागू नहीं होगा।</p>
--	--	--	---

उपरोक्त संशोधन अध्यादेशों में, प्रबन्धन मंडल द्वारा अनुमोदित तिथि 27 सितम्बर, 2012 से प्रभावी होंगे।

F.No. IPU/JR(C)/Ord.-Exam/Amend/50th BOM/2012-2014/2471.—In partial modification of Notifications dated 10th March, 2005, 1st August, 2006, 6th October, 2009 (only for Ordinance-10) and 20th October, 2009 and in pursuance of provisions of Section 27 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of Guru Gobind Singh Indraprastha University in its 50th meeting held on 27.09.2012, has approved following amendments in University's Ordinance-10 (Conduct and Evaluation of Examinations for programmes leading to all Bachelor's degree following the Annual System of Examination), Ordinance -11 (Conduct and Evaluation of Examinations for programmes leading to all Bachelor's/Master's Degree and Under-Graduate/Post-Graduate Diplomas following Semester System), Ordinance - 21 (Conduct and evaluation of examinations for Master's degree programme in (i) Archaeology & Heritage Management (ii) Conservation, Preservation and Heritage Management), Ordinance - 25 (Conduct and Evaluation of Examinations for weekend programme leading to all Bachelor's/Mater's Degrees & Under-Graduate/ Post-Graduate Diploma following Semester System), Ordinance - 27 (Conduct and Evaluation of Examinations for programmes leading to all Master's Degrees following the Annual System of Examination) and Ordinance - 29 (Conduct and Evaluation of Examinations for Master's

Degree following Trimester System), so as to facilitate students to complete the different academic programmes in laid down maximum duration of the programme as per university norms.

Ordinance No.	Relevant Clause	Existing Provision	Amended provision
10	11(b)(iii)	A student will be promoted to the next academic year only if such student has obtained at least,	A student will be promoted to the next academic year only if such student has obtained at least,
11	11(b)(iii)		
21	10(b)(iii)	A. 50%, (accurate up to two decimal digits) of the total credits of the ensuing academic year from which the promotion to next academic year is being sought, and	A. 50%, (Rounding to full digits) of the total credits of the existing academic year/current academic session from which the promotion to next academic year is being sought, and
25	10(b)(iii)		
27	11(b)(iii)		
29	10(b)(iii)	B. 90% (accurate up to two decimal digits & rounding of thereafter to full digits) of the total credits of all previous years excluding the credits of the ensuing academic year from which the promotion to next academic year is being sought. All such students who fail to get promoted to next academic year for the reason of deficiency in required credits as stated here in above will automatically be declared to have taken academic break to reappear in such examinations of previous semesters in which the student has failed, so as to obtain sufficient credits to be promoted to the next academic year. Only two academic breaks are permissible for a student for the completion of the academic programme/course. In no situation a student will be allowed to take more than two academic breaks, for any reason whatsoever, including for the reasons of detention for shortage of attendance or deficiency of credits during the whole term of completion of the course/programme. A student who has exhausted two academic breaks and a further occasion arises for him or her to take academic break because of non-promotion or detention, in such cases the admission of such student would automatically	B. 90% (rounding to full digits) of the total credits of the previous year, excluding the credits of the existing academic year from which the promotion to next academic year is being sought. Further the University provides for conduct of supplementary examination for those students who could not obtain a minimum of 90% credits in the preceding year but have obtained 50% credits in the existing year i.e. current academic session from which promotion to the next year is being sought. This will be applicable in the following manner depending upon the duration of the course ---. 1. <u>For programmes of 3 years duration</u> - Students will be required to clear their back papers to the extent of 90% credits of the preceding year at the end of the 2 nd year or 4 th semester through supplementary examinations to be held at the end of the 2 nd year and any relaxation in the credits for qualifying the Degree programme will be considered only at the end of the last semester of the programme i.e., 6 th semester/ last year of the programme. 2. <u>For programmes of 4 years duration</u> - Students will be required

		<p>stand cancelled right at the time such an occasion of more than two academic breaks arise.</p>	<p>to clear their back papers to the extent of 90% credits of the preceding year at the end of the 2nd year or 4th semester, 3rd year or 6th semester through supplementary examinations to be held at the end of 2nd year and 3rd year respectively and any relaxation in the credits for qualifying the Degree programme will be considered only at the end of the last semester of the programme i.e., 8th semester/ last year of the programme.</p> <p>3. <u>For programmes of 5 years duration</u> - Students will be required to clear their back papers to the extent of 90% credits of the preceding year at the end of the 2nd year or 4th semester, 3rd year or 6th semester, 4th year or 8th semester through supplementary examinations to be held at the end of 2nd year, 3rd year and 4th year respectively and any relaxation in the credits for qualifying the Degree programme will be considered only at the end of the last semester of the programme i.e., 10th semester/ last year of the programme.</p> <p>All such students who fail to get promoted to next academic year for the reason of deficiency in required credits as stated herein above or due to being detained in any one or both semesters of a particular academic year, will automatically be declared to have taken academic break to repeat such examinations of both semesters/ year in which the student has failed, so as to obtain sufficient credits to be promoted to the next academic year.</p> <p>Academic break shall be applicable only to students-</p> <p>i. Who do not attend any classes in a particular year of the</p>
--	--	---	---

			<p>program as per norms of the University.</p> <p>ii. Who are detained due to shortage of attendance</p> <p>iii. Who are not able to secure/obtain 50% credits in a particular year/ semester(s).</p> <p>Only two academic breaks are permissible for a student for the completion of the academic programme/ course. Generally a student will not be allowed to take more than two academic breaks, for any reason whatsoever, including for the reasons of detention for shortage of attendance or deficiency of credits during the whole term of completion of the course/programme. A student who has exhausted two academic breaks and a further occasion arises for him or her to take academic break because of non-promotion or detention, in such cases the admission of such student would automatically stand cancelled right at the time such an occasion of more than two academic breaks arise.</p> <p>NB: This Provision of supplementary examination is not applicable to B. Arch., B.Sc. (Nursing) and programmes of the duration of 01 year/ 2 semesters and 02 years/ 04 semesters.</p>
--	--	--	---

The above amendments in Ordinances shall come into force with effect from 27.09.2012, date of approval by the Board of Management.

फा. सं. आईपीयू/जे आर (सी)/ओआरडी 15/बी ओएम-55/2013-14/2472-गुरु गोबिन्द सिंह इन्दप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम, 1998 (1998 का 9) की धारा 27 के उपबन्धों के अनुसरण में विश्वविद्यालय प्रबन्धन बोर्ड की दिनांक 24-09-2013 को अपनी 55 वीं बैठक में एजेण्डा मद संख्या 55. 03 के द्वारा अध्यादेश संख्या 15-एमओबीओएस0 (बैचलर ऑफ नर्सिसिन् एण्ड बैचलर ऑफ सर्जरी) कार्यक्रम के लिए परीक्षाओं का संचालन और नूतनांकन से सम्बन्धित अधिसूचना संख्या फां. 2(29)/ ओ आर डी/आईपीयू/डी आर पी/2005/2431 दिनांक 10-05-2005 में निम्नलिखित आशिक संशोधन की स्वीकृती दी है ।

विद्यमान अध्यादेश-15	संशोधित अध्यादेश-15
<p>प्रयोजनीयता: यह अध्यादेश व्यावसायिक प्रणाली अपनाते हुए एमबीबीएस (बैचलर ऑफ मेडिसिन एण्ड बैचलर ऑफ सर्जरी) कार्यक्रम के लिए लागू होगा।</p> <p>1 परिभाषाएं :</p> <p>(क) अकादमिक कार्यक्रम/कार्यक्रमों : का अर्थ है एमबीबीएस (बैचलर ऑफ मेडिसिन और बैचलर ऑफ सर्जरी) की डिग्री प्रदान करने के लिए चलाया जा रहा कोई कार्यक्रम/पाठ्यक्रम।</p> <p>(ख) व्यावसायिक प्रणाली : एमबीबीएस डिग्री प्रदान करने वाले स्नातक पूर्व स्तर के शिक्षण पाठ्यक्रम को तीन व्यावसायिक भागों में बांटा गया है—प्री क्लिनिकल, पैरा क्लिनिकल और क्लिनिकल पाठ्यक्रम। एमबीबीएस का पाठ्यक्रम एक 4 ^{1/2} वर्षीय कार्यक्रम है, जिसके बाद एक वर्ष की प्रशिक्षण अवधि होती है। 4 ^{1/2} वर्ष के एमबीबीएस कार्यक्रम की इस अवधि को क्रमशः 1 वर्ष, 1 ^{1/2} वर्ष और 2 वर्ष में प्रथम, द्वितीय और तृतीय व्यावसायिक भागों में बांटा गया है। तृतीय व्यावसायिक की दो वर्ष की अवधि को, पुनः प्रत्येक वर्ष को, भाग 1 और 11 में बांटा गया है।</p> <p>प्रथम व्यावसायिक में शामिल किए गए पाठ्यक्रम एनाटॉमी, फिजिओलॉजी और बायोकेमिस्ट्री है।</p> <p>द्वितीय व्यावसायिक में शामिल किए गए पाठ्यक्रम पैथोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, फार्माकोलॉजी और फॉरेंसिक मेडिसिन है।</p> <p>तृतीय व्यावसायिक के प्रथम भाग में शामिल किए गए पाठ्यक्रमों में ऑपथोलॉजी, ईएनटी (ओटो-रिनो-लेरिजोलॉजी) और कम्युनिटी मेडिसिन सम्मिलित है।</p> <p>तृतीय व्यावसायिक के द्वितीय भाग में शामिल किए गए पाठ्यक्रमों में पीडियाट्रिक्स, आर्थोपीडिक्स सहित सर्जरी और बॉस्टेट्रिक्स तथा गायनेकोलॉजी सम्मिलित हैं।</p> <p>तृतीय व्यावसायिक में शामिल क्लिनिकल पाठ्यक्रमों का शिक्षण द्वितीय व्यावसायिक अर्थात् एमबीबीएस पाठ्यक्रम के दूसरे वर्ष के आरंभ से शुरू होता है।</p> <p>तथापि, कम्युनिटी मेडिसिन का शिक्षण प्रथम व्यावसायिक के आरंभ में शुरू होता है और पाठ्यक्रम के भाग III 'क' के अंत तक जारी रहता है।</p> <p>(ग) अध्ययन बोर्ड का अर्थ संबंधित विद्यालय का बोर्ड।</p> <p>(घ) पाठ्यक्रम का अर्थ है अकादमिक कार्यक्रम का संघटक जिसकी सुस्पष्ट कूट संख्या है।</p> <p>(ङ) बाह्य परीक्षक का अर्थ वह परीक्षक है जो विश्वविद्यालय या इसकी संबद्ध संस्थाओं में नियोजित नहीं है।</p> <p>(च) विद्यार्थी का अर्थ होगा किसी भी अकादमिक कार्यक्रम, जिस पर यह अध्यादेश लागू होता है, के लिए विश्वविद्यालय के विद्यालयों तथा/अथवा इसकी संबद्ध संस्थाओं में दाखिल हुआ कोई व्यक्ति।</p> <p>(छ) विश्वविद्यालय का अर्थ गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय होगा।</p>	<p>अनुप्रयोज्यता : यह अध्यादेश भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा.चि.परि.) के प्रतिमानों के अनुसार आयुर्विज्ञान तथा शल्य-चिकित्सा स्नातक (एम.बी.बी.एस.) उपाधि(डिग्री) हेतु कार्यक्रम पर लागू होगा।</p> <p>1*1 अकादमिक कार्यक्रम/कार्यक्रमों : का अर्थ है एमबीबीएस (बैचलर ऑफ मेडिसिन और बैचलर ऑफ सर्जरी) की डिग्री प्रदान करने के लिए चलाया जा रहा कोई कार्यक्रम/पाठ्यक्रम।</p> <p>1*2 वृत्तिक तंत्र: आयु, शल्य चिकि. स्ना. (एम.बी.बी.एस.) उपाधि प्रदान करने हेतु स्नातक पूर्व शिक्षण पाठ्यचर्या को पूर्व नैदानिक, परानैदानिक एवं नैदानिक पाठ्यक्रम समाविष्ट करने वाले प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वृत्तिक में बांटा गया है। आयु, शल्य चिकि. स्ना. कार्यक्रम 4 ^{1/2} वर्षीय कार्यक्रम है जो एक वर्षीय प्रशिक्षुता हेतु एक वर्ष की अवधि के अनिवार्य आवर्ति प्रशिक्षुता प्रशिक्षण द्वारा अनुसरित होता है। सम्पूर्ण आयु, शल्य चिकि. स्ना. कार्यक्रम अवधि में, अधिगम (सीखना) भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा.चि.परि.) के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमों के अनुसार ही होगा।</p> <p>1*3 पाठ्य समिति (पाठसमि0) से अभिप्राय है सम्बन्धित स्कूल की पाठ्य समिति।</p> <p>1*4 पाठ्यक्रम से अभिप्राय है आयु0 शल्य चिकि. स्नातक कार्यक्रम का घटक जिसके साथ सुस्पष्ट कूट संख्या निहित हो।</p> <p>1*5 बाह्य परीक्षक का अर्थ वह परीक्षक है जो विश्वविद्यालय या इसकी संबद्ध संस्थाओं में नियोजित नहीं है।</p> <p>1*6 विद्यार्थी का अर्थ होगा किसी भी अकादमिक कार्यक्रम, जिस पर यह अध्यादेश लागू होता है, के लिए विश्वविद्यालय के विद्यालयों तथा/अथवा इसकी संबद्ध संस्थाओं में दाखिल हुआ कोई व्यक्ति।</p> <p>1*7 इस अध्यादेश में, प्रयुक्त जिन शब्दों एवं अभिव्यक्तियों को परिभाषित नहीं किया गया है उनका वही अभिप्राय होगा जो अधिनियम, संविधियों अथवा पूर्ववर्ती अध्यादेश में उनके लिये नियत किया गया होगा।</p>
<p>2*0 विश्वविद्यालय अकादमिक परिषद् द्वारा यथा अनुमादित सभी अकादमी कार्यक्रमों तथा जिन्हें वह अकादमिक परिषद् द्वारा यथा अनुमादित निर्धारित शिक्षण तथा परीक्षा योजना तथा विषय पाठ्य</p>	<p>2*0 विश्वविद्यालय अकादमिक परिषद् द्वारा यथा अनुमादित सभी अकादमी कार्यक्रमों तथा जिन्हें वह अकादमिक परिषद् द्वारा यथा अनुमादित निर्धारित शिक्षण तथा परीक्षा योजना तथा विषय पाठ्य विवरण</p>

<p>विवरण के अनुसार यथा मामला स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्रदान करने लिए समय-समय पर अधिसूचित करे, के लिए परीक्षाओं का संचालन करेगा ।</p>	<p>के अनुसार यथा मामला स्नातक/स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्रदान करने लिए समय-समय पर अधिसूचित करे, के लिए परीक्षाओं का संचालन करेगा ।</p>
<p>3*0 विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में बैठने की अनुमति निम्नलिखित विद्यार्थियों को दी जाएगी अर्थात् वे अग्र्यर्थी जो शिक्षण तथा परीक्षा योजना तथा विषय पाठ्य विवरण में अध्ययन के उस कार्यक्रम के लिए विनिर्दिष्ट अवधि के लिए विश्वविद्यालय में या विश्वविद्यालय के साथ संबद्ध किसी संस्था/महाविद्यालय में अध्ययन का नियमित पाठ्यक्रम पूरा कर लेते हैं ।</p> <p>बशर्त कि किसी विद्यार्थी को इस अध्यादेश के खंड 10 में यथा उपबधित के अनुसार या विश्वविद्यालय के किसी अन्य अध्यादेश में यथा उपबधित के अनुसार परीक्षा में बैठने से विवर्जित किया जा सकता है ।</p>	<p>3*0 विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में बैठने की अनुमति अग्र्यर्थियों के लिये प्रस्तावित होगी जिन्होंने विश्वविद्यालय अथवा इसके सम्बद्ध संस्था/महाविद्यालय से, शिक्षण व परीक्षा एवं पाठ्यक्रम की योजना में अध्ययन विषय हेतु विनिर्दिष्ट अवधि तक अध्ययन पाठ्यक्रम पूर्ण किया होगा ।</p> <p>साथ ही यह भी धर्ता है कि विद्यार्थी को इस अध्यादेश के खंड 10 में यथा उपबधित के अनुसार एक अथवा अधिक पाठ्यक्रमों की परीक्षा में बैठने से विवर्जित किया जा सकता है ।</p>
<p>4*0 अकादमिक कार्यक्रम समिति</p> <p>(क) विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान विद्यालय के अकादमिक कार्यक्रम समिति होगी तथा संबद्ध संस्थाओं में कार्यक्रमवार अकादमिक कार्यक्रम समिति(याँ) होंगी ।</p> <p>(ख) (i) विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान अध्ययन विद्यालय के मामले में, अध्ययन विद्यालय के सभी अध्यापक जिनकी संख्या अधिकतम 25 होगी अकादमिक कार्यक्रम समिति का संघटन करेंगे जिसके अध्यक्ष कार्य विद्यालय का संकायाध्यक्ष होंगे । यह समिति संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए पाठ्यक्रमों के कार्यान्वयन को समन्वित करेगी ।</p> <p>(ii) संबद्ध संस्थाओं के मामले में विश्वविद्यालय के सभी पूर्णकालिक मान्यताप्राप्त अधिकतम 25 अध्यापक अकादमिक कार्यक्रम समिति का संघटन करेंगे । इस समिति का अध्यक्ष उस संस्था का निदेशक/प्रधानाचार्य, अथवा उसके द्वारा इस प्रकार नामांकित समिति का कोई अन्य सदस्य होगा । यह समिति संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन का समन्वय करेगी तथा साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा यथा संघटित कार्यक्रम समन्वय समितियों के साथ भी समन्वय करेगी ।</p> <p>(ग) अकादमिक कार्यक्रम समितियाँ विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान विद्यालय के अध्ययन बोर्ड द्वारा या संबंधित संबद्ध संस्था के निदेशक/प्रधानाचार्य द्वारा इसे समनुदेशित अन्य कार्यों का निष्पादन भी करेंगी ।</p> <p>(घ) अकादमिक कार्यक्रम समिति की बैठक, जब और जैसे अपेक्षित हो, किन्तु प्रत्येक 6 माह में एक बार अवश्य बुलाई जाएगी । समिति का अध्यक्ष बैठकों का संयोजन करेगा ।</p>	<p>4*0 अकादमिक कार्यक्रम समिति</p> <p>4*1 विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान विद्यालय के अकादमिक कार्यक्रम समिति होगी तथा संबद्ध संस्थाओं में कार्यक्रमवार अकादमिक कार्यक्रम समिति(याँ) होंगी ।</p> <p>4*2(i) विश्वविद्यालय के औषध एवं पराचिकित्सा स्वास्थ्य विज्ञान विद्यालय के मामले में कार्यक्रम संचालन से सम्बन्धित सभी अध्यापक अधिकतम पच्चीस की संख्या वाली एक अकादमिक कार्यक्रम समिति का गठन करेंगे जिसके अध्यक्ष स्कूल के संकायाध्यक्ष होंगे । यह समिति पाठ्यक्रमों के परिचालन के लिये संसाधनों के इष्टतम उपयोग हेतु समन्वय करेगी ।</p> <p>(ii) संबद्ध संस्थाओं के मामले में विश्वविद्यालय के अधिकतम 25 पूर्णकालिक मान्यताप्राप्त अध्यापक उस कार्यक्रम हेतु अकादमिक कार्यक्रम समिति का संघटन करेंगे । इस समिति के अध्यक्ष उस संस्था के निदेशक/प्रधानाचार्य, अथवा उनके द्वारा इस प्रकार नामांकित समिति के कोई अन्य सदस्य होंगे । यह समिति संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए पाठ्यक्रमों के क्रियान्वयन का समन्वय करेगी तथा साथ ही विश्वविद्यालय द्वारा यथा संघटित कार्यक्रम समन्वय समितियों के साथ भी समन्वय करेगी ।</p> <p>4*3 ये अकादमिक कार्यक्रम समितियाँ विद्यालय के अध्ययन मंडल अथवा सम्बन्धित सम्बद्ध संस्थान के निदेशक/प्राचार्य द्वारा समनुदेशित अन्य दायित्वों का भी निर्वाह करेंगी ।</p> <p>4*4 अकादमिक कार्यक्रम समिति की बैठक, जब और जैसे अपेक्षित हो, किन्तु प्रत्येक 6 माह में एक बार अवश्य बुलाई जाएगी । समिति का अध्यक्ष बैठकों का संयोजन करेगा ।</p>
<p>5*0 कार्यक्रम समन्वय समिति</p> <p>5*1 एक ही जैसे कार्यक्रम का संचालन करने वाली विभिन्न संस्थाओं के बीच अकादमिक समन्वय सुकर बनाने के उद्देश्य से, विश्वविद्यालय द्वारा, यदि वांछित समझा जाए, एक कार्यक्रम समन्वय समिति का संघटन किया जाएगा । सभी संबंधित संबद्ध संस्थाओं के निदेशक/प्रधानाचार्य इस समिति के सदस्य होंगे । समिति का अध्यक्ष कुलपति द्वारा नामित किया जाने वाला विश्वविद्यालय का कोई एक संकायाध्यक्ष/निदेशक/प्रधानाचार्य होगा ।</p> <p>5*2 समिति पाठ्यक्रमों (विषय पाठ्य विवरणों) की सामयिक पूर्ति करने</p>	<p>5*0 कार्यक्रम समन्वय समिति</p> <p>5*1 एक ही जैसे कार्यक्रम का संचालन करने वाली विभिन्न संस्थाओं के बीच अकादमिक समन्वय सुकर बनाने के उद्देश्य से, विश्वविद्यालय द्वारा, यदि वांछित समझा जाए, एक कार्यक्रम समन्वय समिति का संघटन किया जाएगा । सभी संबंधित संबद्ध संस्थाओं के निदेशक/प्रधानाचार्य इस समिति के सदस्य होंगे । समिति का अध्यक्ष कुलपति द्वारा नामित किया जाने वाला विश्वविद्यालय का कोई एक संकायाध्यक्ष/निदेशक/प्रधानाचार्य होगा ।</p> <p>5*2 समिति, सभी निर्धारित पाठ्यक्रमों को सम्पादित करते हुए शैक्षिक</p>

<p>तथा आंतरिक पूर्ति करने तथा आंतरिक मूल्यांकन/कक्षा परीक्षाओं में एकरूपता लाने के लिए अकादमी कार्यक्रम के क्रियान्वयन को समन्वित करेगी। समिति, यदि आवश्यक हो, आदर्श प्रश्न पत्र तैयार करने में भी सहायता करेगी, व्यावहारिक परीक्षाओं के लिए दिशानिर्देश तैयार करेगी तथा परीक्षकों के पैनल के लिए नामों का सुझाव देगी। समिति विषय पाठ्य विवरण में किन्हीं आशोधनों का सुझाव भी देगी, विषय पाठ्य विवरण की व्यापक समीक्षा करेगी, अथवा नए पाठ्यक्रमों के लिए मसौदा विषय पाठ्य विवरण तैयार करेगी।</p>	<p>कलैण्डर के अनुसार शैक्षिक कार्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु समन्वय करेगी और आन्तरिक मूल्यांकन/कक्षा-परीक्षण में एकरूपता बनाये रखेगी। समिति नमूना प्रश्नपत्र तैयार करने में भी सहयोग करेगी, यदि आवश्यक हुआ तो, प्रायोगिक परीक्षाओं के लिये मार्गदर्शी सिद्धान्त तैयार करेगी और परीक्षकों की नामिका (पैनल) हेतु नाम भी सुझायेगी। समिति पाठ्यक्रम में कोई संशोधन भी सुझा सकती है, प्राध्यचर्या की विस्तृत समीक्षा कर सकती है अथवा नए पाठ्यक्रमों के लिये मसौदा पाठ्यचर्या भी तैयार कर सकती है।</p>
<p>6*0 प्रशिक्षण अवधि, समय और वितरण</p> <p>(i) एमबीबीएस कार्यक्रम 4 वर्ष की अवधि के साथ साथ चक्रानुक्रम इंटरनशिप का होगा और विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान के स्कूल के अंतर्गत होगा।</p> <p>(ii) कार्यक्रम की अवधि 4 वर्ष होगी, जिसमें इंटरनशिप शामिल नहीं होगी। इस अवधि को 9 टर्म्स में विभाजित किया गया है। टर्म 1,2 प्रथम व्यावसायिक में शामिल हैं। टर्म 3,4 और 5 द्वितीय व्यावसायिक के भाग हैं। टर्म 6 और 7 तृतीय व्यावसायिक के भाग। के दौरान हैं, और टर्म 8 और 9 तृतीय व्यावसायिक के भाग। का हिस्सा हैं।</p> <p>(iii) टर्म्स की समय सूची</p> <p>टर्म्स की समय सूची वही होगी जिसे प्रत्येक वर्ष के अकादमिक कलैण्डर में कुलपति के अनुमोदन से संकाय अध्यक्ष द्वारा अधिसूचित किया जाएगा।</p>	<p>6*0 प्रशिक्षण अवधि एवं समय बंटन</p> <p>6*1 आयुशल्य चिकित्सा स्नातक कार्यक्रम 4^{1/2} वर्ष का होगा जो एक वर्ष अवधि की अनिवार्यता आवर्ती प्रशिक्षुता के द्वारा अनुसरित होगा तथा विश्वविद्यालय की आयु, विज्ञान एवं पराचिकित्सा स्वास्थ्य सेवाओं के अधीन होगा।</p> <p>6*2 प्रशिक्षुता अवधि सहित कार्यक्रम की कालावधि भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा.चि.परि.) के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमों के ही अनुरूप होगी।</p> <p>टर्म्स की समयसूची</p> <p>6*3 टर्म्स की समय सूची वही होगी जिसे प्रत्येक वर्ष के अकादमिक कलैण्डर में कुलपति के अनुमोदन से संकाय अध्यक्ष द्वारा अधिसूचित किया जाएगा।</p>
<p>7*0 क्लिनिकल विषयों में प्रशिक्षण की अवधि</p> <p>(क) सामान्य मेडिसिन : प्रयोगशाला मेडिसिन और संक्रामक रोगों में प्रशिक्षण सहित 26 सप्ताह।</p> <p>(ख) सामान्य सर्जरी (शल्य चिकित्सा): एनेस्थीसिया (निश्चेतक) और ड्रेसिंग (पट्टी बांधने) में प्रशिक्षण सहित, 26 सप्ताह।</p> <p>(ग) ऑब्स्टेट्रिक्स और गायनेकोलॉजी (स्त्री रोग विज्ञान एवं प्रसूतिविज्ञान) : 24 सप्ताह (परिवार कल्याण सहित), मातृत्व (ब्रयच कद्वस), पारिवारिक औषधि और परिवार कल्याण में प्रशिक्षण सहित। उपरोक्त सभी विषयों की पोस्टिंग द्वितीय, तृतीय क और तृतीय, ख के दौरान की जाएगी।</p> <p>(घ) कम्युनिटी मेडिसिन : ग्रामीण और शहरी स्वास्थ्य केन्द्रों पर प्रशिक्षण सहित 12 सप्ताह।</p> <p>(ङ) पीडियाट्रिक्स (शिशुरोगविज्ञान), आर्थोपीडिक्स (अस्थिरोगविज्ञान) और ऑपथेल्मोलॉजी (नेत्र रोग विज्ञान) - प्रत्येक 10 सप्ताह।</p> <p>(च) ईएनटी (नास, कान और गला) - 8 सप्ताह</p> <p>(छ) रिकन और एसटीडी (त्वचा और यौन संचरित रोग) - 6 सप्ताह</p> <p>(ज) पल्मोनरी मेडिसिन (श्वासरोग संबंधी औषधि), साइकियाट्री (मनाचिकित्सा), रेडियोलॉजी (विकिरण विज्ञान), कैन्सर (आपातकालीन), डेंटल मेडिसिन (दंत चिकित्सा औषधि) - 2 सप्ताह इन प्रशिक्षण /पोस्टिंग का वितरण छोटे बैचों में किया जाएगा तथा इसका निर्णय संस्थान स्वयं करेगी।</p>	<p>7*0 नैदानिक विषयों की प्रशिक्षण अवधि</p> <p>7*1 भा.चि.परि. विनियमों के अनुरूप होगी तथा प्रशिक्षण/तैनाती सांस्थानिक स्तर पर लिये गये निर्णयानुसार छोटी टोलियों में होगी।</p>
<p>8*0 विद्यार्थियों के लिए अवकाश</p> <p>प्रत्येक सत्र के उपरान्त विद्यार्थियों के लिए दो सप्ताह का अवकाश होगा जिसकी अधिसूचना प्रत्येक वर्ष शैक्षिक कलैण्डर में की जाएगी।</p>	<p>8*0 विद्यार्थियों के लिए अवकाश</p> <p>8*1 प्रत्येक सत्र के उपरान्त विद्यार्थियों के लिए दो सप्ताह का अवकाश होगा जिसकी अधिसूचना प्रत्येक वर्ष शैक्षिक कलैण्डर में की जाएगी।</p>

9-0 शिक्षकों के लिए अवकाश

शिक्षकों के लिए ग्रीष्मकाल के दौरान 68 दिनों का और शीतकाल के दौरान 35 दिनों का अवकाश होगा, जिसे शैक्षिक कैलेंडर में अधिसूचित किया जाएगा।

टिप्पणी :

शिक्षकों के लिए अवकाश बैचों में होगा, संकाय के आधे सदस्य काम करेंगे, जबकि आधे सदस्य अवकाश पर होंगे। अलग-अलग संकाय सदस्यों को ऊपर उल्लिखित दिनों की संख्या के आधे दिनों के अवकाश की पात्रता होगी।

यदि कोई शिक्षक अवकाश का लाभ नहीं उठाता है तो वह उन दिनों की संख्या के आधे के बराबर अर्जित अवकाश प्राप्त करने का हकदार होगा।

10-0 उपस्थिति

10-1 एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए, व्यावसायिक के अंत में परीक्षा में बैठने की पात्रता पाने के लिए विद्यार्थी की सभा सभी सैद्धांतिक कक्षाओं में 75 प्रतिशत या अधिक में उपस्थिति और प्रायोगिक कक्षाओं, संगोष्ठियों, सामूहिक चर्चा, ट्यूटोरियल्स, प्रदर्शन, अस्पतालों में पोस्टिंग, बैड साइड क्लिनिक आदि में 80 प्रतिशत उपस्थिति होगी। विश्वविद्यालय के मामले में संकाय अध्यक्ष और संबद्ध संस्थानों के मामले में प्रधानाचार्य/निदेशक, अभिलेखित किए गए कारणों से किसी पाठ्यक्रम में किसी विद्यार्थी की उपस्थिति कमी को अनदेखा किया जा सकता है। तथापि, किसी भी परिस्थिति में पाठ्यक्रम की एक व्यावसायिक के अंत में परीक्षा में ऐसे विद्यार्थी को नहीं बैठने दिया जाएगा जिसकी उपस्थिति 70 प्रतिशत से कम है।

10-2 विश्वविद्यालय/संबद्ध संस्थान में एमबीबीएस पाठ्यक्रमों में पंजीकृत विद्यार्थियों की उपस्थिति का अभिलेख रखा जाएगा। शिक्षकों को ऐसे विद्यार्थियों के नाम व्यावसायिक परीक्षा के प्रथम दिन से कम से कम 10 दिन पहले विद्यालय के संकाय अध्यक्ष/संबद्ध संस्थान के निदेशक/प्रधानाचार्य को सूचित करने चाहिए, जिन्हें इस खण्ड के अंतर्गत उपस्थिति मानदण्डों के अनुसार परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

10-3 विद्यालय के संकाय अध्यक्ष/संबद्ध संस्थान के निदेशक/प्रधानाचार्य द्वारा ऐसे विद्यार्थियों के नामों की घोषणा परीक्षा शुरू होने के कम से कम 5 कैलेंडर दिन पूर्व की जाएगी, जो व्यावसायिक परीक्षा में बैठने के पात्र नहीं हैं और साथ में परीक्षा नियंत्रक को भी सूचना दी जाएगी।

टिप्पणी:

विश्वविद्यालय के एमबीबीएस कार्यक्रम में प्रवेश विश्वविद्यालय द्वारा प्रत्येक वर्ष प्रवेश की घोषणा के समय निर्धारित तिथि पर बंद हो जाएगा। यदि विद्यार्थी को किसी कारण से प्रवेश बंद होने की तिथि के बाद प्रवेश दिया जाता है तो वह विद्यार्थी द्वितीय टर्म की समाप्ति पर होने वाली वार्षिक परीक्षा में बैठने का पात्र नहीं होगा। यदि वह विद्यार्थी अन्यथा पात्र है तो उसे अनुपूरक परीक्षा में बैठने की इजाजत दी जा सकती है व्यावसायिक के प्रथम में विद्यार्थियों का बैच को जो पूरक बैच में उत्तीर्ण हुआ है केवल तभी द्वितीय व्यावसायिक वार्षिक विश्वविद्यालय परीक्षा में बैठने के पात्र होंगे, यदि उस बैच ने अध्ययन के

9-0 शिक्षकों के लिए अवकाश

9-1 शिक्षकों के लिए ग्रीष्मकाल के दौरान 68 दिनों का और शीतकाल के दौरान 35 दिनों का अवकाश होगा, जिसे शैक्षिक कैलेंडर में अधिसूचित किया जाएगा।

टिप्पणी :

शिक्षकों के लिए अवकाश बैचों में होगा, संकाय के आधे सदस्य काम करेंगे, जबकि आधे सदस्य अवकाश पर होंगे। अलग-अलग संकाय सदस्यों को ऊपर उल्लिखित दिनों की संख्या के आधे दिनों के अवकाश की पात्रता होगी।

यदि कोई शिक्षक अवकाश का लाभ नहीं उठाता है तो वह केन्द्र सरकार के नियमानुसार उन दिनों की संख्या के आधे के बराबर के अतिरिक्त अर्जित अवकाश प्राप्त करने का हकदार होगा।

10-0 उपस्थिति

10-1 आयु 0 शल्य चिकित्सा स्नातक कार्यक्रम जारी रखने के लिये किसी भी छात्र को भा0चि0परि0 के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमों के अनुसार उपस्थिति मानदण्डों पर खरा उतरना होगा।

10-2 विश्वविद्यालय/संबद्ध संस्थान में एमबीबीएस पाठ्यक्रमों में पंजीकृत विद्यार्थियों की उपस्थिति का अभिलेख रखा जाएगा। शिक्षकों को ऐसे विद्यार्थियों के नाम व्यावसायिक परीक्षा के प्रथम दिन से कम से कम 10 दिन पहले विद्यालय के संकाय अध्यक्ष/संबद्ध संस्थान के निदेशक/प्रधानाचार्य को सूचित करने चाहिए, जिन्हें उपस्थिति मानदण्डों के अनुसार परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जा सकती है।

10-3 विद्यालय के संकाय अध्यक्ष/संबद्ध संस्थान के निदेशक/प्रधानाचार्य द्वारा ऐसे विद्यार्थियों के नामों की घोषणा परीक्षा शुरू होने के कम से कम 5 कैलेंडर दिन पूर्व की जाएगी, जो व्यावसायिक परीक्षा में बैठने के पात्र नहीं हैं और साथ में परीक्षा नियंत्रक को भी सूचना दी जाएगी।

वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये उपस्थिति मानदण्डों का पालन किया जायेगा। यदि किसी छात्र की उपस्थिति कम रह जाती है तो उसे भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा0चि0परि0) के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमानुसार पूरक परीक्षाओं में ही सम्मिलित होने दिया जायेगा।

<p>18 माह पूरे कर लिए हों। अन्यथा उन्हें, केवल 18 माह के अध्ययन और प्रशिक्षण के बाद ही पहली बार द्वितीय व्यावसायिक की पूरक परीक्षा में बैठना होगा।</p> <p>वार्षिक परीक्षा में बैठने के लिए उपस्थिति के मापदण्ड लागू होंगे। यदि किसी विद्यार्थी की उपस्थिति कम हो जाती है, तो उसे केवल पूरक परीक्षा में बैठने दिया जाएगा। हालांकि उसके मामले में सभी उद्देश्यों के लिए यह माना जाएगा कि उसने प्रथम बार में व्यावसायिक परीक्षा उत्तीर्ण की है।</p>	
<p>11*0 कार्यक्रम का पाठ्यक्रम</p> <p>11*1 एमबीबीएस पाठ्यक्रमों का करिकुलम, सैद्धांतिक खण्ड और प्रायोगिक खण्ड विश्वविद्यालय द्वारा जारी करिकुलम में अलग से अधिसूचित किए जाते हैं।</p>	<p>11*0 कार्यक्रम का पाठ्यक्रम</p> <p>11*1 एमबीबीएस पाठ्यक्रमों का करिकुलम, सैद्धांतिक खण्ड और प्रायोगिक खण्ड विश्वविद्यालय द्वारा जारी करिकुलम में अलग से अधिसूचित किया जायेगा।</p>
<p>12*0 एमबीबीएस के विभिन्न पाठ्यक्रमों में न्यूनतम शिक्षण घण्टे</p> <p>क पूर्व-क्लिनिक पाठ्यक्रम : (प्रथम और द्वितीय टर्म):</p> <p>एनाटॉमी = 650 घण्टे</p> <p>फिजियोलॉजी = 480 घण्टे</p> <p>बायो केमिस्ट्री = 240 घण्टे</p> <p>कम्युनिटी मेडिसिन = 60 घण्टे</p> <p>योग = 1430 घण्टे</p> <p>ख पैरा-क्लिनिकल पाठ्यक्रम : (तृतीय, चतुर्थ और पंचम टर्म):</p> <p>पैथोलॉजी = 300 घण्टे</p> <p>फार्माकोलॉजी = 300 घण्टे</p> <p>मोइक्रोबायोलॉजी = 250 घण्टे</p> <p>कम्युनिटी मेडिसिन = 70 घण्टे</p> <p>फॉरेंसिक मेडिसिन = 100 घण्टे</p> <p>योग = 1020 घण्टे</p> <p>ग क्लिनिकल पाठ्यक्रम :</p> <p>सामान्य मेडिसिन* = 300 घण्टे</p> <p>पीडियाट्रिक्स = 100 घण्टे</p> <p>टीबी* = 24 घण्टे</p> <p>साइकियाट्री* = 24 घण्टे</p> <p>स्किन-एसटीडी = 30 घण्टे</p> <p>कम्युनिटी मेडिसिन = 50 घण्टे</p> <p>एनेस्थेसिया** = 24 घण्टे</p> <p>सामान्य शल्यचिकित्सा = 300 घण्टे</p> <p>आर्थोपेडिक्स = 100 घण्टे</p> <p>ऑपथेल्मोलॉजी = 100 घण्टे</p> <p>ईएनटी = 70 घण्टे</p> <p>रेडियोलॉजी = 24 घण्टे</p> <p>डेंटिस्ट्री** = 10 घण्टे</p> <p>ऑब्स्टेट्रिक्स एण्ड गाइनी = 300 घण्टे</p> <p>योग = 1456 घण्टे</p>	<p>12*0 आयु0 शल्य चिकि. स्ना. के विभिन्न पाठ्यक्रमों हेतु न्यूनतम शिक्षण-घंटे</p> <p>12*1 एमबीबीएस के विभिन्न पाठ्यक्रमों में न्यूनतम शिक्षण घण्टे भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा. चि. परि.) के प्रतिमानकों के अनुसार लागू होगा।</p>

<p>*समन्वय मेडिसिन विभाग को करना होगा ।</p> <p>**समन्वय शल्यचिकित्सा विभाग को करना होगा ।</p> <p>पुनः प्रवेश ।</p> <p>वह विद्यार्थी जो प्रथम और द्वितीय एमबीबीएस परीक्षा की पूरक परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होता, वह विश्वविद्यालय परीक्षा के परिणाम की स्थानीय प्रैस में घोषणा के 15 दिनों के अंदर महाविद्यालय के प्रधानाचार्य के स्वविवेक के आधार पर उसी कक्षा में पुनः प्रवेश के लिए पंजीकरण कर सकता है । प्रत्याशी को पंजीकरण शुल्क, विशेष विश्वविद्यालय शुल्क, आदि का भुगतान करने की आवश्यकता होगी और महाविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय को उसके पुनः प्रवेश की सूचना दी जाएगी ।</p>	
<p>13*0 परीक्षाएँ</p> <p>क कुल मिलाकर चार विश्वविद्यालय परीक्षाएँ या व्यावसायिक परीक्षाएँ होंगी, जिनकी समयतालिका प्रत्येक वर्ष शैक्षिक कैलेंडर में अधिसूचित की जाएगी ।</p> <p>ख (i) किसी विद्यार्थी का प्रथम व्यावसायिक परीक्षाएँ उत्तीर्ण करने के लिए अधिकतम चार बार (वार्षिक और पूरक) बैठने की अनुमति दी जाएगी । यदि वह ऐसा नहीं कर सकता/सकती, तो उसका नाम विश्वविद्यालय की पंजिका में से हटा दिया जाएगा । एक प्रत्याशी द्वितीय व्यावसायिक में केवल तभी बैठ सकता है यदि उसने 18 माह पहले आयोजित प्रथम व्यावसायिक परीक्षा उत्तीर्ण की है (अर्थात् 18 माह का प्रशिक्षण पूरा किया हो) ।</p> <p>(ii) यदि किसी विद्यार्थी को एक विषय की पूरक परीक्षा में बैठना है तो वह अगले व्यावसायिक की कक्षाओं में बैठना जारी रखते हुए पूरक परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर सकता है ।</p> <p>(iii) यदि उसे एक से अधिक विषयों की पूरक परीक्षा में बैठना है तो उसे अगले व्यावसायिक की कक्षाओं में बैठने की इजाजत तब तक नहीं होगी, जब तक कि वह पूरक परीक्षाएँ उत्तीर्ण नहीं कर लेता । यदि वह पूरक परीक्षा उत्तीर्ण करने में असफल रहता है तो उसे 'अनुत्तीर्ण' घोषित किया जाएगा और उसे वर्ष भर वही पाठ्यक्रम दोबारा पढ़ना होगा ।</p> <p>(iv) उपरोक्त स्थिति में वह उपस्थिति के कारणों से अगले व्यावसायिक की पूरक परीक्षा में बैठने का पात्र होगा ।</p> <p>(v) यदि बीमारी के कारण विद्यार्थी एक परीक्षा / व्यावसायिक में बैठने में अक्षम है तो चिकित्सा विभाग विद्यालय के संकाय अध्यक्ष के अनुमोदन से उसे पांचवां अवसर दिया जा सकता है ।</p> <p>(vi) सभी व्यावसायिकों पर किसी एक व्यावसायिक को उत्तीर्ण करने के लिए अधिकतम चार अवसर की शर्त लागू होगी ।</p> <p>ग किसी भी प्रत्याशी के लिए अनिवार्य है कि वह तृतीय व्यावसायिक परीक्षा भाग-1 में बैठने की अनुमति पाने के लिए द्वितीय व्यावसायिक परीक्षा उत्तीर्ण करे । जबकि प्री फाइनल और फाइनल टर्म में प्रवेश के लिए तृतीय व्यावसायिक को उत्तीर्ण करना अनिवार्य नहीं है । जबकि, प्रत्याशी को भाग-II ख परीक्षाओं में बैठने की अनुमति देने के लिए भाग-I 'क' पूरक परीक्षा को उत्तीर्ण करना होता है ।</p>	<p>13*0 परीक्षाएँ</p> <p>13*1 विश्वविद्यालय द्वारा संचालित मुख्य एवं पूरक परीक्षाएँ भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा0चि0परि0) के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमों के अनुसार ही होंगी । तथापि, परीक्षाओं के संचालन सहित आन्तरिक मूल्यांकन, परीक्षा कार्यक्रम, अंक-वितरण, किसी विषय में उत्तीर्ण होने के मानदण्ड, परीक्षकों की नियुक्ति आदि से संबंधित अनुसरणीय कार्य रीतियों से सम्बन्धित वितरण विश्वविद्यालय द्वारा विनियमों के रूप में प्रथमतः अधिसूचित किये जाएंगे ।</p>
<p>14*0 परीक्षाओं की संख्या</p> <p>विश्वविद्यालय द्वारा किसी व्यावसायिक के लिए एक वर्ष में अधिक से अधिक दो व्यावसायिक परीक्षाएँ आयोजित की जाएंगी जिनके बीच कम से कम छः सप्ताह के अंतराल होगा अर्थात् इस दस्तावेज के खण्ड XIII के दिए गए ब्यौरे के अनुसार वार्षिक परीक्षा के उपरान्त लगभग छः सप्ताह की अवधि के पश्चात पूरक परीक्षाएँ आयोजित की जाएंगी ।</p>	<p>परीक्षाओं की संख्या</p> <p>उपरोल्लिखित 13*0 के दृष्टिगत खण्ड को हटा दिया गया है ।</p> <p>14*0 अनुचित साधनों का उपयोग</p> <p>14*1 परीक्षाओं में अनुचित साधनों के इस्तेमाल के जो भी मामले सामने आएंगे उन सभी को स्थायी अनुचित साधन समिति (यों) के सामने रखा जाएगा उन सभी मामलों में अलग-अलग फैसला देकर विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार उन्हें दण्ड देने की सिफारिश की जाएगी ।</p>

<p>15*0 अनुचित साधनों का उपयोग</p> <p>15*1 परीक्षाओं में अनुचित साधनों के इस्तेमाल के जो भी मामले सामने आएंगे उन सभी को स्थायी अनुचित साधन समिति (यो) के सामने रखा जाएगा उन सभी मामलों में अलग-अलग फैसला देकर विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार उन्हें दण्ड देने की सिफारिश की जाएगी ।</p>	<p>15*0 मूल्यांकन</p> <p>15*1 छात्रों का मूल्यांकन भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा0चि0परि0) के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमों के अनुसार ही होगा । तथापि, मूल्यांकन प्रक्रिया व कार्य विधि से सम्बन्धित अन्य विवरण विश्वविद्यालय द्वारा विनियमों के रूप में पृथकतः अधिसूचित किये जाएंगे ।</p> <p>विद्यमान अध्यादेश के खण्ड 16 से 20 तक, उपरोल्लिखित पैरा 15*1 के रेखांकित भाग के दृष्टिगत हटा दिया गया है</p>
<p>16*0 मूल्यांकन</p> <p>16*1 मूल्यांकन विद्यार्थियों के मूल्यांकन के दो घटक हैं क व्यावसायिक परीक्षा के मूल्यांकन के माध्यम से ख आंतरिक मूल्यांकन के माध्यम से सतत मूल्यांकन मूल्यांकन के विभिन्न घटकों के लिए वेटेज (भासंक) का वितरण निम्नानुसार होता है :</p> <p>सैद्धांतिक और मौखिक :</p> <p>व्यावसायिक परीक्षा 80 प्रतिशत आंतरिक मूल्यांकन 20 प्रतिशत</p> <p>प्रायोगिक/क्लिनिकल :</p> <p>व्यावसायिक परीक्षा 80 प्रतिशत आंतरिक मूल्यांकन 20 प्रतिशत</p> <p>मूल्यांकन प्रणाली</p> <p>एक व्यावसायिक के अंत में किसी विद्यार्थी का मूल्यांकन निम्नानुसार किया जाएगा:</p> <p>क लिखित परीक्षा</p> <p>— विवरणात्मक (छोटे प्रश्न)</p> <p>— बहुविकल्प वाले प्रश्न (20 प्रतिशत)</p> <p>अधिकांश प्रश्नों का एक व्यवहारिक (प्रायोगिक) पक्ष होगा ।</p> <p>ख मौखिक</p> <p>ग प्रायोगिक परीक्षा</p> <p>प्रायोगिक परीक्षा में परीक्षक को वस्तुनिष्ठ रूप में तैयार की गई प्रायोगिक परीक्षा (ओएसपीई) और वस्तुनिष्ठ रूप में तैयार की गई क्लिनिकल परीक्षा (ओएससीई) की एक प्रणाली अपनानी चाहिए ।</p> <p>ओएसपीई और ओएससीई परीक्षा की तैयार की गई विधियां हैं, जो परीक्षक को इस प्रकार सक्षम बनाती हैं कि वह सीखने तथा प्रशिक्षण के सभी पक्षों का अलग-अलग आकलन कर सके । इस विधि से विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या को वस्तुनिष्ठ और विश्वसनीय ढंग से परखा जा सकता है । हालांकि, इस प्रणाली में अधिक प्रयास, समय और टीम वर्क की आवश्यकता होती है । ओएससीई में क्लिनिकल परीक्षा और प्रायोगिक क्रिया विधियों में पारस्परिक कौशलों को भी परखा जाता है । इस विधि से परीक्षाएं लेने के लिए कनिष्ठ परीक्षाएं लेने के लिए कनिष्ठ परीक्षकों की बड़ी संख्या को भी इस प्रक्रिया में शामिल करने के एक संभावना बनी रहती है । ओएससीई और ओएसपीई की मांग परीक्षकों और रोगियों द्वारा अधिक की जाती है ।</p> <p>ओएसपीई और ओएससीई को शामिल करने के इरादे से प्रत्येक व्यावसायिक परीक्षा आयोजित करने के लिए न्यूनतम चार आंतरिक और चार बाह्य परीक्षकों को नियुक्त करने का निर्णय लिया गया है । आंतरिक परीक्षकों में कम से कम एक प्रोफेसर होगा। अन्य परीक्षकों में कनिष्ठ संकाय सदस्यों को शामिल किया जा सकता है ।</p>	<p>16*0 परीक्षा शुल्क</p> <p>कुल सचिव कुलपति द्वारा अनुमोदित किए जाने के पश्चात विभिन्न परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों द्वारा संदेय शुल्क अधिसूचित करेंगे। परीक्षाएं आरंभ होने से पूर्व निर्धारित शुल्क अदा न करने वाला विद्यार्थी सामान्यतः परीक्षा में बैठने के लिए अर्हक नहीं होगा । वास्तविक कठिनाई के कतिपय मामलों में कुलपति अपने विवेक पर शुल्क के भुगतान की अंतिम तिथि बढ़ाने की अनुमति दे सकते हैं । तथापि, सभी देयताओं का समाशोधन न किए जाने तक ऐसे विद्यार्थियों के परिणाम घोषित नहीं किए जाएंगे ।</p>

<p>पूरक परीक्षा के लिए परीक्षकों की संख्या परीक्षा की संख्या परीक्षा में बैठने वाले विद्यार्थियों की संख्या के अनुपात में होगी । पचास से कम विद्यार्थियों के लिए कम से कम दो बाह्य और दो आंतरिक परीक्षक होने चाहिए ।</p>	
<p>17-0 व्यावसायिक परीक्षाओं का आयोजन</p> <p>क सभी व्यावसायिक परीक्षाएं गुरु गोबिन्द सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय परीक्षा के नियंत्रक, द्वारा आयोजित की जाएंगी ।</p> <p>ख परीक्षा की समय तालिका परीक्षा नियंत्रक द्वारा व्यावसायिक परीक्षा शुरू होने के प्रथम दिन से कम से कम 30 दिन पहले अधिस्तूत की जाएगी ।</p> <p>ग सैद्धांतिक के साथ प्रायोगिक परीक्षाओं के लिए सभी परीक्षकों की नियुक्ति कुलपति के अनुमोदन से परीक्षा नियंत्रक द्वारा अथवा परीक्षा नियंत्रक द्वारा उस स्थिति में की जाएगी, जब कुलपति स्व विवेक के आधार पर उन्हें यह प्राधिकार प्रत्यायोजित करें ।</p> <p>परीक्षकों के नामों की सिफारिश सम्बंधित कार्यक्रम समन्वय समिति द्वारा अपने-अपने अध्यक्षों के माध्यम से की जाएगी । जब कोई आपातकालीन स्थिति हो और कार्यक्रम समन्वय समिति की बैठक नहीं हो सकती तो कार्यक्रम समन्वय समिति के अध्यक्ष यह स्पष्ट रूप से बताते हुए नामों की सिफारिश कर सकते हैं कि कार्यक्रम समन्वय समिति की बैठक क्यों नहीं हो सकी ।</p> <p>आपातकालीन परिस्थितियों में, जहां ऊपर बताए किन्ही कारणों से कार्यक्रम समन्वय समिति से नामों की सिफारिश प्राप्त नहीं की जा सकती हो वहां चिकित्सा विज्ञान विद्यालय के संकाय, अध्यक्ष से ये सिफारिशें प्राप्त की जा सकती हैं ।</p> <p>घ प्रत्येक पाठ्यक्रम की परीक्षा के लिए, परीक्षा नियंत्रक द्वारा विनिर्दिष्ट तिथि के पहले संबंधित संस्थान के निदेशक/प्रधानाचार्य अथवा कार्यक्रम समन्वय समिति के अध्यक्ष, संबंधित शिक्षकों द्वारा बनाए गए मॉडल प्रश्नपत्रों का एक सेट परीक्षा नियंत्रकों के पास भेजेंगे । प्रश्नपत्र बनाने के लिए परीक्षा नियंत्रक द्वारा नियुक्त परीक्षक इस मॉडल प्रश्नपत्र का एक मार्गदर्शक के रूप में उपयोग करते हुए प्रश्न पत्र तैयार करेंगे । प्रश्नपत्र एक पाठ्यक्रम की सम्पूर्ण पाठ्यचर्या में से तैयार किया जाएगा । वरिष्ठतम आंतरिक परीक्षक इस मण्डल का अध्यक्ष होगा ।</p> <p>प्रश्नपत्र तैयार करने के लिए प्रतिनियुक्त आंतरिक परीक्षक इसे चिकित्सा विज्ञान के संकाय अध्यक्ष के माध्यम से अग्रेषित करेंगे । संकाय अध्यक्ष इसे परीक्षा नियंत्रक के पास अग्रेषित करेंगे । परीक्षा नियंत्रक द्वारा चुने गए बाह्य परीक्षक के पास यह प्रश्नपत्र मॉडरेशन के लिए भेजा जाएगा । मॉडरेशन के बाद बाह्य परीक्षक इसे मुद्रण के लिए परीक्षा नियंत्रक के पास भेजेंगे ।</p> <p>विश्वविद्यालय को यह अधिकार होगा कि वह शिक्षक के सतत मूल्यांकन के सभी अभिलेख और यदि किसी विशिष्ट मामले (लों) में उपयुक्त पाए जाने पर शिक्षक के मूल्यांकन के मॉडरेट को मंगा लें ।</p> <p>प्रायोगिक परीक्षाएं परीक्षक मण्डल द्वारा आयोजित की जाएंगी । मण्डल में छः से आठ परीक्षक होंगे । किसी एक परीक्षक को मुख्य परीक्षक बनाया जाएगा । वरिष्ठतम आंतरिक परीक्षक मुख्य परीक्षक होगा । परीक्षाएं आयोजित करने के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत मुख्य परीक्षक द्वारा</p>	<p>17-0 व्यावसायिक परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु पात्रता</p> <p>17-1 व्यावसायिक परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु पात्रता भारतीय चिकित्सा परिषद् (माओचिओपरिओ) के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमों के अनुरूप ही होगी ।</p>

<p>बनाए जाएंगे, जिसे बाद में मूल्यांकन की एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न परीक्षा बोर्डों द्वारा अपनाया जाएगा।</p>	
<p>18-0 परीक्षकों की नियुक्ति के मार्गदर्शी सिद्धांत</p> <p>क परीक्षकों की योग्यता और अनुभव</p> <p>(i) किसी विषय के लिए नियुक्त किए जाने वाले परीक्षक को विश्वविद्यालय द्वारा बनाए गए नियमों के अनुसार शिक्षक की मान्यता हेतु एक न्यूनतम आवश्यकता पूरी करनी चाहिए।</p> <p>(ii) एमबीबीएस की परीक्षा के लिए प्रत्येक विषय में कम से कम आठ परीक्षक होने चाहिए, जिनमें से 50 प्रतिशत परीक्षक बाह्य परीक्षक होने चाहिए। इस प्रकार नियुक्त एक परीक्षक को इस धारा में मानदण्ड पूरे करने चाहिए, अर्थात् वह किसी अन्य विश्वविद्यालय से होना चाहिए।</p> <p>(iii) यदि तीन बाह्य परीक्षक उपलब्ध नहीं हैं तो परीक्षा का आयोजन दो बाह्य परीक्षकों के साथ किया जा सकता है।</p> <p>(iv) एक बाह्य परीक्षक को लगातार अधिकतम दो वर्षों तक नियुक्त किया जा सकता है। उसके बाद दो वर्ष के अंतराल के बाद ही उसे पुनः नियुक्त किया जा सकता है।</p> <p>(v) लिखित परीक्षा प्रश्नपत्र बनाने वाले परीक्षक (बाह्य और आंतरिक) क्लिनिकल/प्रायोगिक परीक्षाएं भी आयोजित करेंगे।</p> <p>ख एमबीबीएस पाठ्यक्रमों के लिए आंतरिक परीक्षकों की नियुक्ति</p> <p>(i) प्रत्येक शिक्षक जो एक परीक्षक बनने की योग्यता रखता है, उसे अपने विभागीय संस्थान प्रमुख के माध्यम से अध्ययन मण्डल के अध्यक्ष को लिखित रूप से सूचना देनी चाहिए।</p> <p>(ii) परीक्षकों के नाम समिति द्वारा परीक्षा आरम्भ होने के कम से कम 3 माह पूर्व सूचित किए जाने चाहिए।</p> <p>(iii) संस्थान से चार आंतरिक परीक्षकों को लिया जाएगा।</p> <p>(iv) आंतरिक परीक्षक शिक्षण संकाय में से होने चाहिए, परन्तु इनमें एक प्रोफेसर शामिल होना चाहिए।</p> <p>(v) अनुभव के आधार पर चिकित्सा विज्ञान स्कूल द्वारा परीक्षकों के नामों की एक सूची तैयार की जाएगी।</p> <p>(vi) मद (v) में बताई गई श्रेणी से यदि आंतरिक परीक्षक उपलब्ध नहीं है तब अन्य श्रेणी से परीक्षक लिए जा सकते हैं।</p> <p>(vii) अवैतनिक/सेवामुक्त/अतिथि प्रोफेसर या अंशकालिक/तदर्थ शिक्षकों को आंतरिक परीक्षक के रूप में नियुक्त नहीं किया जा सकता है।</p> <p>(viii) एक आंतरिक परीक्षक केवल एक वर्ष के लिए नियुक्त किया जाता है।</p> <p>(ix) सेवानिवृत्ति, स्थानान्तरण के मामले में विश्वविद्यालय द्वारा उस व्यक्ति को परीक्षा आयोजन की अनुमति दी जा सकती है, यदि सेवानिवृत्ति/स्थानान्तरण तीन माह से कम है।</p>	<p>18-0 उत्तर पुस्तिकाओं की पुनः जाँच</p> <p>18-1 परीक्षा-परिणाम घोषित हो जाने के दो सप्ताह के अन्दर कोई भी छात्र परीक्षा उत्तर-पुस्तिकाओं की पुनः जाँच के लिये निर्धारित शुल्क का भुगतान करते हुए आवेदन कर सकता है। पुनः जाँच से अभिप्रेत होगा यह सत्यापित कराना कि क्या सभी प्रश्न और उनके भागों को प्रश्नपत्र के ही अनुसार अंक प्रदान किए गए हैं तथा सभी अंकों के जोड़ को भी पुनः जाँचा जाएगा। विसंगति पाए जाने की स्थिति में उसको समुचित बदलाव करते हुए सम्बन्धित व्यावसायिक परीक्षा के परिणाम-पत्रक एवं अंकतालिका में परिशोधित कर दिया जायेगा।</p>
<p>19-0 कार्यक्रम में विभिन्न व्यावसायिक परीक्षा का फॉर्मेट और अंकों का वितरण</p> <p>प्रथम व्यावसायिक परीक्षा: (प्री-क्लिनिकल पाठ्यक्रम):</p> <p>पाठ्यक्रमों में एनाटॉमी, फिजियोलॉजी और बायोकेमिस्ट्री शामिल है:</p> <p>क एनाटॉमी</p> <p>सैद्धांतिकी : 50-50 अंक वाले 2 प्रश्नपत्र</p>	<p>19-0 पूरक परीक्षा</p> <p>19-1 पाठ्यक्रम हेतु निर्धारित अधिकतम अंकों में से 50 प्रतिशत से भी कम अंक प्राप्त करने और पाठ्यक्रम में अनुत्तीर्ण हो जाने वाले छात्र को भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा0चि0परि0) के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमों के अनुसार पूरक परीक्षा में पुनः सम्मिलित होने की अनुमति दी जाएगी। तथापि इस प्रकार के छात्र द्वारा शिक्षकों के सतत</p>

(प्रत्येक प्रश्नपत्र में 10 अंकों का एक व्यावहारिक प्रश्न) = 100 अंक

मौखिक (वायवा) = 20 अंक

प्रायोगिक = 40 अंक

आंतरिक मूल्यांकन = 40 अंक

(सैद्धांतिक = 20 और प्रायोगिक = 20)

कुल = 200 अंक

ख फिजियोलॉजी

सैद्धांतिक : 50-50 अंक वाले 2 प्रश्नपत्र

(प्रत्येक प्रश्नपत्र में 10 अंकों का एक व्यावहारिक प्रश्न) = 100 अंक

मौखिक (वायवा) = 20 अंक

प्रायोगिक = 40 अंक

आंतरिक मूल्यांकन = 40 अंक

(सैद्धांतिक = 20 और प्रायोगिक = 20)

कुल = 200 अंक

ग बायोकेमिस्ट्री

सैद्धांतिक : 50-50 अंक वाले 2 प्रश्नपत्र

(प्रत्येक प्रश्नपत्र में 10 अंकों का एक व्यावहारिक प्रश्न) = 100 अंक

मौखिक (वायवा) = 20 अंक

प्रायोगिक = 40 अंक

आंतरिक मूल्यांकन = 40 अंक

(सैद्धांतिक = 20 और प्रायोगिक = 20)

कुल = 200 अंक

टिप्पणी : एक प्रत्याशी को उत्तीर्ण घोषित होने के लिए उसे मौखिक सहित सैद्धांतिक परीक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत और प्रायोगिक परीक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत सहित कुल मिलाकर 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने चाहिए।

2 द्वितीय व्यावसायिक परीक्षा : (पैरा-क्लिनिकल पाठ्यक्रम):

क पैथोलॉजी

सैद्धांतिक : 50-50 अंक वाले 2 प्रश्नपत्र

(प्रत्येक प्रश्नपत्र में 10 अंकों का एक व्यावहारिक प्रश्न) = 100 अंक

मौखिक (वायवा) = 20 अंक

प्रायोगिक = 40 अंक

आंतरिक मूल्यांकन = 40 अंक

(सैद्धांतिक = 20 और प्रायोगिक = 20) कुल = 200 अंक

ख माइक्रोबायोलॉजी

सैद्धांतिक : 50 अंक वाले 2 प्रश्नपत्र

(प्रत्येक प्रश्नपत्र में 10 अंकों का एक व्यावहारिक प्रश्न)

= 100 अंक

मौखिक (वायवा) = 20 अंक

प्रायोगिक = 40 अंक

मूल्यांकन घटक से प्राप्त अंक अपरिवर्तनीय ही रहेंगे।

19*2 अपेक्षित न्यूनतम उपस्थिति आधार पर पाठ्यक्रम में भाग लेने वाला छात्र यदि व्यावसायिक परीक्षा में सम्मिलित नहीं हो पाता है तो उसे सम्बन्धित पाठ्यक्रम की पूरक/अनुवर्ती परीक्षा की उत्तरवर्ती बारी, जब भी प्रस्तावित होगी, में सम्मिलित होने के लिये अनुमत कर दिया जाएगा। उसे कक्षाओं में पुनः सम्मिलित होने की आवश्यकता नहीं होगी और शिक्षक के सतत मूल्यांकन से छात्र द्वारा प्राप्त अंक अपरिवर्तनीय बने रहेंगे। तथापि, छात्र को सम्बन्धित पाठ्यक्रम की व्यावसायिक परीक्षा में कम से कम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने अपेक्षित होंगे।

19*3 जिस छात्र को उपस्थिति की न्यूनता के कारण परीक्षा में प्रविष्टि नहीं मिल पायी होगी उसे पाठ्यक्रम दोहराना अपेक्षित होगा और उसे शैक्षिक व्याख्यानों, शिक्षकीय अनुवर्गों, प्रायोगिक कक्षाओं अथवा यथा निर्धारित पाठ्यक्रम के अन्य घटकों में भाग लेना होगा। ऐसे मामलों में शिक्षकों द्वारा सतत मूल्यांकन को पाठ्यक्रम की पुनरावृत्ति के समय ध्यान में रखना होगा।

संस्थान यदि चाहें तो अपने विवेकानुसार, पाठ्यक्रम की परीक्षा दोहराने वाले छात्रों हेतु अतिरिक्त शिक्षण-प्रबन्ध कर सकते हैं। ऐसे अनुदेशों की कार्य प्रणाली संस्थान द्वारा अधिसूचनानुसार होगी।

19*4 जिस छात्र को व्यावसायिक परीक्षा में पुनः सम्मिलित होना होगा/दोहराना होगा तो कार्यक्रम के अनुसरण हेतु उसके प्रवेश के समय लागू पाठ्यचर्या और शिक्षण एवं प्रशिक्षण की योजना के अनुसार उसकी परीक्षा ली जाएगी। तथापि, जहाँ पाठ्यक्रम की पाठ्यचर्या में कुछ हल्के-फुल्के संशोधन किए गए होंगे, वहाँ स्कूल के संकायाध्यापक/अकादमिक कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष द्वारा प्रमाणित संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार परीक्षा आयोजित की जाएगी।

ऐसे छात्र, जो परीक्षा में पुनः सम्मिलित होने के पात्र हैं, उन्हें परीक्षा में पुनः सम्मिलित होने के लिये अनुमत किए जाने हेतु परीक्षा नियन्त्रक को आवेदन करना होगा और विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित प्रचालन रीतियों के अनुसार निर्धारित शुल्क का भुगतान करना होगा।

19*5 शिक्षण, परीक्षा एवं पाठ्य विवरण योजना में निर्धारित न्यूनतम अंक प्राप्त करने वाले किसी भी छात्र को व्यावसायिक परीक्षा में उत्तीर्ण घोषित कर दिया जाएगा एवं भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा0चि0परि0) के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमों के अनुसार तृतीय व्यावसायिक एवं क्रमावर्ती प्रशिक्षुता पूर्ण करने के पश्चात् ही वह उपाधि प्राप्ति हेतु पात्रताधारी हो जाएगा।

<p>आंतरिक मूल्यांकन = 40 अंक (सैद्धांतिक = 20 और प्रायोगिक = 20) कुल = 200 अंक</p> <p>ग फार्माकोलॉजी सैद्धांतिक : 50-50 अंक वाले 2 प्रश्नपत्र (प्रत्येक प्रश्नपत्र में 10 अंकों का एक व्यावहारिक प्रश्न) = 100 अंक मौखिक (वायवा) = 20 अंक प्रायोगिक = 40 अंक आंतरिक मूल्यांकन = 40 अंक (सैद्धांतिक = 20 और प्रायोगिक = 20) कुल सैद्धांतिक : 50-50 अंक वाले 2 प्रश्नपत्र (प्रत्येक प्रश्नपत्र में 10 अंकों का एक व्यावहारिक प्रश्न) = 100 अंक मौखिक (वायवा) = 20 अंक प्रायोगिक = 40 अंक आंतरिक मूल्यांकन = 40 अंक (सैद्धांतिक = 20 और प्रायोगिक = 20) कुल = 200 अंक</p> <p>घ फॉरेंसिक मेडिसिन सैद्धांतिक : 40 अंक प्रत्येक वाले 1 प्रश्नपत्र = 40 अंक मौखिक (वायवा) = 10 अंक प्रायोगिक = 30 अंक आंतरिक मूल्यांकन = 20 अंक (सैद्धांतिक = 10 और प्रायोगिक = 10) कुल = 100 अंक</p> <p>टिप्पणी : किसी प्रत्याशी को उत्तीर्ण घोषित करने के लिए उसे मौखिक सहित सैद्धांतिक परीक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत और प्रायोगिक परीक्षा में न्यूनतम समेकित रूप से 50 प्रतिशत सहित कुल मिलाकर 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने चाहिए ।</p> <p>3 तृतीय व्यावसायिक परीक्षा : (क्लिनिकल पाठ्यक्रम) : एमबीबीएस पाठ्यक्रम तृतीय व्यावसायिक (भाग-1) में ऑपथेलमोलॉजी, ओटो-रिनो-लेरिजोलॉजी और कम्युनिटी मेडिसिन शामिल है । क ऑपथेलमोलॉजी सैद्धांतिक : 1 प्रश्नपत्र (इनमें 10 अंकों का एक प्रश्न = 40 अंक प्री-क्लिनिकल और पैरा क्लिनिकल पर होना चाहिए) मौखिक (वायवा) = 10 अंक</p>	
--	--

<p>प्रायोगिक = 30 अंक</p> <p>आंतरिक मूल्यांकन = 20 अंक</p> <p>(सैद्धांतिक = 10 और प्रायोगिक = 10)</p> <p>कुल = 100 अंक</p> <p>ख ओटो-रिनो-लेरिजोलॉजी</p> <p>सैद्धांतिक : 1 प्रश्नपत्र</p> <p>(इनमें प्री-क्लिनिकल और पैरा क्लिनिकल</p> <p>पर 10 अंकों का एक प्रश्न पत्र होना चाहिए)</p> <p>= 40 अंक</p> <p>मौखिक (वायवा) = 10 अंक</p> <p>प्रायोगिक = 30 अंक</p> <p>आंतरिक मूल्यांकन = 20 अंक</p> <p>(सैद्धांतिक = 10 और प्रायोगिक = 10)</p> <p>कुल = 100 अंक</p> <p>ग कम्युनिटी मेडिसिन</p> <p>सैद्धांतिक : प्रत्येक 60 अंक के 2 प्रश्नपत्र (जिसमें समस्या सुलझाने, अनिवार्य दवाओं, व्यवसाय (कृषि आधारित) रोग, पुनर्वास और समुदाय के सामाजिक पक्षों सहित प्राथमिक स्तर पर प्रबंध के व्यवहारिक पक्ष)</p> <p>= 120 अंक</p> <p>मौखिक (वायवा) = 10 अंक</p> <p>प्रायोगिक/परियोजना (प्रोजेक्ट) मूल्यांकन = 30 अंक</p> <p>आंतरिक मूल्यांकन = 40 अंक</p> <p>(सैद्धांतिक = 20 और प्रायोगिक = 20)</p> <p>कुल = 200 अंक</p> <p>टिप्पणी :</p> <p>किंसी प्रत्याशी को उत्तीर्ण घोषित करने के लिए उसे मौखिक सहित सैद्धांतिक परीक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत और प्रायोगिक परीक्षा में न्यूनतम समेकित रूप में 50 प्रतिशत सहित कुल मिलाकर 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने चाहिए ।</p> <p>4 तृतीय व्यावसायिक परीक्षा :</p> <p>एमबीबीएस के तृतीय व्यावसायिक (भाग 11) में मेडिसिन, सर्जरी, ऑब्स्टेट्रिक्स और गायनेकोलॉजी तथा पीडियाट्रिक्स शामिल है ।</p> <p>प्रत्येक प्रश्नपत्र में दो खण्ड होंगे, निबंधात्मक उत्तर वाले प्रश्नों को नहीं लिया जाए ।</p> <p>क मेडिसिन</p> <p>सैद्धांतिक : 60 अंक प्रत्येक वाले 2 प्रश्न</p> <p>= 120 अंक</p> <p>प्रश्नपत्र-I सामान्य मेडिसिन</p> <p>प्रश्नपत्र-II सामान्य मेडिसिन</p> <p>(इसमें साइकियाट्री, डर्मटोलॉजी और एसटीडी शामिल हैं)</p> <p>(इनमें मूलभूत विज्ञान और संबंधित विषयों पर एक प्रश्न निहित होगा)</p>	
--	--

<p>एक्स-रे, ईसीजी आदि की मौखिक</p> <p>मौखिक (वायवा) = 20 अंक</p> <p>क्लिनिकल (शैय्या संबंधित) = 100 अंक</p> <p>आंतरिक मूल्यांकन = 60 अंक</p> <p>(सैद्धांतिक = 30 और प्रायोगिक = 30)</p> <p>कुल = 300 अंक</p> <p>ख सर्जरी</p> <p>सैद्धांतिक : प्रत्येक 60 अंकों के 2 प्रश्नपत्र</p> <p>= 120 अंक</p> <p>प्रश्नपत्र-I सामान्य मेडिसिन (भाग 1)</p> <p>प्रश्नपत्र-II सामान्य मेडिसिन (भाग 2)</p> <p>(एनेस्थेसियोलॉजी, दांत के रोग और विकिरण विज्ञान सहित)</p> <p>(मूलभूत विज्ञान और संबंधित विषयों पर एक प्रश्न निहित होगा)</p> <p>जांच-पड़ताल की मौखिक (वायवा)</p> <p>= 20 अंक</p> <p>क्लिनिकल (शैय्यापर) = 100 अंक</p> <p>आंतरिक मूल्यांकन = 60 अंक</p> <p>(सैद्धांतिक = 30 और प्रायोगिक = 30)</p> <p>कुल = 300 अंक</p> <p>सर्जरी के प्रश्नपत्र-I में एक खण्ड आर्थोपीडिक्स पर होगा ।</p> <p>आर्थोपीडिक सर्जरी पर प्रश्न बनाने और इसके मूल्यांकन का कार्य उन परीक्षकों द्वारा किया जाएगा जो आर्थोपीडिक सर्जरी में शिक्षक हैं ।</p> <p>ग ऑब्स्टेट्रिक्स और गायनेकोलॉजी :</p> <p>सैद्धांतिक : प्रत्येक 60 अंकों के दो प्रश्न पत्र 80 घण्टे</p> <p>प्रश्नपत्र-I सोशल ऑब्स्टेट्रिक्स सहित ऑब्स्टेट्रिक्स</p> <p>प्रश्नपत्र-II गायनेकोलॉजी, फेमिली वेलफेयर और डेमोग्राफी</p> <p>(मूलभूत विज्ञान और संबंधित विषयों पर एक प्रश्न निहित होगा)</p> <p>प्रसव मामलों के रिकॉर्ड सहित मौखिक (वायवा)</p> <p>(20+10) = 30 अंक</p> <p>क्लिनिकल = 50 अंक</p> <p>आंतरिक मूल्यांकन = 40 अंक</p> <p>(सैद्धांतिक = 20 और प्रायोगिक = 20)</p> <p>कुल = 200 अंक</p> <p>घ पीडियाट्रिक्स (नियोनेटोलॉजी सहित)</p> <p>सैद्धांतिक : (इनमें मूलभूत विज्ञान और संबंधित विषयों पर एक प्रश्न निहित होगा)</p> <p>= 40 घण्टे</p> <p>मौखिक (वायवा) = 10 अंक</p> <p>क्लिनिकल = 30 अंक</p> <p>आंतरिक मूल्यांकन = 20 अंक</p> <p>(सैद्धांतिक = 10 और प्रायोगिक = 10)</p>	
---	--

<p>कुल = 100 अंक</p> <p>टिप्पणी :</p> <p>किसी प्रत्याशी को उत्तीर्ण घोषित करने के लिए उसे मौखिक सहित सैद्धांतिक परीक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत और प्रायोगिक परीक्षा में न्यूनतम समेकित रूप से 50 प्रतिशत सहित कुल मिलाकर 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने चाहिए ।</p>	
<p>20*0 आंतरिक मूल्यांकन</p> <p>क पूरे पाठ्यक्रम के दौरान आयोजित आवधिक परीक्षाएं (प्रिडर्म/मिडटर्म/सेंटअप)</p> <p>ख आंतरिक मूल्यांकन में विश्वविद्यालय/व्यावसायिक परीक्षा में एक विषय में कुल अंकों के 20 प्रतिशत अंक होंगे ।</p> <p>ग व्यावसायिक परीक्षा में बैठने की पात्रता पाने के लिए किसी विद्यार्थी को सैद्धांतिक और प्रायोगिक परीक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने चाहिए ।</p>	<p>20*0 विशेष योग्यता</p> <p>20*1 यदि कोई विद्यार्थी उपरोक्त वर्णितानुसार 50 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करता है तो उसे उत्तीर्ण माना जाता है और एम बी बी एस उपाधि प्राप्त करने के लिये अन्तिम परीक्षा में अर्हता प्राप्त करने/उत्तीर्ण करने के मापदण्ड के मानक के रूप में किसी भी श्रेणी को उद्धृत करने का कोई भी प्रावधान नहीं है । तथापि, किसी पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों में 75 प्रतिशत अंक हासिल करने पर छात्र को उस पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों में विशेष योग्यता के साथ उत्तीर्ण माना जाता है ।</p> <p>इस खण्ड को, खण्ड 21*0 के दृष्टिगत हटा दिया गया है ।</p>
<p>21*0 परीक्षा शुल्क</p> <p>कुल सचिव कुलपति द्वारा अनुमोदित किए जाने के पश्चात् विभिन्न परीक्षाओं के लिए विद्यार्थियों द्वारा संदेय शुल्क अधिसूचित करेगा । परीक्षाएं आरंभ होने से पूर्व निर्धारित शुल्क अदा न करने वाला विद्यार्थी सामान्यतः परीक्षा में बैठने के लिए अर्हक नहीं होगा । वास्तविक कठिनाई के कतिपय मामलों में कुलपति अपने विवेक पर शुल्क के भुगतान की अंतिम तिथि बढ़ाने की अनुमति दे सकता है । तथापि, सभी देयताओं का समाशोधन न किए जाने तक ऐसे विद्यार्थियों के परिणाम घोषित नहीं किए जाएंगे ।</p>	<p>21*0 उपाधि प्रदान होना</p> <p>21*1 किसी भी छात्र को उपाधि प्रदान की जायेगी, बशर्तः</p> <p>(क) उसने, भारतीय चिकित्सा परिषद् (भा0चि0परि0) के स्नातक चिकित्सा शिक्षा विनियमों के अनुरूप सभी तीनों व्यावसायिक परीक्षाएँ सफलतापूर्वक उत्तीर्ण कर ली होंगी और एक वर्षीय अनिवार्य आवर्ती प्रशिक्षुता पूर्ण कर ली होगी ।</p> <p>(ख) विश्वविद्यालय/सम्बद्ध संस्थान का उसके/उसकी ओर कोई भी भुगतान शेष नहीं है</p> <p>(ग) उसके विरुद्ध कोई भी अनुशासनिक कार्यवाही लंबित नहीं है ।</p>
<p>22*0 उत्तीर्ण होने के मापदण्ड, अंक और विशेष योग्यता</p> <p>क (i) व्यावसायिक परीक्षा (सैद्धांतिक और प्रायोगिक में अलग-अलग) और शिक्षक द्वारा किए गए सतत मूल्यांकन (आंतरिक मूल्यांकन) में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक पाना पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण करने के लए अनिवार्य होगा । एक पाठ्यक्रम में 50 प्रतिशत अंक से कम अंक पाने वाले छात्र को उस पाठ्यक्रम में अनुत्तीर्ण माना जाएगा ।</p>	<p>22*0 अधिनियम, सविधियों एवं अध्यादेशों के प्रावधानों के अन्तर्गत, ऐसे प्रशासनिक मुद्दे जैसे परीक्षा में अनियमित आचरण, अन्य अनाचार, परीक्षा पत्रकों के जमा करने की तिथि, जाली उपाधियों के मामले, परीक्षकों, अधीक्षकों, निरीक्षकों हेतु अनुदेश, उनके पारिश्रमिक एवं परीक्षाओं के संचालन से जुड़ा अन्य कोई और मामला अकादमिक परिषद् द्वारा, इस हेतु स्वीकृत मार्गदर्शी सिद्धान्त, के अनुसार सुलझाया जायेगा ।</p>
<p>(ii) परिणाम घोषित होने की तिथि से दो सप्ताह के अंदर कोई भी विद्यार्थी निर्धारित शुल्क देकर परीक्षा के प्रश्नपत्र(त्रों) की पुनः जांच करा सकता है । पुनः जांच का अर्थ होगा इसका सत्यापन करना कि क्या सभी प्रश्न और उनके भागों में प्रश्नपत्र के अनुसार विधिवत् अंक दिए गए हैं और क्या अंकों का योग ठीक है । यदि कोई विसंगति पाई जाती है तो इसे संबंधित व्यावसायिक परीक्षा के परिणाम और अंक सूची में उचित परिवर्तन कर इसका सुधार किया जाएगा ।</p>	

ख (i) एक पाठ्यक्रम को दिए गए अधिकतम अंकों में से 50 प्रतिशत से कम अंक पाने और पाठ्यक्रम में अनुत्तीर्ण होने पर विद्यार्थी को पूरक परीक्षा में पुनः बैठने दिया जाएगा। शिक्षक (को) द्वारा किए गए सतत मूल्यांकन घटक में प्राप्त अंक अपरिवर्तित रहेंगे। विद्यार्थी को पूरक परीक्षा और संबंधित विषय में शिक्षक के सतत मूल्यांकन में कुल मिलाकर 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने की आवश्यकता होगी।

(ii) वह विद्यार्थी जिसने पाठ्यक्रम में अध्ययन किया है और न्यूनतम उपस्थिति आवश्यकता की पूर्ति करता है, यदि वह व्यावसायिक परीक्षा में बैठने में सक्षम नहीं है तो आने वाली बारी में संबंधित पाठ्यक्रम को पूरक/अगली परीक्षा जब भी आयोजित होती है उसे इनमें बैठने की अनुमति दी जाएगी। उसे दोबारा कक्षा में बैठने की आवश्यकता नहीं होगी और शिक्षक के सतत मूल्यांकन घटक में विद्यार्थी द्वारा अर्जित अंक अपरिवर्तित रहेंगे। विद्यार्थी को संबंधित पाठ्यक्रम में व्यावसायिक परीक्षा और शिक्षक के सतत मूल्यांकन में 50 प्रतिशत कुल अंक पाने की आवश्यकता होगी।

(iii) वह विद्यार्थी जिसे उपस्थिति कम होने के कारण परीक्षा में नहीं बैठने दिया गया, उसे पाठ्यक्रम दोहराना होगा तथा उसे व्याख्यान, ट्यूटोरियल्स, प्रायोगिक कक्षाओं अथवा पाठ्यक्रम के कोई अन्य घटकों में भाग लेने की आवश्यकता होगी। ऐसे मामलों में पाठ्यक्रम को दोहराते समय शिक्षकों द्वारा किए गए सतत मूल्यांकन को ध्यान में रखा जाएगा।

एक पाठ्यक्रम की परीक्षा को दोहराने वाला विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त शिक्षण की व्यवस्था करना संस्थान के विवेक पर आधारित है। उपरोक्त अनुदेश के संचालन को संस्थान द्वारा अधिसूचित किया जाएगा।

(iv) व्यावसायिक पुनः दी जाने वाली परीक्षा में शामिल होने वाले विद्यार्थी की परीक्षा संबंधित कार्यक्रम में प्रवेश के समय लागू शिक्षण और परीक्षा तथा पाठ्यचर्या की योजना के अनुसार ली जाएगी। तथापि, ऐसे मामलों में जहां पाठ्यक्रम की पाठ्यचर्या में कुछ अल्प संशोधन किए गए हैं और स्कूल के संकाय अध्यक्ष/शैक्षणिक कार्यक्रम समिति के अध्यक्ष इसे प्रमाणित करते हैं तो परीक्षाएं संशोधित पाठ्यचर्या के अनुसार आयोजित की जाएगी।

परीक्षा में पुनः बैठने वाले पात्र विद्यार्थी को आवेदन करना होगा और उन्हें परीक्षा में पुनः बैठने तथा विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित शुल्क का भुगतान परीक्षा नियंत्रक को करना होगा।

v धारा 22 (क) और (ख) i, ii, और iii की प्रचालनात्मक रूपात्मकताओं को विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित किया जाएगा।

ग उस विद्यार्थी को व्यावसायिक में उत्तीर्ण घोषित किया जाएगा जिस शिक्षण और परीक्षा तथा पाठ्यचर्या की योजना में निर्धारित न्यूनतम अंक मिले हैं, और यह तृतीय व्यावसायिक और चक्रानुक्रम इंटरशिप पूरी होने के बाद डिग्री पाने का पात्र होगा।

एमबीबीएस पाठ्यक्रम के लिए कोई श्रेणी नहीं होगी।

जैसा कि ऊपर कहा गया है यदि कोई विद्यार्थी 50 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करता है तो उसे उत्तीर्ण माना जाता है। यदि कोई विद्यार्थी एक पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करता है तो माना जाता है कि उसने विशेष योग्यता सहित पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों को उत्तीर्ण किया है।

➤ 23*0 इंटरशिप

तृतीय व्यावसायिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए डिग्री हेतु प्रशिक्षण पा रहे प्रत्याशियों को अपने चिकित्सा महाविद्यालय में एक वर्ष का प्रमाणित प्रायोगिक प्रशिक्षण लेना होगा। यह प्रशिक्षण की एक अवस्था है जहां विद्यार्थी से भविष्य में स्वतंत्र रूप से कार्य करने में सक्षम बनने के लिए समन्वयकारी इकाई के सक्रिय निरीक्षण के अंतर्गत मेडिसिन और सर्जरी का वास्तविक अभ्यास करने की अपेक्षा की जाती है। इंटरशिप की अवधि के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :

क उन आम बीमारियों का निदान करने में सक्षम होना जिनका सामना हमें हर रोज की जिन्दगी में करना पड़ता है और आवश्यकता होने पर सही समय पर उन्हें रेफर करने का निर्णय लेने की सक्षमता विकसित करना।

ख अनिवार्य औषधियों के इस्तेमाल को समझना, इन्फ्यूजन और ट्रांसप्यूजन (आधान) और प्रयोगशाला सेवाओं का इस्तेमाल किस प्रकार रोगियों को लाभ पहुँचाने के लिए किया जा सकता है, यह समझना।

ग प्राथमिक स्तर पर आपातकालीन मेडिकल/ सर्जिकल/ गायनेकालोजिकल/ऑब्स्टेट्रिक/पीडियाट्रिक समस्याओं का प्रबंध करना सीखना।

घ समुदाय को निवारणात्मक स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम में योजनाओं की निगरानी में सक्षम होगा।

ङ उपचारात्मक और निवारणात्मक सेवाएं प्रदान करने के लिए एक स्वास्थ्य दल के नेता के रूप में कार्य करने के नेतृत्व की विशेषताएं विकसित करना।

च गंभीर रूप से बीमार (शारीरिक/मानसिक) विक्षिप्त रोगियों का प्रबंध करने में सक्षम होना।

समय वितरण

अनिवार्य

कम्युनिटी मेडिसिन — 3 माह

मेडिसिन — 2 माह

परिवार कल्याण योजना — 2 माह

फेमिली वेल्फेयर प्लानिंग

सहित ऑब्स्टेट्रिक/गायनी — 2 माह

पीडियाट्रिक — 15 दिन

ऑपथोलॉजी — 15 दिन

ओटो-रिनो-लेरिजोलॉजी — 15 दिन

आपातकालीन — 15 दिन

चुनी गई पोस्टिंग — 01 माह

चुनी गई पोस्टिंग में प्रत्येक विषय में 15 दिनों के लिए निम्न में से दो शामिल होंगे :

(i) डर्मटोलॉजी और यौन संचरित रोग

(ii) मनोचिकित्सा

(iii) तपेदिक और श्वसन रोग

(iv) निश्चेतक

(v) विकिरण नैदानिकी

(vi) भौतिक औषधि और पुनर्वास

(vii) विधिविज्ञान और आविषविज्ञान

(viii) रक्त बैंक और आधान विभाग

टिप्पणी:

➤ 23*0 इस अध्यादेश में वर्णित किसी अन्य बात के होते हुए भी, उठने वाले किन्हीं भी अनपेक्षित मामलों को, जो इस अध्यादेश के अन्तर्गत नहीं आते अथवा व्याख्या में भेद होने की स्थिति में कुलपति, यदि आवश्यक हो तो, स्कूलों के एक अथवा सभी संकाय अध्यक्ष(ों) से निर्मित एक समिति से राय/सलाह लेकर निर्णय लेंगे। कुलपति का निर्णय अंतिम होगा।

<p>(i) यदि कोई विद्यार्थी ऐसे कारणों से जो उसके वश में नहीं हैं कथित चिकित्सा महाविद्यालय में इंटर्नशिप अवधि पूरी नहीं कर पाता है तो विश्वविद्यालय से यथोचित अनुमति प्राप्त कर वह भारतीय चिकित्सा परिषद् (एमसीआई) द्वारा अनुमोदित अपनी रुचि के किसी अन्य संस्थान में अपनी "एक्स्टर्नशिप" जारी रख सकता है। जबकि कम्युनिटी मेडिसिन में पोस्टिंग मूल संस्थान में ही की जानी चाहिए।</p> <p>(ii) ऐसे किसी भी विद्यार्थी, जो किसी अन्य चिकित्सा महाविद्यालय से इंटर्नशिप जारी रखने का इच्छुक है, को ऐसा करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। यदि यह अवधि 6 माह से कम है।</p> <p>(iii) इंटर्नशिप की अवधि के दौरान इंटर्नशिप करने वाले विद्यार्थी को अधिकतम 12 दिनों का अवकाश दिया जाएगा बशर्ते वे प्रत्येक विभाग में प्रशिक्षण अवधि का 80 प्रतिशत भाग पूरा करता है।</p>	
<p>24*0 डिग्री प्रदान करना किसी विद्यार्थी को डिग्री तभी प्रदान की जाएगी यदि : क उसने सभी तीन व्यावसायिक पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरे किए हैं और संस्थान में/एमसीआई द्वारा मान्यता प्राप्त अन्य संस्थान से एक वर्ष की चक्रानुक्रम इंटर्नशिप पूरी की है। ख विश्वविद्यालय/संबद्ध संस्थान में उसके नाम पर कोई राशि बकाया नहीं है, और ग उसके विरुद्ध कोई अनुशासनिक कार्यवाई लम्बित नहीं है।</p>	
<p>25*0 अधिनियम, संविधि और अध्यादेश के प्रावधानों के अधीन उक्त प्रशासनिक मुद्दों जैसे परीक्षाओं में अनुचित आचार, अन्य कुप्रवृत्ति आचरण, परीक्षा फॉर्म जमा करने की तिथि, डुप्लीकेट डिग्रियां जारी करना, परीक्षकों, अधीक्षकों, निरीक्षकों को अनुदेश और उनके पारिश्रमिक, तथा परीक्षाओं के आयोजन से जुड़े अन्य मामलों को अकादमिक परिषद् द्वारा इस उद्देश्य हेतु अनुमोदित मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुसार निपटाया जाएगा।</p>	
<p>26*0 इस अध्यादेश में किसी बात के होते हुए भी किसी प्रत्याशित उठने वाले और इस अध्यादेश में कवर न किए गए मुद्दे के लिए अथवा व्याख्या में भिन्नता होने की स्थिति में, यदि अनिवार्य हो तो, कुलपति सभी या किसी एक विद्यालयों के संकालय अध्यक्षों से मिलकर बनी समिति की राय/सलाह प्राप्त करके निर्णय लेंगे। कुलपति का, निर्णय अंतिम होगा।</p>	

उपरोक्त संशोधन, प्रबंधन मंडल द्वारा, 24-9-2013 को आयोजित अपनी 55वीं बैठक में स्वीकृत किया गया और यह संशोधन स्वीकृत तिथि से प्रभावी होगा।

F. No. IPU/JR(C)/Ord.15/Amend/ BOM. 55/2013-14/2472.—In pursuance of the provisions of Section 27 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of the University in its 55th meeting held on 24.09.2013 vide agenda items 55.03, approved for partial amendment as follows in Ordinance 15 related to Conduct and Evaluation of Examinations leading to bachelor of medicine & bachelor of surgery (MBBS) degree notified vide F.2(29)/Ord/IPU/DRP/2005/2431 dated 10.05.2005.

EXISTING ORDINANCE - 15	PROPOSED ORDINANCE- 15
<p>APPLICABILITY: This ordinance shall apply to the programme leading to M.B.B.S. (Bachelor of Medicine and Bachelor of Surgery) degree following professional system :</p>	<p>APPLICABILITY: This ordinance shall apply to the programme leading to Bachelor of Medicine and Bachelor of Surgery (M.B.B.S.) degree as per Medical Council of India (MCI) norms.</p>
<p>1.0 DEFINITIONS:</p> <p>1.1 Academic programme/programmes: shall mean a programme/courses leading to award of M.B.B.S (Bachelor of Medicine and Bachelor of Surgery) degree.</p> <p>1.2 Professional system : An undergraduate teaching curriculum leading to the award of MBBS degree has been divided into First, Second and Third Professional, comprising of Pre clinical, Para clinical and Clinical courses. The Programme of MBBS is a 4½ years degree programme which is followed by a period of training for one year internship. The MBBS programme of 4½ years is broken up into periods of 1 year, 1½ and 2 years for the 1st, 2nd and 3rd Professionals respectively, the 3rd professional is further divided into Part I and Part II of one year each.</p> <p>Courses included in the First Professional are Anatomy, Physiology and Biochemistry.</p> <p>Courses included in the second professional are Pathology, Microbiology, Pharmacology and Forensic Medicine.</p> <p>Courses included in the Third Professional Part I consists of Ophthalmology, E.N.T. (Oto-rhino-laryngology) and Community Medicine.</p> <p>Courses included in the Third Professional Part II consists of Medicine including the Paediatrics, Surgery with Orthopaedics and Obstetrics and Gynaecology.</p> <p>Teaching of clinical courses included in the Third Professional begins at the start of the Second Professional i.e. from the second year of the MBBS course.</p> <p>However, teaching in Community Medicine begins at the start of the First Professional and continues till the end of Part III a of the curriculum.</p>	<p>1.0 DEFINITIONS:</p> <p>1.1 Academic programme/programmes: shall mean a programme/courses leading to award of Bachelor of Medicine and Bachelor of Surgery (M.B.B.S) degree.</p> <p>1.2 Professional system : An undergraduate teaching curriculum leading to the award of MBBS degree has been divided into First, Second and Third Professional, comprising of Pre clinical, Para clinical and Clinical courses. The Programme of MBBS is a 4½ years degree programme which is followed by one year of compulsory rotating internship period of training for one year internship. Learning during the entire MBBS programme shall be as per Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India (MCI).</p>
<p>1.3 Board of Studies (BOS) shall mean the Board of Studies of the School concerned.</p>	<p>1.3 Board of Studies (BOS) shall mean the Board of Studies of the concerned School.</p>

1.4	Course means a component of Academic Programme, carrying a distinctive code number.	1.4	Course means a component of M.B.B.S. Programme, carrying a distinctive code number.
1.5	External examiner shall mean an examiner who is not in the employment of the University or its affiliated institutions.	1.5	External examiner shall mean an examiner who is not in the employment of the University or its affiliated institution.
1.6	Student shall mean a person admitted to the University and its affiliated institutions for the academic programme to which this Ordinance is applicable.	1.6	Student shall mean a person admitted to the University and its affiliated institutions for the academic programme to which this Ordinance is applicable.
1.7	University shall mean Guru Gobind Singh Indraprastha University.	1.7	Words and expressions used but not defined in this ordinance shall have the meanings assign to them in the Act, statutes and the foregoing Ordinance
2.0	The University shall hold examinations for the academic programme, as is approved by the Academic Council and for awarding MBBS degree, as per the prescribed Schemes of Teaching and Examinations and Syllabi as approved by the Academic Council.	2.0	The University shall hold examinations for the academic programme, as is approved by the Academic Council and for awarding MBBS degree, as per the prescribed Schemes of Teaching and Examinations and Syllabi as approved by the Academic Council.
3.0	Examinations of the University shall be open to regular students i.e. candidates who have undergone a course of study in an institution/college affiliated to the University, for a period specified for that programme of study in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi: Provided further that a student may be debarred from, appearing in the examination of one or more courses, as provided in Clause 10 of this Ordinance or as provided in any other Ordinance of the University.	3.0	Examinations of the University shall be open to regular students i.e. candidates who have undergone a course of study in the University or its affiliated institution/college , for a period specified for that programme of study in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi: Provided further that a student may be debarred from, appearing in the examination of one or more courses, as provided in Clause 10 of this Ordinance.
4.0	ACADEMIC PROGRAMME COMMITTEE	4.0	ACADEMIC PROGRAMME COMMITTEE
4.1	There shall be an Academic Programme Committee in the school of medical sciences of the University and programme-wise Academic Programme Committee (s) in affiliated institutions.	4.1	There shall be an Academic Programme Committee in the school of medical sciences of the University and programme-wise Academic Programme Committee(s) in affiliated institutions.
4.2	i. In the case of school of medical sciences of the University, all the teachers of the school not exceeding twenty five shall constitute the Academic Programme Committee of which the Dean of the school shall act as its Chairman. This Committee shall coordinate the implementation of the courses for optimum utilisation of resources. ii. In the case of affiliated institutions, full time university recognised teachers not	4.2	a. In the case of school of medicine and Paramedical Health Sciences of the University, all the teachers concerned with conduct of the programme, not exceeding twenty five in number, shall constitute the Academic Programme Committee of which the Dean of the school shall act as its Chairman. This Committee shall coordinate for optimum utilisation of resources for implementation of the courses. b. In the case of affiliated institutions, full time university recognised teachers not

	<p>exceeding twenty five involved in the teaching of the course in an institution shall constitute the Academic Programme Committee for that programme. This Committee shall be headed by the Director/Principal of that institution, or another member of the Committee so nominated by him. This Committee shall coordinate the implementation of the courses for optimum utilisation of resources and shall also coordinate with Programme Coordination Committees as constituted by the University.</p>
<p>4.3 The Academic programme Committees shall also perform other tasks as assigned to it by the Board of studies of the School of Medical Sciences of the University or by the Director/Principal of the concerned affiliated institution.</p>	<p>4.3 The Academic programme Committees shall also perform other duties as assigned to it by the Board of studies of the School or by the Director/Principal of the concerned affiliated institution.</p>
<p>4.4 The Academic Programme Committee shall meet as and when required but at least once during every six months. The Chairman of the Committee will convene the meetings.</p>	<p>4.4 The Academic Programme Committee shall meet as and when required but at least once during every six months. The Chairman of the Committee will convene the meetings.</p>
<p>5.0 PROGRAMME COORDINATION COMMITTEE</p>	<p>5.0 PROGRAMME COORDINATION COMMITTEE</p>
<p>5.1 In order to facilitate academic coordination between different institutions running the same programme, a Programme Coordination Committee may be constituted by the University, if deemed desirable. The Directors/Principals of the concerned affiliated institutions shall be members of this Committee. The Committee shall be headed by the Dean of the University/Director/Principal to be nominated by the Vice-Chancellor.</p>	<p>5.1 In order to facilitate academic coordination between different institutions running the same programme, a Programme Coordination Committee may be constituted by the University, if deemed desirable. The Directors/Principals of the concerned affiliated institutions shall be members of this Committee. The Committee shall be headed by the Dean of the University/ Director/Principal to be nominated by the Vice-Chancellor.</p>
<p>5.2 The Committee shall coordinate the implementation of the academic programme to include timely coverage of the courses and uniformity in internal assessment/class tests. The Committee shall also assist in preparation of model question papers, if required, prepare guidelines for practical examinations and suggest names for panels of examiners. The Committee may also suggest any modifications in the syllabus, undertake comprehensive review of syllabi, or draw up draft syllabi for new courses.</p>	<p>5.2 The Committee shall coordinate for implementation of the academic programme as per academic calendar covering all prescribed courses and maintain uniformity in internal assessment/class tests. The Committee shall also assist in preparation of model question papers, if required, prepare guidelines for practical examinations and suggest names for panel of examiners. The Committee may also suggest any modifications in the syllabus, undertake comprehensive review of syllabi, or draw up draft syllabi for new courses.</p>

6.0 TRAINING PERIOD, TIME AND DISTRIBUTION	6.0 TRAINING PERIOD AND TIME DISTRIBUTION
6.1 The MBBS programme will be of 4½ years duration plus one year of rotatory Internship and will be under the school of the Medical Sciences of the University.	6.1 The MBBS programme will be of 4½ years duration followed by one year of compulsory rotating Internship and will be under the school of Medicine and Paramedical Health Sciences of the University.
6.2 The duration of the Programme is 4½ years excluding the period of internship. This is divided into 9 terms : Terms 1, 2 are included in the first professional. Terms 3, 4 & 5 are part of the second professional. Terms 6 & 7 are during Part I of the Third Professional and Terms 8,9 are during Part II of the Third professional.	6.2 The duration of the Programme including the period of internship shall be as per Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India (MCI).
6.3 <u>Schedule of terms</u> Schedule of terms will be as notified in the Academic Calendar every year by the Dean with the approval of the Vice Chancellor.	6.3 Schedule of terms will be as notified in the Academic Calendar every year by the Dean with the approval of the Vice-Chancellor.
7.0 DURATION OF TRAINING IN CLINICAL SUBJECTS	7.0 DURATION OF TRAINING IN CLINICAL SUBJECTS
(i) General Medicine - 26 weeks inclusive of training in laboratory medicine and infectious disease. (ii) General Surgery - 26 weeks, inclusive of training in Anaesthesia and dressing. (iii) Obstetrics and Gynaecology -24 weeks (including Family Welfare) including training in maternity (labour room), family medicine and family welfare. There shall be a posting all the above disciplines during IInd, III a & III b professionals. (iv) Community Medicine - 12 weeks includes training at rural and urban health centres. (v) Paediatrics, Orthopaedics and ophthalmology - 10 weeks each.. (vi) Ear, nose, throat - 8 weeks (vii) Skin and STD - 6 weeks (viii) Pulmonary Medicine, Psychiatry, Radiology, Casualty, Dental Medicine - 2 weeks. The distribution of these training/posting will be made in small batches and decided at the Institution level.	7.1 The Duration of training in Clinical Subjects shall be as per MCI Regulations and the distribution for the training/posting will be made in small batches as decided at the Institutional level.
8.0 VACATION FOR STUDENTS	8.0 VACATION FOR STUDENTS
8.1 Vacation for students shall be two weeks	8.1 Vacation for students shall be two weeks

<p>duration after each semester, to be notified in the Academic Calendar every year.</p>	<p>duration after each semester, to be notified in the Academic Calendar every year.</p>
<p>9.0 VACATION FOR TEACHERS</p>	<p>9.0 VACATION FOR TEACHERS</p>
<p>9.1 There shall be two vacations for teachers of 68 days during summer and 35 days during winter to be notified in the Academic Calendar.</p>	<p>9.1 There shall be two vacations for teachers of 68 days during summer and 35 days during winter respectively to be notified in the Academic Calendar.</p>
<p>Note: Vacation among teachers will be in batches, half of the faculty will be working when the other half is on vacation. Individual faculty members will be entitled vacation leave for half the number of days mentioned above. If a teacher does not avail the vacation, he/she is entitled to half the number of days as Earned leave.</p>	<p>Note: Vacation among teachers will be in batches, half of the faculty will be working when the other half is on vacation. Individual faculty members will be entitled vacation for half the number of days mentioned above. In case a teacher does not avail the vacation, he/she will be entitled for additional Earned leaves as per central govt. rules for the purpose.</p>
<p>10.0 ATTENDANCE</p>	<p>10.0 ATTENDANCE</p>
<p>10.1 For the MBBS course a student shall be required to be present in 75% or more of all theory classes held, and 80% in practicals, seminars, group discussion, tutorials, demonstrations, hospital posting, bed side clinics etc. in a course to be eligible to take up the examination at the end of each Professional. The Dean of the faculty in the case of university and Principal/Director in case of affiliated institutions may condone attendance shortage in any course(s) for individual students, for reasons to be recorded. However, under no condition, a student who has an attendance of less than 70% shall be allowed to appear in the Professional end examination of course.</p>	<p>10.1 For pursuing MBBS programme, a student shall be required to fulfil the criteria of Attendance as per Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India.</p>
<p>10.2 The University/affiliated institution shall maintain an attendance record of students registered in the MBBS courses. The teachers must intimate the Dean of the School/Director/Principal of the affiliated institution at least 10 days prior to the first day of the Professional examination the names of such students who cannot be allowed to take examination as per the attendance criteria given here in this Clause.</p>	<p>10.2 The University/affiliated institution shall maintain an attendance record of students registered in the MBBS courses. The teachers must intimate the Dean of the School/Director/Principal of the affiliated institution, at least 10 days prior to the first day of the Professional examination, the names of such students who cannot be allowed to take examination as per prescribed attendance criteria</p>
<p>10.3 The Dean of the school and/or Director/Principal of the affiliated institution shall announce the names of all such students who are not eligible to appear in the Professional examination at least 5</p>	<p>10.3 The Dean of the school and/or Director/Principal of the affiliated institution shall announce the names of all such students who are not eligible to appear in the Professional examination at least 5 calendar</p>

calendar days before the start of the examination and simultaneously intimate the same to the Controller of Examinations.

Note:

Admission to the MBBS programme of the University shall close on a date specified by the University, at the time of announcement of admission every year. If any student for any reason is admitted to the programme beyond the closing date for any reason, he/she will not be eligible to appear in the annual examination Scheduled at the end of the 2nd term. If otherwise eligible, he may appear in the supplementary examination. The batch of students in the 1st professional who pass in the supplementary batch will be eligible to appear in the 2nd professional annual university examination only if he has completed 18 months of study. Otherwise he has to appear in the supplementary examination of the 2nd professional for the first time only after 18 months of study and training.

For appearing in the annual examination, the attendance criteria will stand. In case a student falls short of attendance he will be allowed to sit for the supplementary examination only. However, he will be considered to have cleared the professional examination for all purposes in the first attempt.

11.0 CURRICULUM OF THE PROGRAMME

11.1 Curriculum of the MBBS courses, theory and practicals are notified separately in the curriculum released by the University.

12.0 MINIMUM TEACHING HOURS IN VARIOUS COURSES OF MBBS

a. Pre-Clinical Courses: (1st & 2nd Terms):

Anatomy = 650 hrs.

Physiology = 480 hrs.

Bio-Chemistry = 240 hrs.

Community Medicine = 60 hrs.

Total = 1430 hrs.

b. Para-Clinical Courses: (3rd, 4th & 5th Terms):

Pathology = 300 hrs.

Pharmacology = 300 hrs.

Micro-biology = 250 hrs.

days before the start of the examination and simultaneously intimate the same to the Controller of Examinations.

For appearing in the annual examination, the attendance criteria will be followed. In case a student falls short of attendance he will be allowed to sit for the supplementary examination as per Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India (MCI).

11.0 CURRICULUM OF THE PROGRAMME

11.1 Curriculum of the MBBS courses, theory and practical's shall be notified separately by the University.

12.0 MINIMUM TEACHING HOURS IN VARIOUS COURSES OF MBBS

12.1 The minimum teaching hours for various courses of MBBS programme shall be as per Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India (MCI).

Community Medicine = 70 hrs.

Forensic Medicine = 100 hrs.

Total = 1020 hrs.

c. Clinical Courses:

General Medicine* = 300 hrs.

Paediatrics = 100 hrs

T.B.* = 24 hrs

Psychiatry* = 24 hrs

Skin - STD = 30 hrs.

Community Medicine = 50 hrs.

Anaesthesia** = 24 hrs.

General Surgery** = 300 hrs.

Orthopaedics** = 100 hrs.

Ophthalmology = 100 hrs.

E.N.T. = 70 hrs.

Radiology* = 24 hrs.

Dentistry** = 10 hrs.

Obst. & Gynae = 300 hrs.

Total = 1456hrs.

* Department of Medicine to coordinate.

** Department of Surgery to coordinate.

Re-admission:

A candidate having failed to pass the supplementary of the first and second MBBS Examination, may register for re-admission to the same class at the discretion of the Principal of the College within 15 days of the announcement of the result of the University Examination in the local press. The candidate will be required to pay enrolment fee, special University fee etc. and the College will inform the University of his/her re-admission.

13.0 EXAMINATIONS

(i) There shall be four university/professional examinations schedule of which shall be notified in the academic calendar every year.

(ii) (a) A candidate will be allowed to appear, a maximum of four times (annual and supplementary) to clear the First Professional examinations. In case he/she is unable to do so, his name will be struck off the University rolls. A candidate can appear in the second professional only if he has passed the first professional examination held 18 months earlier. (i.e. completed 18 months of training).

If a student gets a supplementary in one subject, he may continue to attend classes of the next professional and can pass in the supplementary exams.

(a) If he gets supplementary in more than one subject he is not entitled to attend the classes of the next professional, until he clears the

13.0 EXAMINATIONS

The main as well as supplementary examinations conducted by the University shall be as per Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India (MCI). However, details regarding modalities to be followed regarding conduct of examinations including internal assessment, examination Schedule, distribution of marks, criteria for passing a subject, appointment of examiners, etc. shall be notified separately by the University in the form of regulations.

NUMBER OF EXAMINATIONS

THE CLAUSE HAS BEEN DELETED IN VIEW OF 13.0 ABOVE

supplementary exam. In case he fails to clear the supplementary exam, he will be declared as 'Fail' & he has to repeat the year.

- (b) In the above situation he would subsequently be entitled to sit for the supplementary exam of the next professional for reasons of attendance.
- (c) In case a student is unable to appear in an examination/professional due to reasons of illness, he with the approval of the Dean, School of Medical Sciences may be given a fifth attempt.
- (d) The condition of maximum of four attempts to pass a professional shall be applicable to all the professionals.
- (iii) It is mandatory for a candidate to pass the second professional examination to be allowed to sit for Third professional examinations Part I. However it is not mandatory to pass Third professional Part I to enter the pre final and final terms. However the candidate has to pass Part I a supplementary before being allowed to sit for part II b examinations.

14.0 NUMBER OF EXAMINATIONS

- 14.1 The University shall conduct not more than two professional examinations in a year for any professional with an interval of not less than six weeks i.e. supplementary examinations will follow the annual examination, after a duration of about six weeks as per details in Clause 13 of this document.

15.0 USE OF UNFAIR MEANS

- 15.1 All cases regarding reported use of Unfair Means in the examination shall be placed before a Standing Unfair Means Committee/s for decision in individual cases, and recommending penalties, as per the laid down rules of the University.

16.0 EVALUATION

- 16.1 The evaluation of students has two components
 - a. Evaluation through professional examination
 - b. Continuous evaluation through internal

14.0 USE OF UNFAIR MEANS

- 14.1 All cases regarding reported use of Unfair Means in the examination shall be placed before a Standing Unfair Means Committee/s for decision in individual cases, and recommending penalties, as per the laid down rules of the University.

15.0 EVALUATION

- 15.1 The evaluation of students shall be as per Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India (MCI). However, other details regarding evaluation process and procedure shall be notified separately by the University in the form of regulations.

CLAUSES 16 TO 20 OF THE EXISTING ORDINANCE HAVE BEEN DELETED IN VIEW OF UNDERLINED PORTION IN PARA 15.1 ABOVE

16.0 EXAMINATION FEES

- 16.1 The Registrar shall notify the fees payable by the students for various examinations, after the same is approved by the Vice-Chancellor.

assessment

The distribution of weightage for various components of evaluation is as under:

Theory and Oral :

Professional examination	80%
Internal assessment	20%

Practical/Clinical:

Professional examination	80%
Internal assessment	20%

Evaluation system

Evaluation of a student at the end of a professional would be by way of :

a. Written examination

- Descriptive(short structured questions)
- Multiple choice (20%)

Most of the questions should have an applied aspect.

b. Oral

c. Practical examination.

The examiner in the practical examination should follow a system of objectively structured practical examination (OSPE) and objectively structured clinical examination (OSCE).

OSPE and OSCE are structured methods of examination which enables the examiner to assess all the aspects of learning and training separately. It is a more objective and reliable method of testing a large number of students. However, the system requires greater effort, time and team work. OSCE also test inter personnel skills of clinical examination and practical procedures. There is also a potential to include more number of junior examiners. OSCE and OSPE are more demanding on examiners and patients.

With the intent to include OSPE and OSCE it is decided to appoint a minimum of four internal and four external examiners for conduct of each Professional examination. The internal examiners would include at least a professor. The other examiners included may be junior faculty members.

For supplementary examinations the number of examiners will be proportional to the number of students to be examined. For less than 50 students there should be at least two external and two internal examiners.

17.0 CONDUCT OF PROFESSIONAL EXAMINATIONS

- a.** All professional examinations shall be conducted by the Controller of Examination, Guru Gobind Singh Indraprastha University

A student who has not paid the prescribed fees before the commencement of examinations shall not ordinarily be eligible to appear in the examination. The Vice-Chancellor may at his discretion allow, in certain cases of genuine hardship, an extension in the last date of payment of fees. The result of such student shall, however, be withheld till all dues are cleared.

17.0 ELIGIBILITY TO APPEAR FOR PROFESSIONAL EXAMINATIONS

17.1 The eligibility of a student to appear for professional examinations shall be as per Graduate Medical Education Regulations of

- b. The schedule of examination shall be notified by the Controller of Examination at least 30 days prior to the first day of the commencement of professional examinations.

- c. For theory as well as practical examinations all examiners shall be appointed by the Controller of Examination with the approval of the Vice-Chancellor or by the controller of examination provided the Vice Chancellor may at his discretion delegate the authority to him.

The recommendation for names of examiners shall be obtained from the respective Programme Coordination Committees through the Chairman of the Committee. Where there is an exigency and the Programme Coordination Committee cannot meet, the Chairman of Programme Coordination Committee may recommend the names, stating clearly why the meeting of the Programme Coordination committee could not be convened.

In emergent situations, where, for some reason the recommendations cannot be obtained from the Programme Coordination Committee as stipulated above, recommendations may be obtained from the Dean of the school medical sciences.

- d. For each examination of a course, the Director/Principal of the concerned Institution, or the Chairman of the Programme Coordination Committee will send sets of model question papers drawn by the concerned teachers to the Controller of Examinations before a date to be specified by the Controller of Examinations. The Examiner appointed by the Controllers of Examinations for setting the Question paper shall set the Question paper, using the model question paper as a guide. The question paper shall be set out of the entire syllabus of a course. The senior most internal examiner will be the Chairman of the Board.

The internal examiner deputed to set the paper for the year is to forward the same through the Dean faculty of Medical Sciences. The Dean shall forward the same to the Controller of Examinations. The Controller of Examination will then send the paper for moderation to the external examiner selected. After moderation the external examiner shall return the same to the Controller of

Medical Council of India (MCI).

Examinations for printing.

The University shall have the right to call for all the records of teacher's continuous evaluation and moderate the teacher's evaluation, if it deems fit in any specific case(s).

Practical examinations shall be conducted by a Board of Examiners. The Board shall consist of six to eight examiners. One of the examiners in that case may be designated as head Examiner. The senior most internal examiner shall be the Head Examiner. The Head Examiner shall draw the guidelines for the conduct of examinations to be followed by various Boards to ensure uniformity of evaluation.

18.0 GUIDELINES FOR APPOINTMENT OF EXAMINERS

A. Qualification and experience of the examiners

- i. An examiner to be appointed for any subject must fulfill a minimum requirement for recognition of teacher as per rules laid down by the University
- ii. For the examination of MBBS there should be at least eight examiners in each subject out of which at least 50% of examiners should be external examiners. An external so appointed should fulfill the criteria in clause i.e.. He should be from a different University.
- iii. In case three external examiner are not present the exams may be conducted with two external examiners.
- iv. An external examiner may be appointed for a maximum of two years consecutively. There after he may be re appointed but only after a gap of two years.
- v. The examiners (internal and external) who set the written examination papers must also conduct the clinical/practical examination.

B. Appointment of internal examiners for MBBS courses

- i. Every teacher who qualifies to be an examiner must inform in writing to the Chairman, Board of Studies through his Head of Department Institution.
- ii. The names of examiners must be informed by the committee at least 3 months prior to the commencement of the examination.
- iii. The four internal examiners will be **drawn** from the institution.

18.0 - RECHECKING OF ANSWER SHEETS

18.1 A student may apply, within two weeks from the date of the declaration of the result, for re-checking of the examination script(s) on the payment of prescribed fees. Rechecking shall mean verifying whether all questions and their parts have been duly marked in line with the question paper including re-totalling of marks. In the event of a discrepancy being found, the same shall be rectified through appropriate changes in both the result as well as marks sheet of the concerned professional examination.

- vi. The internal examiners should be from the teaching faculty, but must include a Professor.
- vii. Based on the experience a list of names of the examiners will be prepared by the School of Medical Sciences.
- viii. In case an internal examiner from the category in item (v) is unavailable then the examiner may be drawn from another category.
- ix. Honorary/emeritus/visiting professors or part time/ad-hoc teachers are not eligible to be appointed as internal examiners.
- x. An internal examiner is appointed for one year only.
- xi. In case of retirement, transfer, the university may allow the person to conduct examinations if the retirement/transfer is less than three month.

19.0 FORMAT OF VARIOUS PROFESSIONAL EXAMINATION IN THE PROGRAMME AND DISTRIBUTION OF MARKS.

1. First Professional Examination: (Pre-clinical Courses) :-

Courses consist of : Anatomy, Physiology & Bio-chemistry

a. Anatomy

Theory: Two papers of 50 marks each. (One applied question of 10 marks = 100 marks in each paper)

Oral (Viva) = 20 marks

Practical = 40 marks

Internal Assessment = 40 marks

(Theory = 20 & Practical = 20)

TOTAL = 200 marks

b. Physiology

Theory: Two papers of 50 marks each. (One applied question of 10 marks = 100 marks in each paper)

Oral (Viva) = 20 marks

Practical = 40 marks

Internal Assessment = 40 marks

(Theory = 20 & Practical = 20)

TOTAL = 200 marks

c. Bio-chemistry

Theory : Two papers of 50 marks each. (One applied question of 10 marks = 100 marks in each paper)

Oral (Viva) = 20 marks

19.0 SUPPLEMANTRY EXAMINATIONS

19.1. A student obtaining less than 50% of maximum marks assigned to a course and failing in the course shall be allowed to reappear in a supplementary examination as per Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India (MCI). However, the marks obtained by such a student out of teacher(s) continuous evaluation component shall remain unchanged.

19.2 A student, having attended the course as per minimum attendance requirements, if is not able to appear in the professional examination, shall be allowed to appear in the supplementary/subsequent examination of the concerned course, in subsequent turn when these are offered. He/She shall not be required to attend the classes again, and the marks obtained by the student out of teacher's continuous evaluation component shall remain unchanged. However, the student shall be required to obtain a minimum of 50% marks in the professional examination in the concerned course.

19.3 A student who has not been allowed to take an examination because of shortage of attendance, shall be required to repeat the course and will be required to attend lectures, tutorials, practical or any other component of the course as prescribed. In such cases the continuous evaluation by teachers shall be taken into account while repeating the course.

The Institution may, at its discretion,

Practical = 40 marks
Internal Assessment = 40 marks
 (Theory = 20 & Practical = 20)
TOTAL = 200 marks

Note

In order to be declared passed a candidate must obtain 50% in aggregate with a minimum of 50% in theory including orals and minimum of 50% in Practicals.

2. Second Professional Examination: (Para-Clinical Courses):-

Courses consists of Pathology, Micro-biology, Pharmacology & Forensic Medicine.

a. Pathology

Theory : Two papers of 50 marks each.

(One applied question of 10 marks
 = 100 marks in each paper)

Oral (Viva) = 20marks

Practical = 40marks

Internal Assessment = 40 marks

(Theory = 20 & Practical = 20)

TOTAL = 200 marks

b. Micro-biology

Theory : Two papers of 50 marks each.

(One applied question of 10 marks
 = 100 marks in each paper)

Oral (Viva) = 20 marks

Practical = 40 marks

Internal Assessment = 40marks

(Theory = 20 & Practical = 20)

TOTAL = 200 marks

c. Pharmacology

Theory : Two papers of 50 marks each.

(One applied question of 10 marks
 = 100 marks in each paper)

Oral (Viva) = 20 marks

Practical = 40 marks

Internal Assessment = 40 marks

(Theory = 20 & Practical = 20)

TOTAL = 200 marks

d. Forensic Medicine

Theory: One paper of 40 mark

= 40 marks

Oral (Viva) = 10 marks

Practical/Clinicals = 30 marks

Internal Assessment = 20 marks

(Theory = 10 & Practical = 10)

TOTAL = 100 marks

Note

In order to be declared passed a candidate must obtain 50% in aggregate with a

arrange for additional teaching for students repeating the examination of a course. The modus operandi of such instruction shall be as notified by the Institution.

19.4 A student who has to reappear/repeat in a professional examination shall be examined as per the syllabus in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi applicable at the time of his/her joining for pursuance of the programme. However, in cases where only some minor modifications have been made in the syllabus of the course, the examination may be held in accordance with the revised syllabus certified by Dean of the School/Chairman of the Academic Programme Committee.

Students who are eligible to reappear in an examination shall have to apply to the Controller of Examinations to be allowed to reappear in an examination and pay the fees prescribed by the University in accordance with the operational modalities notified by the University.

19.5. A candidate who has earned the minimum number of marks prescribed in the Scheme of Teaching, Examination and Syllabi shall be declared to have passed the professional examination and shall be eligible for award of degree only after the completion of the third professional and rotating internship as per Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India (MCI).

minimum of 50% in theory including orals and minimum of 50% in Practicals.

**3. Third Professional Examination:
(Clinical Courses):**

Third Professional (Part -I) MBBS course consist of :- Ophthalmology, Oto-Rhino-Laryngology & Community Medicine.

a. Ophthalmology

Theory: One paper.

(Should contain one question on pre-
= 40 marks

clinical and para-clinical aspects, of 10 marks)

Oral (Viva) = 10 marks

Clinicals = 30 marks

Internal Assessment = 20 marks

(Theory = 10 & Practical = 10)

TOTAL = 100 marks

b. Oto-Rhino-Laryngology:

Theory: One paper.

(Should contain one question on pre-
= 40 marks

clinical and para-clinical aspects, of 10 marks)

Oral (Viva) = 10 marks

Clinicals = 30 marks

Internal Assessment = 20 marks

(Theory = 10 & Practical = 10)

TOTAL = 100 marks

c. Community Medicine

Theory: Two papers of 60 marks each

(including problem solving, applied aspects of
= 120 marks

management at primary level including essential drugs, occupation (agro based) diseases, rehabilitation and social aspects of community)

Oral (Viva) = 10 marks

Practical/Project evaluation
= 30 marks

Internal Assessment = 40 marks

(Theory = 20 & Practical = 20)

TOTAL = 200 marks

Note: In order to be declared passed a candidate must obtain 50% in aggregate with a minimum of 50% in theory including orals and minimum of 50% in Practicals.

Third Professional Examination:

3rd Professional (Part - II) MBBS course consist of Medicine, Surgery, Obstetrics & Gynaecology and Paediatrics.

Each paper shall have two sections, Questions

requiring essay type answers may be avoided.

Medicine

Theory: Two papers of 60 marks each
= 120 marks

Paper I - General Medicine

Paper II - General Medicine

(including Psychiatry, Dermatology and S.T.D.)

(Shall contain one question on basic sciences and allied subjects)

Oral (Viva) interpretation of X-ray, ECG etc.
= 20 marks

Clinical (Bed side) = 100 marks

Internal Assessment = 60 marks

(Theory = 30 & Practical = 30)

TOTAL = 300 marks

b. Surgery

Theory: Two papers of 60 marks each
= 120 marks

Paper I - General Surgery (Section 1)

Orthopaedics (Section 2)

Paper II - General Surgery

(Including Anaesthesiology, Dental diseases and Radiology)

(Shall contain one question on basic sciences and allied subjects)

Oral (Viva) interpretation of Investigative data. = 20 marks

Clinical (Bed side) = 100 marks

Internal Assessment = 60 marks

(Theory = 30 & Practical = 30)

TOTAL = 300 marks

Paper - I of Surgery shall have one section in Orthopaedics. The Questions on Orthopaedic Surgery be set and assessed by examiners who are teachers in the Orthopaedic Surgery.

c. Obstetrics & Gynaecology:

Theory: Two papers of 40 marks each
= 80 marks

Paper I - Obstetrics including social obstetrics.

Paper II - Gynaecology, Family Welfare and Demography

(Shall contain one question on basic sciences and allied subjects)

Oral (Viva) including record of delivery cases (20 + 10) = 30 marks

Clinical = 50 marks

Internal Assessment = 40 marks

(Theory = 20 & Practical = 20)

TOTAL = 200 marks

d. Paediatrics: (Including Neonatology)

Theory: One paper = 40 marks

(Shall contain one question on basic sciences and allied subjects)

Oral (Viva) = 10 marks

Clinical = 30 marks

Internal Assessment = 20 marks

(Theory = 10 & Practical = 10)

TOTAL = 100 marks

Note: In order to be declared passed a candidate must obtain 50% in aggregate with a minimum of 50% in theory including orals and minimum of 50% in Practical.

20.0 INTERNAL ASSESSMENT

Periodic examinations (pre term/mid term/sent up) conducted through out the course.

Internal assessment shall carry 20% of the total marks in a subject in the University/Professional examination.

A student must secure at the minimum 50% marks in theory and Practicals in order to be eligible to appear for the Professional examination.

21.0 EXAMINATION FEES

21.0 The Registrar shall notify the fees payable by the students for various examinations, after the same is approved by the Vice-Chancellor. A student who has not paid the prescribed fees before the start of examinations shall not ordinarily be eligible to appear in the examination. The Vice-Chancellor may, at his discretion allow, in certain cases of genuine hardship, an extension in the last date of payment of fees. The result of such student shall, however be withheld till all the dues are cleared.

22.0 CRITERIA FOR PASSING, MARKS AND DISTINCTION

a. i. Obtaining a minimum of 50% in the Professional examination (separately in theory and practicals) and teachers continuous evaluation (internal assessment) shall be essential for passing the course. A candidate, who secures less than

20.0 DISTINCTION

A student is considered passed if he/she secures above 50% marks as mentioned **above** and there is no provision of mentioning any division as a standard of passing criteria/qualifying the final examinations to obtain MBBS degree. However, a student securing above 75% marks in a course/courses, is deemed to have passed the course/courses with distinction.

➤ THE CLAUSE HAS BEEN DELETED IN THE LIGHT OF CLAUSE 21.0

21.0 AWARD OF DEGREE

21.1 A student shall be awarded a degree provided:

a. he has successfully passed all the three professionals and completed one year of compulsory rotating internship in line with Graduate Medical Education Regulations of Medical Council of India (MCI).

b. There are no dues outstanding in his/her name to the University/Affiliated Institution: and

c. No disciplinary action is pending against him/her.

22.0 Subject to the provisions of the Act, the Statutes and the Ordinances such administrative issues as disorderly conduct in examinations, other malpractices dates for submission of examination forms, issue of duplicate degrees, instructions to examiners, superintendents, invigilators, their remuneration and any other matter connected with

50% of marks in a course, shall be deemed to have failed in that course.

ii. A student may apply, within two weeks from the date of the declaration of the result, for re-checking of the examination script(s) on the payment of prescribed fees. Rechecking shall mean verifying whether all the questions and their parts have been duly marked as per the question paper, and the totalling of marks. In the event of a discrepancy being found, the same shall be rectified through appropriate changes in both the result as well as marks sheet of the concerned professional examination.

b. i. A student obtaining less than 50% of maximum marks assigned to a course and failing in the course shall be allowed to reappear in a supplementary examination. The marks obtained by such a student out of teacher(s) continuous evaluation component shall remain unchanged. The student shall be required to obtain an aggregate of 50% marks in the supplementary examination and teacher's continuous evaluation in the concerned course.

ii. A student, who having attended the course and fulfilling the minimum attendance requirements, is not able to appear in the professional examination shall be allowed to appear in the supplementary/subsequent examination of the concerned course in subsequent turn when these are offered. He/She shall not be required to attend the classes again, and the marks obtained by the student out of teacher's continuous evaluation component shall remain unchanged. The student shall be required to obtain an aggregate of 50% marks in the professional examination and teacher's continuous evaluation in the concerned course.

iii. A student who has not been allowed to take an examination because of shortage of attendance shall be required to repeat the course and will be required to attend lectures, tutorials, practical or any other component of the course. In such cases the continuous evaluation by teachers shall be taken into account while repeating the course.

The Institution may, at its discretion, arrange for additional teaching for students repeating the examination of a course. The modus operandi of such instruction shall be as notified by the Institution.

iv. A student who has to reappear/repeat in a professional examination shall be examined as per the syllabus in the Scheme of Teaching and

the conduct of examinations will be dealt with as per the guidelines approved for the purposes by the Academic Council.

Examination and Syllabi applicable at the time of joining, of the concerned programme. However, in cases where only some minor modifications have been made in the syllabus of the course, and Dean of the School/Chairman of the Academic Programme Committee so certifies, the examination may be held in accordance with the revised syllabus.

Students who are eligible to reappear in an examination shall have to apply to the Controller of Examinations to be allowed to reappear in an examination and pay the fees prescribed by the University.

v. The operational modalities of clause 22(a) & (b) i, ii & iii shall be notified by the University.

A candidate who has earned the minimum number of marks prescribed in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi, shall be declared to have passed the professional and shall be eligible for award of degree after the completion of the third professional and rotating internship.

For MBBS course there shall be no divisions.

A student is considered passed if he/she secures above 50% marks as mentioned above. In case a student secures above 75% marks in a course/courses he/she is deemed to have passed the course/courses with distinction.

23.0 INTERNSHIP

Candidates undergoing training for the MBBS degree subsequent to passing the third professional examination must undergo a period of certified practical training of one year in the Medical College of his/her learning. This is a phase of training where the graduate is expected to actually practice medical and surgical skills under the active supervision of the coordinating unit so as to be capable in future of functioning independently. The objectives of the period of internship are:

- a. To be able to diagnose common diseases encountered in day to day practice and to be able to form a decision to refer them at the appropriate time if needed.
- b. To understand the use of essential drugs, infusions, transfusions and the use of laboratory services to the advantage of his/her patient.
- c. Learn to manage emergency medical/surgical/ gynaecological/ obstetric/ paediatric problems at the primary level.
- d. Be able to monitor schemes in the national

23.0 Notwithstanding anything stated in this Ordinance, for any unforeseen issues arising and not covered by this Ordinance, or in the event of differences of interpretation, the Vice-Chancellor may take a decision, after obtaining, if necessary the opinion/advice of a Committee consisting of any or all the Deans of the Schools. The decision of the Vice-Chancellor shall be final.

health programme in order to provide preventive and promotive health care services to the community.

- e. Develop qualities of leadership to function as leader of a health team in order to deliver curative and preventive services.
- f. Be able to manage chronically ill (physically/mentally) deranged patients.

Time distribution

Compulsory

Community Medicine 3 months

Medicine 2 months

Surgery including Orthopaedics
2 months

Obstt./Gynae including Family Welfare
Planning 2 months

Paediatric 15 days

Ophthalmology 15 days

Otorhinolaryngology 15 days

Casualty 15 days

Elective Postings 1 month

Elective Posting will include two of the following for 15 days in each subject.

- i. Dermatology and Sexually Transmitted Diseases
- ii. Psychiatry
- iii. Tuberculosis and Respiratory Diseases
- iv. Anaesthesia
- v. Radio-Diagnosis
- vi. Physical Medicine and Rehabilitation
- vii. Forensic medicine and Toxicology
- viii. Blood Bank and Transfusion Department

Note:

i. In case the student must for reasons beyond control cannot complete his/her internship period in the said medical college he may after obtaining due permission from the university continue with his "externship" in another institution of his choice which is approved by the Medical Council of India.

However, the posting in community medicine must be done in the parent institution.

ii. Any student interested in continuing internship from another medical college will not be permitted to do so in case the duration is less than 6 months.

iii. During the period of internship an intern may be allowed a maximum of 12 days leave provided he/she completes 80% of the prescribed period of training in each department.

24.0 AWARD OF DEGREE

A student shall be awarded a degree if:

- a. If he has successfully passed all the three professionals and completed one year of compulsory rotatory internship in the institution/another institution recognised by the MCI.
- b. There are no dues outstanding in his/her name to the University/Affiliated Institution: and
- c. No disciplinary action is pending against him/her.

25.0 Subject to the provisions of the Act, the Statutes and the Ordinances such administrative issues as disorderly conduct in examinations, other malpractices dates for submission of examination forms, issue of duplicate degrees, instructions to examiners, superintendents, invigilators, their remuneration and any other matter connected with the conduct of examinations will be dealt with as per the guidelines approved for the purposes by the Academic Council.

26.0 Notwithstanding anything stated in this Ordinance, for any unforeseen issues arising and not covered by this Ordinance, or in the event of differences of interpretation, the Vice-Chancellor may take a decision, after obtaining, if necessary the opinion/advice of a Committee consisting of any or all the Deans of the Schools. The decision of the Vice-Chancellor shall be final.

The above mentioned amendment had been approved by the Board of Management on 24.09. 2013 in its 55th meeting and shall come into force with effect from the date of its approval.

फा0 सं0 आईपीयू/जे आर (सी)/आर्डि0 38 न्यू/57 बी ओ एम/2014/2473:- गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम, 1998 (1998 का 9) की धारा 27 के उपबन्धों के अनुसरण में विश्वविद्यालय प्रबन्धन बोर्ड ने दिनांक

7-3-2014 को अपनी 57वीं बैठक में एजेण्डा मद संख्या 57.03 द्वारा एतदनुसार निम्न नया अध्यादेश-38 "आयुर्वेद काया चिकित्सा तथा शल्य चिकित्सा [आयु० काय० तथा शल्य चिकि० स्ना० बी.ए.एम.एस.] स्नातक उपाधि के लिये कार्यक्रम हेतु परीक्षाओं का संचालन एवं मूल्यांकन" शीर्ष से स्वीकृति दी है ।

अनुप्रयोज्यता : यह अध्यादेश, केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के० भा० चिकि० परि०) के मानकों के अनुसार आयुर्वेद काया चिकित्सा तथा शल्य चिकित्सा (आयु० काय० तथा शल्य चिकि० स्ना०) स्नातक उपाधि प्रदान करने के लिये कार्यक्रम पर लागू होगा ।

1-0 परिभाषाएँ :

- 1-1 अकादमिक कार्यक्रम : इसका अभिप्राय होगा ऐसे कार्यक्रम/पाठ्यक्रम, जो आयुर्वेद काया चिकित्सा तथा शल्य चिकित्सा स्नातक (आयु० काय० तथा शल्य चिकि० स्ना०) अथवा आयुर्वेदाचार्य उपाधि प्रदान कराते हों ।
- 1-2 व्यावसायिक तंत्र : इसका अभिप्राय है एक ऐसी पूर्व स्नातक शिक्षण पाठ्य-परिचर्या जो अध्ययन के निर्धारित पाठ्यक्रम पूर्ण करके, केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के० भा० चिकि० परि०) द्वारा समय-समय पर संशोधित विनियमों के अनुसार विनिर्दिष्ट अवधि तक विस्तारित अनिवार्य चक्रानुक्रमानुसार प्रशिक्षुता सहित निर्धारित पाठ्यक्रम पूर्ण हो जाने पर अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के बाद आयु० काय० तथा शल्य चिकि० स्ना० उपाधि प्राप्त कराती हो ।
- 1-3 पाठ्य समिति (पा० समि०) से अभिप्राय है, सम्बन्धित स्कूल की पाठ्य समिति ।
- 1-4 पाठ्यक्रम से अभिप्राय है, आयु० काय० तथा शल्य चिकि० स्ना० कार्यक्रम के अंग जिसमें विशिष्ट कूट संख्या निहित हो ।
- 1-5 बाह्य परीक्षक से अभिप्राय है ऐसा परीक्षक जो विश्वविद्यालय अथवा सम्बद्ध में सेवारत न हो ।
- 1-6 छात्र से अभिप्राय ऐसे व्यक्ति से है जो उस अकादमिक कार्यक्रम, जिसके लिये यह अध्यादेश अनुप्रयोज्य, है के लिये विश्वविद्यालय अथवा उसके सम्बद्ध संस्थान में प्रवेश ले चुका हो ।
- 1-7 इस अध्यादेश में प्रयुक्त परन्तु उपरिभाषित शब्दों एवं अभिव्यक्तियों का वही अभिप्राय होगा जो अधिनियम संविधि एवं पूर्ववर्ती अध्यादेशों में उनके लिये निर्धारित रहा होगा ।
- 2-0 विश्वविद्यालय, अकादमिक कार्यक्रम के लिये परीक्षाएँ उस प्रकार से आयोजित करेगा जैसाकि अकादमिक परिषद् द्वारा स्वीकृत होगा एवं आयु० काय० तथा शल्य चिकि० स्ना० उपाधि प्रदान करने के लिये अकादमिक परिषद् द्वारा यथा स्वीकृत पाठ्यक्रम शिक्षण एवं परीक्षा की निर्धारित योजनाओं के अनुसार होगा ।
- 3-0 विश्वविद्यालय की परीक्षाएँ, नियमित छात्रों यथा ऐसे अभ्यर्थियों जिन्होंने शिक्षण एवं परीक्षा व पाठ्यक्रम की योजना में उस अध्ययन कार्यक्रम हेतु विनिर्दिष्ट अवधि तक के लिये विश्वविद्यालय अथवा संबद्ध संस्थान/महाविद्यालय में अध्ययन-पाठ्यक्रम पूर्ण किया होगा, के लिये सुलभ होंगी । परन्तु साथ ही इस अध्यादेश के खण्ड 08 में प्रावधानितानुसार किसी भी छात्र को एक अथवा एकाधिक पाठ्यक्रम की परीक्षाओं में सम्मिलित होने से वंचित किया जा सकता है ।

4.0 अकादमिक कार्यक्रम समिति

- 4-1 विश्वविद्यालय के चिकित्सा विज्ञान के स्कूल में एक अकादमिक कार्यक्रम समिति होगी और सम्बद्ध संस्थानों में कार्यक्रमानुसार अकादमिक समिति(याँ) होगी/होंगी ।
- 4-2 क विश्वविद्यालय के चिकित्सा एवं परा चिकित्सा स्वास्थ्य विज्ञानों के स्कूल के मामलों में, कार्यक्रम-संचालन से जुड़े सभी शिक्षक लेकिन संख्या में पच्चीस से अधिक न हों, एक अकादमिक कार्यक्रम समिति का गठन करेंगे जिसकी अध्यक्षता स्कूल संकाय-अध्यक्ष करेंगे । यह समिति पाठ्यक्रमों को लागू करने की दिशा में संसाधनों के इष्टतम उपयोग हेतु समन्वय करेगी ।
- ख सम्बद्ध संस्थानों के मामले में, किसी भी संस्थान में पाठ्यक्रम-शिक्षण से जुड़े शिक्षक जो संख्या में पच्चीस से अधिक पूर्ण कालिक, विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त शिक्षक हों, उस कार्यक्रम के लिये अकादमिक कार्यक्रम समिति का गठन करेंगे । इस समिति के प्रमुख, उस संस्थान के निदेशक/प्राचार्य, अथवा उनके द्वारा नामित कोई अन्य सदस्य होंगे । यह समिति संसाधनों के इष्टतम उपयोग हेतु पाठ्यक्रमों को लागू करने हेतु समन्वय करेगी तथा विश्वविद्यालय द्वारा यथागठितानुसार कार्यक्रम समन्वय समिति के साथ भी समन्वय करेगी ।
- 4-3 अकादमिक कार्यक्रम समितियाँ, स्कूल की पाठ्य समिति अथवा सम्बन्धित सम्बद्ध संस्थान के निदेशक/प्राचार्य द्वारा सौंपे गये अन्य दायित्वों का भी निर्वाह करेंगी ।
- 4-4 अकादमिक कार्यक्रम समिति की बैठक आवश्यकतानुसार कभी भी कहीं भी लेकिन कम से कम प्रत्येक छः मास की अवधि में एक बार तो अवश्य ही होगी । समिति के अध्यक्ष बैठकें आयोजित करेंगे ।

5-0 कार्यक्रम समन्वय समिति

5-1 समान कार्यक्रम चला रहे विभिन्न संस्थानों के बीच अकादमिक समन्वय को सुसहाय्य बनाने के लिये विश्वविद्यालय द्वारा एक समन्वय समिति का गठन यदि वांछित समझा जाये तो कर दिया जाये। सम्बन्धित सम्बद्ध संस्थानों के निदेशक/प्राचार्य इस समिति के सदस्य होंगे। समिति की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के संकाय अध्यक्ष करेंगे। निदेशक/प्राचार्य को कुलपति द्वारा नामित किया जायेगा।

5-2 यह समिति, सभी निर्धारित पाठ्यक्रमों को समेटते हुए एवं आंतरिक मूल्यांकन/कक्षा परीक्षाओं में समरूपता बनाये रखते हुए शैक्षणिक सूची अनुसार शैक्षिक कार्यक्रम लागू करने हेतु समन्वय करेगी। साथ ही, यह समिति प्रतिलिपी (मॉडल) प्रश्न पत्र तैयार करने में भी सहयोग करेगी, यदि आवश्यक हो, तो प्रायोगिक परीक्षाओं के लिये मार्गदर्शिका तैयार करने और परीक्षकों की सूची के लिये नाम सुझाने में भी सहयोग करेगी। समिति पाठ्यचर्या में कोई आशोधन भी सुझा सकती है पाठ्यचर्या की विस्तृत समीक्षा कर सकती है और नये पाठ्यक्रमों के लिये पाठ्यचर्या-प्रारूप भी तैयार कर सकती है।

6-0 प्रशिक्षण अवधि एवं समय वितरण

6-1 आयु0काय0 तथा शल्य चिकि0स्ना0 कार्यक्रम की अवधि 4^{1/2} वर्ष की होगी जिसके उपरान्त विश्वविद्यालय के चिकित्सा एवं पराचिकित्सा स्वास्थ्य विज्ञान स्कूल के तत्वाधान में एक वर्ष की अनिवार्य आवर्ती प्रशिक्षुता होगी।

6-2 प्रशिक्षुता-अवधि सहित कार्यक्रम की अवधि केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के0भा0चिकि0परि0) विनियमों के अनुसार होगी।

6-3 अवधि की अनुसूची, संकाय-अध्यक्ष द्वारा कुलपति की स्वीकृति से प्रतिवर्ष शैक्षणिक कैलेंडर में अधिसूचनानुसार होगी।

7-0 नैदानिक विषयों की प्रशिक्षण-अवधि

7-1 नैदानिक विषयों की प्रशिक्षण-अवधि के0भा0चिकि0परि0 विनियमों के अनुरूप होगी तथा प्रशिक्षण/नियुक्ति हेतु आवंटन सांस्थानिक स्तर पर लिये गये निर्णयानुसार छोटे-छोटे समूहों में किया जायेगा।

8-0 उपस्थिति

8-1 आयु0काय0 तथा शल्य चिकि0स्ना0 कार्यक्रम जारी रखने के लिए किसी भी छात्र को के0भा0चिकि0परि0 विनियमानुसार उपस्थिति मानकों पर खरा उतरना होगा।

8-2 विश्वविद्यालय/सम्बद्ध संस्थानों को आयु0 काय0 तथा शल्य चिकि0 स्ना0 पाठ्यक्रम हेतु पंजीकृत छात्रों का उपस्थिति रिकॉर्ड रखना होगा। शिक्षकों/संकाय को स्कूल के संकाय-अध्यक्ष, संबद्ध संस्थान के निदेशक/प्राचार्य को व्यावसायिक परीक्षा के प्रथम दिवस से कम से कम दस दिन पहले ऐसे छात्रों के नामों की सूचना दे देनी चाहिये जिन्हें निर्धारित उपस्थिति मानकों के अनुसार परीक्षा देने के लिये अनुमत नहीं किया जा सकता।

8-3 स्कूल के संकाय-अध्यक्ष और/या सम्बद्ध संस्थान के निदेशक/प्राचार्य को व्यावसायिक परीक्षा में सम्मिलित न हो सकने वाले ऐसे सभी छात्रों के नाम परीक्षा प्रारम्भ होने से कम से पाँच शिक्षण-दिवस पूर्व ही घोषित कर देने चाहिये और साथ ही इसकी सूचना परीक्षा-नियन्त्रक को भी दे देनी चाहिये।

टिप्पणी:

वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये, उपस्थिति मानकों का पालन किया जायेगा। यदि किसी छात्र/छात्रा की उपस्थिति कम पायी जाती है तो उसे केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के0भा0चिकि0 परि0) के विनियमानुसार पूरक परीक्षा में प्रविष्ट होने की अनुमति दे दी जायेगी।

9-0 कार्यक्रम की पाठ्यचर्या

9-1 आयु0 काय0 तथा शल्य चि0 स्नातक पाठ्यक्रमों की पाठ्यचर्या, सिद्धान्त की एवं प्रायोगिकी, के0भा0चिकि0परि0 विनियमों के अनुसार ही होगी।

10-0 आयु0 काय0 एवं शल्य चिकि0 स्नातक कार्यक्रम के विभिन्न पाठ्यक्रमों हेतु न्यूनतम शिक्षण-घंटे

10-1 आयु0 काय0 एवं शल्य चिकि0स्ना0 कार्यक्रमों के विभिन्न पाठ्यक्रमों हेतु न्यूनतम शिक्षण-घंटे केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के0भा0चिकि0परि0) के विनियमों के अनुसार होंगे।

11-0 परीक्षाएँ

11-1 विश्वविद्यालय द्वारा संचालित मुख्य एवं पूरक परीक्षाएँ केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के0भा0चिकि0परि0) के अनुरूप होंगी। तथापि, आन्तरिक मूल्यांकन, परीक्षा कार्यक्रम, अंकों का विभाजन, किसी विषय में उत्तीर्ण होने के मानदण्ड, परीक्षकों की नियुक्ति सहित परीक्षाओं का संचालन आदि से संबंधित अपनायी जाने वाली रीतियों के विवरण विश्वविद्यालय द्वारा विनियम-प्रपत्र में अलग से अधिसूचित किये जायेंगे।

12-0 अनुचित साधनों का उपयोग

12-1 परीक्षा में अनुचित साधनों के उपयोग की शिकायतों से सम्बन्धित सभी मामले प्रत्येक निजी मामले में निर्णय लिये जाने हेतु तथा विश्वविद्यालय द्वारा नियत नियमों के अन्तर्गत शास्तियों की संस्तुतियों हेतु अनुचित मामलों की स्थायी समिति के समक्ष प्रस्तुत किये जायेंगे ।

13-0 मूल्यांकन

13-1 छात्रों का मूल्यांकन केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के०भा०चि०परि०) विनियमों के अनुरूप होगा । तथापि, मूल्यांकन प्रक्रिया एवं कार्य विधि से सम्बन्धित अन्य विवरण, विनियम प्रपत्र में अलग से विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित किये जायेंगे ।

14-0 परीक्षा शुल्क

14-1 विभिन्न परीक्षाओं के लिये छात्रों द्वारा देय शुल्क, कुल सचिव तत्सम्बन्धी कुलपति की स्वीकृति प्राप्ति के बाद अधिसूचित करेंगे । परीक्षा प्रारम्भ होने से पूर्व जिस छात्र ने निर्धारित शुल्क का भुगतान नहीं किया होगा वह सामान्यतः परीक्षा में सम्मिलित होने का पात्र नहीं होगा । वास्तविक कठिनाइयों के कुल मामलों में कुलपति स्वविवेक आधार पर शुल्क भुगतान की अंतिम तिथि को आगे खिसकाने की अनुमति दे सकते हैं । तथापि, ऐसे छात्र का परीक्षा-परिणाम सभी भुगतान चुकता कर दिये जाने तक रोक लिया जायेगा ।

15-0 व्यावसायिक परीक्षाओं में प्रवेश हेतु पात्रता

15-1 व्यावसायिक परीक्षाओं में किसी भी छात्र के लिये प्रवेश-पात्रता केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के०भा०चि०परि०) के विनियमानुसार होगी ।

16-0 उत्तर पुस्तिकाओं की पुनःजाँच

कोई भी छात्र परीक्षा परिणाम घोषित होने की तिथि से दो सप्ताह के अन्दर निर्धारित शुल्क का भुगतान करते हुए उत्तर पुस्तिका(ओं) की पुनःजाँच के लिये आवेदन कर सकता है । पुनः जाँच का प्रयोजन यह स्थापन करना होगा कि क्या सभी प्रश्नों और उनके भागों के लिये प्रश्न पत्र के अनुसार अंक दिये गये हैं तथा अंकों का पुनः जोड़ किया जाना भी इसमें सम्मिलित होगा । विसंगति पाये जाने की स्थिति में संबंधित व्यावसायिक परीक्षा के परिणाम और अंक तालिका दोनों में ही उपयुक्त बदलाव करके उसे परिशोधित कर दिया जायेगा ।

17-0 अनुपूरक परीक्षाएँ

17-1 किसी भी पाठ्यक्रम के लिये निर्धारित अधिकतम अंकों में 50 प्रतिशत से कम अंक प्राप्त करने वाले और पाठ्यक्रम में अनुत्तीर्ण हो जाने वाले छात्र को केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के०भा०चि०परि०) के विनियमानुसार अनुपूरक परीक्षा में पुनः सम्मिलित होने के लिये अनुमत कर दिया जायेगा ।

17-2 जिस छात्र ने न्यूनतम उपस्थिति अपेक्षाओं के अनुरूप पाठ्यक्रम में भाग लिया है और व्यावसायिक परीक्षा में सम्मिलित होने के योग्य नहीं है तो उसे उत्तरवर्ती बारी में प्रस्तावित होने की स्थिति में सम्बन्धित पाठ्यक्रम की अनुपूरक/ उत्तरवर्ती परीक्षाओं में सम्मिलित होने के लिये अनुमत कर दिया जायेगा । उसे पुनः कक्षा में उपस्थित होने की आवश्यकता नहीं होगी तथा शिक्षक के निरन्तर मूल्यांकन-घटक आधार पर छात्र द्वारा अर्जित अंक अपरिवर्तनीय ही रहेंगे । तथापि, छात्र को संबंधित पाठ्यक्रम की व्यावसायिक परीक्षा में न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक अर्जित करने अपेक्षित हैं ।

17-3 जो छात्र उपस्थिति में कमी के कारण परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये अनुमत नहीं किया गया है उसे पाठ्यक्रम को पुनः दोहराना होगा और निर्धारित अनुसार पाठ्यक्रम के अन्य संघटकों सहित शिक्षण-व्याख्यान शिक्षकीय अनुवर्ग (ट्यूटोरियल्स) एवं प्रयोगादि हेतु उपस्थित रहना होगा । ऐसे मामलों में, पाठ्यक्रम दोहराव की स्थिति में शिक्षक द्वारा सतत मूल्यांकन को ध्यान में रखा जायेगा ।

संस्थान, स्वविवेकाधार पर पाठ्यक्रम-परीक्षा दोहराने वाले छात्रों के लिये अतिरिक्त शिक्षण की व्यवस्था कर सकते हैं । ऐसे निर्देशों की कार्य प्रणाली संस्थान द्वारा अधिसूचित की जायेगी ।

17-4 जिस छात्र को व्यावसायिक परीक्षा में पुनः सम्मिलित होना है । दोहराना है उसे कार्यक्रम निष्पादन हेतु सम्मिलित होने के समय लागू शिक्षण व परीक्षा एवं पाठ्यचर्या की योजना में पाठ्यचर्या के अनुसार ही परीक्षा देनी होगी । तथापि, ऐसे मामलों में जहाँ पाठ्यक्रम की पाठ्यचर्या में केवल कुछ छोटे-मोटे आशोधन नहीं किये गये हैं वहाँ परीक्षा-आयोजन स्कूल संकाय-अध्यक्ष/अकादमिक कार्यक्रम समिति-प्रमुख द्वारा प्रमाणित संबोधित पाठ्यचर्या के अनुरूप ही परीक्षाएं आयोजित की ये जाएँ ।

4285 14-9

जो छात्र परीक्षा में पुनः प्रवेश के पात्र हैं उन्हें परीक्षा में पुनः सम्मिलित होने के लिये परीक्षा नियन्त्रक को आवेदन करना होगा तथा विश्वविद्यालय द्वारा अधिसूचित परिचालन रीतियों के अनुसार विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित शुल्क का भुगतान करना होगा।

- 17*5 जिस छात्र ने शिक्षण, परीक्षा एवं पाठ्यचर्या की योजना में निर्धारित न्यूनतम अंक प्राप्त कर लिये हैं, व्यावसायिक परीक्षा उत्तीर्ण घोषित कर दिया जायेगा तथा समस्त व्यावसायिक एवं आवर्ती प्रशिक्षुता पूर्ण कर लेने के बाद ही केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् (के०भा०चिकि०परि०) विनियमों के अनुरूप उपाधि प्राप्त करने का पात्र होगा।

18*0 विशिष्ट योग्यता

- 18*1 यदि कोई छात्र 5 प्रतिशत या ऊपर उद्धृतानुसार अंक प्राप्त करता है और आयुर्वेद कायचिकित्सा तथा शल्य चिकित्सा (आयु०काय० तथा श० चिकि०) की उपाधि प्राप्त करने के लिये उत्तीर्णता-मानक/अन्तिम परीक्षा अर्हक स्तर के रूप में कोई श्रेणी उद्धृत करने का कोई प्रावधान नहीं है तो उसे उत्तीर्ण हुआ माना जायेगा। तथापि, पाठ्यक्रम (i) में 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले को पाठ्यक्रम/पाठ्यक्रमों को विशिष्ट योग्यता सहित उत्तीर्ण हुआ माना जायेगा।

19*0 उपाधि प्रदान करना

- 19*1 किसी भी छात्र को उपाधि प्रदान की जायेगी बशर्ते कि :

क उसने सभी व्यावसायिक सफलता के साथ उत्तीर्ण कर लिये हों और केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् के अनुरूप एक वर्षीय आवर्ती प्रशिक्षुता पूर्ण कर ली हो।

ख विश्वविद्यालय/सम्बद्ध संस्थान की कोई भी देय राशि उनके नाम पर शेष नहीं है : और

ग उसके विरुद्ध कोई भी अनुशासनात्मक कार्यवाही लम्बित नहीं है।

- 20*0 अधिनियम संविधि एवं अध्यादेशों के प्रावधानों के अन्तर्गत ऐसे प्रशासनिक मुद्दे जैसे कि परीक्षा में अनुचित आचरण, अन्य अनाचार, परीक्षा-प्रपत्र जमा करने की तिथि, अनुलिपि उपाधि जारी करना, परीक्षकों को अनुदेश, अधीक्षक, निरीक्षक, उनके पारिश्रमिक एवं परीक्षा संचालन से सम्बन्धित कोई भी अन्य मामले अकादमिक परिषद् द्वारा इस उद्देश्य से स्वीकृत मार्ग निर्देशन के अनुसार ही निपटारे जाएँगे।

- 21*0 इस अध्यादेश में वर्णित किसी भी बात के होते हुए भी, उठने वाले किसी भी अप्रत्याशित ऐसे मामले जो इस अध्यादेश से नहीं सुलट सकते, अथवा व्याख्या में अन्तर हो जाने की स्थिति में उनके संबंध में, कुलपति, यदि आवश्यक हो तो स्कूल के किसी अथवा सभी संकाय-अध्यक्षों से बनी समिति का मत/परामर्श लेकर कोई भी निर्णय ले सकते हैं। कुलपति का निर्णय अंतिम होगा।

बोर्ड ने इसके कार्यान्वयन/परिपालन की अनुमति प्रबन्धन मंडल (बोर्ड) द्वारा स्वीकृति-तिथि 03-03-2014 से दे दी।

F. No. IPU/JR(C)/Ord.38- New/ 57 BOM./2014/2473.—In pursuance of the provisions of section 27 of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act 1998 (9 of 1998), the Board of Management of the University in its 57th meeting held on 07.03.2014 vide agenda item no. 57.03, has approved for a new Ordinance -38 captioned '**Conduct and evaluation of examinations for the programme leading to Bachelor of Ayurvedic Medicine & Surgery (B.A.M.S.) degree**'.

APPLICABILITY: This ordinance shall apply to the programme leading to **Bachelor of Ayurvedic Medicine and Surgery (B.A.M.S.) degree as per Central Council of Indian Medicine (CCIM) norms.**

1.0 DEFINITIONS :

- 1.1 Academic programme/programmes: shall mean a programme/courses leading to award of **Bachelor of Ayurvedic Medicine and Surgery (B.A.M.S.) degree OR Ayurvedacharya.**
- 1.2 Professional system - An undergraduate teaching curriculum leading to the award of BAMS degree after passing the final examination, on completion of prescribed course of study including professionals and compulsory rotatory Internship extending over a duration as specified by **Central Council of Indian Medicine (CCIM) regulation amended from time to time.**
- 1.3 Board of Studies (BOS) shall mean the Board of Studies of the concerned School.
- 1.4 Courses mean components of B.A.M.S. Programme, carrying a distinctive code number.

- 1.5 External examiner shall mean an examiner who is not in the employment of the University or its affiliated institutions.
- 1.6 Student shall mean a person admitted to the University and its affiliated institutions for the academic programme to which this Ordinance is applicable.
- 1.7 Words and expressions used but not defined in this ordinance shall have the meanings assign to them in the Act, statutes and the foregoing Ordinances.
- 2.0 The University shall hold examinations for the academic programme, as is approved by the Academic Council and for awarding B.A.M.S. degree, as per the prescribed Schemes of Teaching and Examinations and Syllabi as approved by the Academic Council.
- 3.0 Examinations of the University shall be open to regular students i.e. candidates who have undergone a course of study in the University or its affiliated institution/college, for a period specified for that programme of study in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi.
Provided further that a student may be debarred from, appearing in the examination of one or more courses, as provided in Clause 08 of this Ordinance.

4.0 ACADEMIC PROGRAMME COMMITTEE

- 4.1 There shall be an Academic Programme Committee in the school of medical sciences of the University and programme-wise Academic Programme Committee(s) in affiliated institutions.
- 4.2 a. In the case of school of Medicine and Paramedical Health Sciences of the University, all the teachers concerned with conduct of the programme, not exceeding twenty five in number, shall constitute the Academic Programme Committee of which the Dean of the school shall act as its Chairman. This Committee shall coordinate for optimum utilisation of resources for implementation of the courses.
- b. In the case of affiliated institutions, full time university recognised teachers not exceeding twenty five in number, involved in the teaching of the course in an institution, shall constitute the Academic Programme Committee for that programme. This Committee shall be headed by the Director/ Principal of that institution, or another member of the Committee so nominated by him. This Committee shall coordinate the implementation of the courses for optimum utilisation of resources and shall also coordinate with Programme Coordination Committees as constituted by the University.
- 4.3 The Academic programme Committees shall also perform other duties as assigned to it by the Board of studies of the School or by the Director/Principal of the concerned affiliated institution.
- 4.4 The Academic Programme Committee shall meet as and when required but at least once during every six months. The Chairman of the Committee will convene the meetings.

5.0 PROGRAMME COORDINATION COMMITTEE

- 5.1 In order to facilitate academic coordination between different institutions running the same programme, a Programme Coordination Committee may be constituted by the University, if deemed desirable. The Directors/Principals of the concerned affiliated institutions shall be members of this Committee. The Committee shall be headed by the Dean of the University/Director/Principal to be nominated by the Vice-Chancellor.
- 5.2 The Committee shall coordinate for implementation of the academic programme as per academic calendar covering all prescribed courses and maintain uniformity in internal assessment/class tests. The Committee shall also assist in preparation of model question papers, if required, prepare guidelines for practical examinations and suggest names for panel of examiners. The Committee

may also suggest any modifications in the syllabus, undertake comprehensive review of syllabi, or draw up draft syllabi for new courses.

6.0 TRAINING PERIOD AND TIME DISTRIBUTION

6.1 The B.A.M.S. programme will be of 4½ years duration followed by one year of compulsory rotating Internship and will be under the School of Medicine and Paramedical Health Sciences of the University.

6.2 The duration of the Programme including the period of internship shall be as per Central Council of Indian Medicine (CCIM) regulations.

6.3 Schedule of terms will be as notified in the Academic Calendar every year by the Dean with the approval of the Vice Chancellor.

7.0 DURATION OF TRAINING IN CLINICAL SUBJECTS

7.1 The Duration of training in Clinical Subjects shall be as per CCIM Regulations and the distribution for the training/ posting will be made in small batches as decided at the Institutional level.

8.0 ATTENDANCE

8.1 For pursuing BAMS programme, a student shall be required to fulfill the criteria of Attendance as per Central Council of Indian Medicine Regulations (CCIM).

8.2 The University/affiliated institution shall maintain an attendance record of students registered in the B.A.M.S course. The teachers/faculty must intimate the Dean of the School/Director/Principal of the affiliated institution, at least 10 days prior to the first day of the Professional examination, the names of such students who cannot be allowed to take examination as per prescribed attendance criteria.

8.3 The Dean of the school and/or Director/Principal of the affiliated institution shall announce the names of all such students who are not eligible to appear in the professional examination at least 5 calendar days before the start of the examination and simultaneously intimate the same to the Controller of Examinations.

Note:

For appearing in the annual examination, the attendance criteria will be followed. In case a student falls short of attendance he/she will be allowed to sit for the supplementary examination as per Central Council of Indian Medicine Regulations (CCIM).

9.0 CURRICULUM OF THE PROGRAMME

9.1 Curriculum of the B.A.M.S. courses, theory and practical's shall be as per CCIM regulations.

10.0 MINIMUM TEACHING HOURS IN VARIOUS COURSES OF B.A.M.S. PROGRAMME

10.1 The minimum teaching hours for various courses of B.A.M.S programme shall be as per Central Council of Indian Medicine Regulations (CCIM).

11.0 EXAMINATIONS

11.1 The main as well as supplementary examinations conducted by the University shall be as per Central Council of Indian Medicine Regulations (CCIM). However, details regarding modalities to be

followed regarding conduct of examinations including internal assessment, examination schedule, distribution of marks, criteria for passing a subject, appointment of examiners, etc. shall be notified separately by the University in the form of regulations.

12.0 USE OF UNFAIR MEANS

- 12.1 All cases regarding reported use of Unfair Means in the examination shall be placed before a Standing Unfair Means Committee/s for decision in individual cases, and recommending penalties, as per the laid down rules of the University.

13.0 EVALUATION

- 13.1 The evaluation of students shall be as per Central Council of Indian Medicine Regulations (CCIM). However, other details regarding evaluation process and procedure shall be notified separately by the University in the form of regulations.

14.0 EXAMINATION FEES

- 14.1 The Registrar shall notify the fees payable by the students for various examinations, after the same is approved by the Vice-Chancellor. A student who has not paid the prescribed fees before the commencement of examinations shall not ordinarily be eligible to appear in the examination. The Vice-Chancellor may at his discretion allow, in certain cases of genuine hardship, an extension in the last date of payment of fees. The result of such student shall, however, be withheld till all dues are cleared.

15.0 ELIGIBILITY TO APPEAR FOR PROFESSIONAL EXAMINATIONS

- 15.1 The eligibility of a student to appear for professional examinations shall be as per Central Council of Indian Medicine Regulations (CCIM).

16.0 RECHECKING OF ANSWER SHEETS

- 16.1 A student may apply, within two weeks from the date of the declaration of the result, for re-checking of the examination script(s) on the payment of prescribed fees. Rechecking shall mean verifying whether all questions and their parts have been duly marked in line with the question paper including re-totalling of marks. In the event of a discrepancy being found, the same shall be rectified through appropriate changes in both the result as well as marks sheet of the concerned professional examination.

17.0 SUPPLEMANTRY EXAMINATIONS

- 17.1. A student obtaining less than 50% of maximum marks assigned to a course and failing in the course shall be allowed to reappear in a supplementary examination as per Central Council of Indian Medicine Regulations (CCIM). However, the marks obtained by such a student out of teacher(s) continuous evaluation component shall remain unchanged.
- 17.2 A student, having attended the course as per minimum attendance requirements, if is not able to appear in the professional examination, shall be allowed to appear in the supplementary/subsequent examination of the concerned course, in subsequent turn when these are offered. He/She shall not be required to attend the classes again, and the marks obtained by the student out of teacher's continuous evaluation component shall remain unchanged. However, the student shall be required to obtain a minimum of 50% marks in the professional examination in the concerned course.
- 17.3 A student who has not been allowed to take an examination because of shortage of attendance, shall be required to repeat the course and will be required to attend lectures, tutorials, practical or any other component of the course as prescribed. In such cases the continuous evaluation by teachers shall be taken into account while repeating the course.

The Institution may, at its discretion, arrange for additional teaching for students repeating the examination of a course. The modus operandi of such instruction shall be as notified by the Institution.

- 17.4 A student who has to reappear/repeat in a professional examination shall be examined as per the syllabus in the Scheme of Teaching and Examination and Syllabi applicable at the time of his/her joining for pursuance of the programme. However, in cases where only some minor modifications have been made in the syllabus of the course, the examination may be held in accordance with the revised syllabus certified by Dean of the School/Chairman of the Academic Programme Committee. Students who are eligible to reappear in an examination shall have to apply to the Controller of Examinations to be allowed to reappear in an examination and pay the fees prescribed by the University in accordance with the operational modalities notified by the University.
- 17.5 A candidate who has earned the minimum number of marks prescribed in the Scheme of Teaching, Examination and Syllabi shall be declared to have passed the professional examination and shall be eligible for award of degree only after the completion of all professional and rotating internship as per Central Council of Indian Medicine Regulations (CCIM).

18.0 DISTINCTION

A student is considered passed if he/she secures above 50% OR marks as mentioned above and there is no provision of mentioning any division as a standard of passing criteria/qualifying the final examinations to obtain MBBS degree. However, a student securing above 75% marks in a course/courses, is deemed to have passed the course/courses with distinction.

19.0 AWARD OF DEGREE

- 19.1 A student shall be awarded a degree provided:

a. He/She has successfully passed all the professionals and completed one year of compulsory rotating internship in line with Central Council of Indian Medicine (CCIM).

b. There are no dues outstanding in his/her name to the University/Affiliated Institution; and

c. No disciplinary action is pending against him/her.

- 20.0 Subject to the provisions of the Act, the Statutes and the Ordinances such administrative issues as disorderly conduct in examinations, other malpractices, dates for submission of examination forms, issue of duplicate degrees, instructions to examiners, superintendents, invigilators, their remuneration and any other matter connected with the conduct of examinations will be dealt with as per the guidelines approved for the purposes by the Academic Council.

- 21.0 Notwithstanding anything stated in this Ordinance, for any unforeseen issues arising and not covered by this Ordinance, or in the event of differences of interpretation, the Vice-Chancellor may take a decision, after obtaining, if necessary the opinion/advice of a Committee consisting of any or all the Deans of the Schools. The decision of the Vice-Chancellor shall be final.

The board has granted approval for its implementation from the date of approval i.e. 07/03/2014 by the Board of Management.

सं. आईपीयू/जेआर(सी)/आर्ड. 30/एमेन्ड./55 बीओएम/2013-14/2474.- गुरु गोबिन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय अधिनियम, 1998 (1998 का 9) के अनुपालन में, विश्वविद्यालय के प्रबन्धन मंडल ने अपनी 55वीं बैठक में एजेण्डा मद संख्या 55.04 के द्वारा अध्यादेश 30 के खंड 1 के उप-खण्ड (ii), शीर्षक 'रक्षा संवर्ग हेतु आरक्षण' में, सेना कल्याण शिक्षा समिति (से0क0शि0स0) के प्रावधानों/शर्तों एवं मानकों के अनुरूप अधिसूचना सं. एफ. 2(32)/आर्ड./आईपीयू/

डीआरपी / 2006 / 42 4 दिनांक 12वीं फरवरी, 2007 में, निम्नलिखित आंशिक संशोधन की स्वीकृति दी है :

विद्यमान प्रावधान	अनुमोदित प्रावधान
<p>पॉच प्रतिशत सीटें निम्नलिखित वरीयता क्रम में रक्षा सेवा श्रेणी के लिए आरक्षित हैं :</p> <p>(क) सैन्य कार्यवाही के दौरान मारे गये सैनिकों की विधवाएं/बच्चे</p> <p>(ख) सेवारत रक्षा कर्मियों तथा सैन्य कार्यवाही के दौरान अपंग भूतपूर्व सैनिकों के बच्चे</p> <p>(ग) ऐसे रक्षा कर्मियों की विधवाएं/बच्चे जिनकी मृत्यु सेवा के दौरान सैन्य कारणों से शांति समय में हुई ।</p> <p>(घ) ऐसे रक्षा कर्मियों के बच्चे जो सेवा के दौरान सैन्य कारणों से शांति समय में अपंग हुए ।</p> <p>(ङ) ऐसे भूतपूर्व सैनिकों तथा सेवारत रक्षा सेवा कर्मियों के बच्चे जिन्हें वीरता पुरस्कार मिला है ।</p> <p>(च) भूतपूर्व सैनिकों के बच्चे ।</p> <p>(छ) सेवारत सेना कर्मियों के बच्चे ।</p>	<p>कार्यसूची मद संख्या 55.04: प्रस्तावित प्रावधान</p> <p>रक्षा बल श्रेणियों के लिये 5 प्रतिशत स्थान निम्नानुसार प्राथमिकता क्रम में आरक्षित किये गये हैं :</p> <p>(i) युद्ध में मारे गये रक्षा कर्मियों /अर्धसैनिक बल -कर्मियों की विधवाएं /आश्रित ।</p> <p>(ii) युद्ध में अपंग हुए सेवारत कर्मियों/ भूतपूर्व रक्षाकर्मियों/अर्धसैनिक बल कर्मियों के आश्रित ।</p> <p>(iii) ऐसे मृत रक्षा कर्मियों/अर्धसैनिक बल कर्मियों, की विधवाएँ एवं आश्रित जो शांतिकाल में उपारोप्य सेना-सेवा हेतु मृत्यु को प्राप्त हो चुके हैं ।</p> <p>(iv) ऐसे रक्षा कर्मियों/अर्धसैनिक बल कर्मियों, जो शांतिकाल में सेना-सेवा हेतु आरोप्य अपंगता समअपंगता को प्राप्त कर चुके हैं, के आश्रित</p> <p>(v) ऐसे भूतपूर्व रक्षाकर्मी एवं सेवारत कर्मी/अर्धसैनिक बलकर्मी/आरक्षी पुलिस) बल कर्मियों के आश्रित, जिन्हें निम्न वीरता पुरस्कार मिले हों</p> <ul style="list-style-type: none"> • परमवीर चक्र • अशोक चक्र • सर्वोत्तम युद्ध सेवा मैडल • महावीर चक्र • कीर्ति चक्र • उत्तम युद्ध सेवा मैडल • वीर चक्र • शौर्य चक्र • युद्ध सेवा मेडल • सेना, नौसेना, वायुसेना मैडल <p>(vi) भूतपूर्व सेनाकर्मियों के आश्रित</p> <p>(vii) सेवारत कर्मियों के आश्रित</p> <p>टिप्पणी: अर्हक परीक्षा में अभ्यर्थी द्वारा प्राप्त अंकों पर आधारित योग्यता क्रमसूची प्रत्येक प्राथमिकता श्रेणी के अन्तर्गत निकाली जायेगी तथा आबंटन, प्राथमिकता श्रेणी सूची के आधार पर किया जायेगा ।</p>

उपरोक्त संशोधन, प्रबंधन मंडल द्वारा, 24/09/2013 को आयोजित अपनी 55वीं बैठक में स्वीकृत किया गया और यह संशोधन स्वीकृति तिथि से प्रभावी होगा ।

आदेशानुसार
संजय कुमार झा, कुल सचिव

No. IPU/JR(C)/Ord.30/Amend/55 BOM./2013-14/2474.—In pursuance of the provisions of the Guru Gobind Singh Indraprastha University Act, 1998 (9 of 1998), the Board of Management of the University, in its 55th meeting vide agenda item 55.04 has approved for the following partial amendments in Ordinance 30 sub-clause (i) of clause 1 captioned Reservation for Defence Category, notified vide

No. F. 2(32)/Ord/IPU/DRP/2006/4214 dated 12th February 2007, in accordance with provisions/conditions and criteria of Army Welfare Education Society (AWES).

<i>Existing Provision</i>	<i>Approved Provision</i>
5% of the seats are reserved for Defence Category in the following order of priority:	5% of the seats are reserved for Defence Category in the following order of priority:
(i) Widows/ Wards of Defence personnel killed in action;	(i) Widows/ Wards of Defence Personnel/ Para Military Personnel killed in action.
(ii) Wards of serving personnel and ex-servicemen disabled in action;	(ii) Wards of serving personnel and ex-servicemen/ Para Military Personnel disabled in action.
(iii) Widows/ wards of Defence personnel who died in peace-time with death attributable to military service;	(iii) Widows/ wards of Defence personnel/ Para Military Personnel who died in peace-time with death attributable to military service;
(iv) Wards of Defence Personnel disabled in peace-time with disability attributable to military service;	(iv) Wards of Defence Personnel/ Para Military Personnel <u>disabled</u> in peace-time with disability attributable to military service.
(v) Wards of ex-servicemen and serving personnel who are in receipt of Gallantry Award;	(v) Wards of ex-servicemen personnel and serving personnel/ Para Military/ Police Personnel who are in receipt of Gallantry Awards- <ul style="list-style-type: none"> • Param Vir Chakra • Ashok Chakra • Sarvottam Yudh Seva Medal • Mahavir Chakra • Kirti Chakra • Uttam Yudh Seva Medal • Vir Chakra • Shaurya Chakra • Yudh Seva Medal • Sena, Nau Sena, Vayu Sena Medal
(vi) Wards of ex-servicemen;	(vi) Wards of ex-servicemen
(vii) Wards of serving personnel.	(vii) Wards of serving Personnel
	Note: Merit list based on marks obtained by candidate in qualifying examination shall be drawn under each priority category and allotment shall be made as per list priority category.

The above mentioned amendment had been approved by the Board of Management on 24-9-2003 in its 55th meeting and shall come into force with effect from the date of its approval.

By Order,
SANJAY KUMAR JHA, Registrar

गृह (पुलिस-II)/स्थापना विभाग

अधिसूचना

दिल्ली 28 अक्टूबर, 2014

सं0फा0 8/305/2014/गृह पुलिस-II/8545— गृह मंत्रालय, भारत सरकार की दिनांक 20 मार्च, 1974 की अधिसूचना संख्या 11011/2/74-यूटीएल (आई) के साथ पठित दंड प्रक्रिया संहिता, 1973 (1974 का 2) की धारा 24 की उप-धारा (8) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के उपराज्यपाल, थाना लाहौरी गेट, दिल्ली में भारतीय दंड संहिता की धारा 420/175/120ख, 465/468/471 के अन्तर्गत प्राथमिकी संख्या 12/2013 से उत्पन्न अपराधिक प्रकरण एमसी संख्या 2072/2014 के संबन्ध में माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय में राज्य की ओर से वाद के संचालन के लिये श्री राजीव मोहन, एडवोकेट को विशेष लोक अभियोजक के रूप में नियुक्त करते हैं। श्री राजीव मोहन, विशेष लोक अभियोजक को देय शुल्क निम्न प्रकार होगा:—

1. प्रति उपस्थिति प्रभार	11000/—रुपये
2. जूनियर शुल्क	2500/—रुपये
3. कान्फ्रेंस/ड्राफ्टिंग शुल्क	1500/—रुपये

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली के उपराज्यपाल
के आदेश से तथा उनके नाम पर,

आर0 के0 आहुजा, उप-सचिव (गृह)

HOME (POLICE-II)/ESTABLISHMENT DEPARTMENT
NOTIFICATION

Delhi, the 28th October, 2014

No. F. 08/305/2014/HP-II/8545.—In exercise of the powers conferred by Sub-section (8) of Section 24 of the Code of Criminal Procedure, 1973 (2 of 1974), read with the Government of India, Ministry of Home Affairs Notification No. 11011/2/74-UTL (i) dated the 20th March, 1974, the Lt. Governor of the National Capital Territory of Delhi, is pleased to appoint Shri Rajiv Mohan, Advocate as Special Public Prosecutor to conduct case CrI. M.C.No:2072/2014 arising out of FIR No:12/2013, under sections 420/175/120B, 465/468/471, IPC, P.S. Lahori Gate, Delhi, on behalf of the State, in the Hon'ble High Court of Delhi. Fee payable to Shri Rajiv Mohan, Special Public Prosecutor shall be as under:—

1. Charge per appearance	---	Rs. 11,000-00
2. Junior Fee	---	Rs. 2,500-00
3. Conference/drafting fee	---	Rs. 1,500-00

By Order and in the Name of the Lt. Governor
of the National Capital Territory of Delhi,

R. K. AHUJA, Dy. Secy. (Home)